
55^{वें} राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार **55th National Film Awards**

2007



फिल्म समारोह निदेशालय
Directorate of Film Festivals

संपादक

भूपेंद्र कैथोला

Editor

Bhupendra Kainthola

समन्वय

मंजु खन्ना

Coordination

Manju Khanna

उत्पादन

मनोज रंजन

संजीव कौल

विनीत कुमार मंगल

Production

Manoj Ranjan

Sanjiv Kaul

Vineet Kumar Mangal

फिल्म समारोह निदेशालय के लिए विज्ञापन और दृश्य प्रचार निदेशालय, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा आकल्पित और प्रकाशित तथा न्यूटेक फोटोलिथोग्राफर्स, नई दिल्ली-110020 द्वारा मुद्रित

Produced by the Directorate of Advertising Visual Publicity, Ministry of Information Broadcasting, Government of India, for the Directorate of Film Festivals, Printed at Nutech Photolithographers, New Delhi-110020

No. : 03/03/2009 PP-II

1600 Copies

October 2009

विषय सूची

CONTENTS

	पृष्ठ सं.	Page No.
		JURY MEMBERS
		ABOUT DADASAHEB PHALKE AWARD
दादा साहेब फाल्के पुरस्कार	1	Dadasaheb Phalke Award Winner 2007
दादा साहेब फाल्के पुरस्कार विजेता-2007	4	Dadasaheb Phalke Award – Past Recipients
पिछले वर्षों के दादा साहेब फाल्के पुरस्कार विजेता	6	
		AWARDS FOR FEATURE FILMS
		कथाचित्र पुरस्कार
सर्वोत्तम कथाचित्र पुरस्कार	11	Best Feature Film
निर्देशक के सर्वोत्तम प्रथम कथाचित्र के लिए इंदिरा गांधी पुरस्कार	14	Indira Gandhi Award for the Best First Film of a Director
स्वस्थ मनोरंजन प्रदान करने वाली सर्वोत्तम लोकप्रिय फिल्म	16	Best Popular Film providing Wholesome Entertainment
राष्ट्रीय एकता के लिए सर्वोत्तम कथाचित्र का नर्गिस दत्त पुरस्कार	18	Nargis Dutt Award for Best Film on National Integration
परिवार कल्याण पर सर्वोत्तम फिल्म	20	Best Film on Family Welfare
सामाजिक विषयों पर सर्वोत्तम फिल्म	22	Best Film on Social Issues
सर्वोत्तम बाल फिल्म	24	Best Children's Film
सर्वोत्तम कार्टून फिल्म	26	Best Animation Film
सर्वोत्तम निर्देशन	28	Best Direction
सर्वोत्तम अभिनेता	30	Best Actor
सर्वोत्तम अभिनेत्री	32	Best Actress
सर्वोत्तम सह अभिनेता	34	Best Supporting Actor
सर्वोत्तम सह अभिनेत्री	36	Best Supporting Actress
सर्वोत्तम बाल कलाकार	38	Best Child Artist
सर्वोत्तम पार्श्व गायक	40	Best Male Playback Singer
सर्वोत्तम पार्श्व गायिका	42	Best Female Playback Singer
सर्वोत्तम छायांकन	44	Best Cinematography
सर्वोत्तम पटकथा	46	Best Screenplay
सर्वोत्तम ध्वनि आलेखन	48	Best Audiography
सर्वोत्तम संपादन	50	Best Editing
सर्वोत्तम कला निर्देशन	52	Best Art Direction
सर्वोत्तम वेशभूषा	54	Best Costume Designer

सर्वोत्तम मेक-अप कलाकार	58	Best Make-up Artist
सर्वोत्तम संगीत निर्देशन	60	Best Music Direction
सर्वोत्तम गीत	62	Best Lyrics
निर्णायक मंडल का विशेष पुरस्कार	64	Special Jury Award
सर्वोत्तम विशेष प्रभाव	66	Best Special Effects
सर्वोत्तम नृत्य निर्देशन	68	Best Choreography
सर्वोत्तम बंगला कथाचित्र	70	Best Bengali Feature Film
सर्वोत्तम हिन्दी कथाचित्र	72	Best Hindi Feature Film
सर्वोत्तम कन्नड़ कथाचित्र	74	Best Kannada Feature Film
सर्वोत्तम मलयालम कथाचित्र	76	Best Malayalam Feature Film
सर्वोत्तम मराठी कथाचित्र	78	Best Marathi Feature Film
सर्वोत्तम तमिल कथाचित्र	80	Best Tamil Feature Film
सर्वोत्तम अंग्रेजी कथाचित्र	82	Best English Feature Film
पुरस्कार जो नहीं दिए गए	84	Awards Not Given
गैर कथाचित्र पुरस्कार	85	AWARDS FOR NON-FEATURE FILMS
सर्वोत्तम गैर कथाचित्र	88	Best Non-feature Film
निर्देशक का सर्वोत्तम प्रथम गैर कथाचित्र	90	Best First Non-feature Film of a Director
सर्वोत्तम मानवशास्त्रीय/मानवजातीय फिल्म	92	Best Anthropological/Ethnographic Film
सर्वोत्तम जीवनी फिल्म	94	Best Biographical Film
सर्वोत्तम पर्यावरण फिल्म	96	Best Environment Film
सामाजिक विषयों पर सर्वोत्तम फिल्म	98	Best Film on Social issues
सर्वोत्तम शैक्षणिक/प्रेरक फिल्म	100	Best Educational/Motivational Film
सर्वोत्तम खोजी फिल्म	102	Best Investigative Film
निर्णायक मंडल का विशेष पुरस्कार	104	Special Jury award
सर्वोत्तम लघु कल्पित फिल्म	106	Best Short Fiction Film
परिवार कल्याण पर सर्वोत्तम फिल्म	108	Best Film on Family Welfare
सर्वोत्तम निर्देशन	110	Best Direction
सर्वोत्तम छायांकन	112	Best Cinematography

सर्वोत्तम ध्वनि आलेखन	114	Best Audiography
सर्वोत्तम संपादन	116	Best Editing
सर्वोत्तम संगीत निर्देशन	118	Best Music Direction
सर्वोत्तम प्रकथन/वाएस ओवर	120	Best Narration/Voice-Over
पुरस्कार जो नहीं दिए गए	122	AWARDS NOT GIVEN
सिनेमा पर सर्वोत्तम लेखन पुरस्कार	123	Awards for Best Writing on Cinema
सर्वोत्तम सिनेमा पुस्तक	124	Best Book on Cinema
सर्वोत्तम फिल्म समीक्षक	126	Best Film Critic
सारांश : कथाचित्र	129	FEATURE FILMS : SYNOPSES
अंतर्द्वन्द्व	130	Antardwandwa
बालीगंज कोर्ट	131	Ballygunge Court
चक दे! इंडिया	132	Chak De! India
धर्म	133	Dharm
फोटो	134	Foto
फ्रोजन	135	Frozen
गांधी, माई फादर	136	Gandhi, My Father
गुलाबी टाकीज़	137	Gulabi Talkies
इनिमे नांगथान	138	Inimey Naangathan
जब वी मेट	139	Jab We Met
कांचीवरम	140	Kanchivaram
कृष्णकांतेर विल	141	Krishnakanter Will
दि लास्ट लीयर	142	The Last Lear
नालु पेन्नुगल	143	Naalu Pennungal
निरोप	144	Nirop
ओम शांति ओम	145	Om Shanti Om
ओरे कडल	146	Ore Kadal
परदेसी	147	Paradesi
पेरियार	148	Periyar

शिवाजी	149	Sivaji
तारे जमी पर	150	Taare Zameen Par
टिंग्या	151	Tingya
1971	152	1971
सारांश : गैर कथाचित्र	153	NON-FEATURE FILMS : SYNOPSES
अतर्ध्वनि	154	Antardhwani
अयोध्या गाथा	155	Ayodhya Gatha
बाघेर बाच्चा	156	Bagher Bacha
भंगा घोर	157	Bhanga Ghara
भुलतिर खेरो	158	Bhultir Khero
ईकोज ऑफ साइलेंस	159	Echoes of Silence
होप डाइज लास्ट इन वार	160	Hope Dies Last in War
दि जर्नेलिस्ट एंड द जिहादी	161	The Journalist and the Jihadi
क़मशा:	162	Kramasha
लाल जूतो	163	Lal Juto
मेकिंग दि फेस	164	Making the Face
पूमरम	165	Poomaram
प्रारंभ	166	Prarambha
शिफ्टिंग प्रोफेसी	167	Shifting Prophecy
द ताई फाकेज	168	The Tai Phakeys
उधेड़ बुन	169	Udhedh Bun
वेल्लापोकातिल	170	Vellapokkathil

निर्णायक मंडल

Jury Members



सई परांजपे (अध्यक्ष)
Sai Paranjpye (Chairperson)



निमाई घोष
Nemai Ghosh



मंजू बोरा
Manju Bora



एहसान मुजीद
Ahsan Muzid



अरुप मन्ना
Arup Manna



मोहन शर्मा
Mohan Sharma



के.एस. शिवरामन
K.S. Sivaraman



राजेंद्र नारायण तालक
Rajendra Narayan Talak



केसरी हरवू
Kesari Harvoo



एरवेल मेनेजिस
Ervelle Menezes



सिबी मलायिल
Siby Malayil



सनी जोसेफ
Sunny Joseph



सत्य पॉल
Satya Paul



प्रतिभा प्रहलाद
Prathibha Prahlad

निर्णायक मंडल : सिनेमा पर सर्वोत्तम लेखन

JURY : BEST WRITING ON CINEMA



नमिता गोखले (अध्यक्ष)
Namita Gokhale (Chairperson)



जेरी पिंटो
Jerry Pinto



जी.पी. रामचंद्रन
G.P. Ramachandran

गैर-कथाचित्र : निर्णायक मंडल

JURY : NON-FEATURE FILMS



अशोक विश्वनाथन (अध्यक्ष)
Ashoke Vishwanathan (Chairperson)



जैस्मीन के राय
Jasmine K. Roy



प्रभु राघकृष्णन
Prabhu Radhakrishnan



अशोक ओग्रा
Ashok Ogra



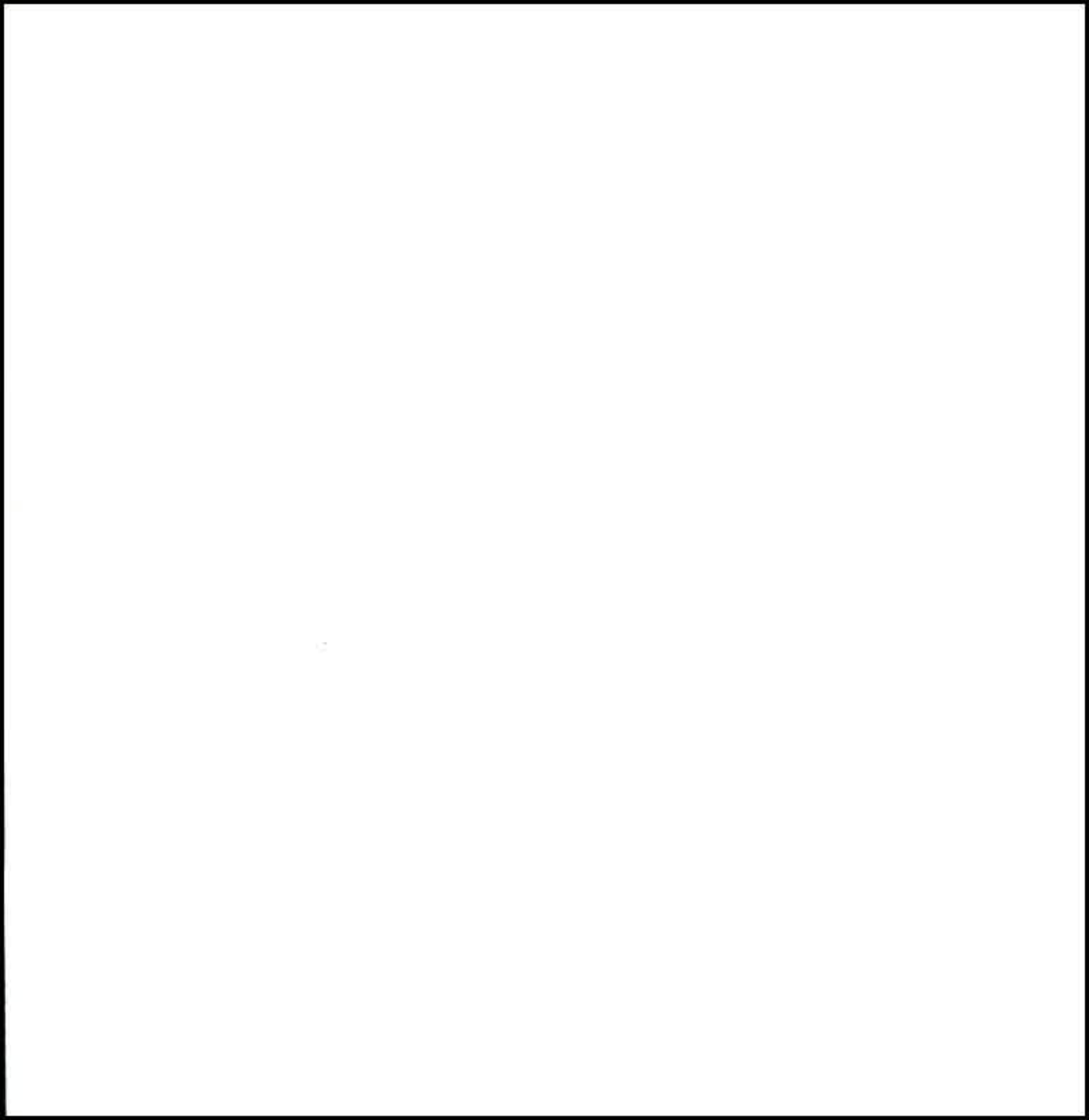
राजेंद्र जांगले
Rajendra Janglay

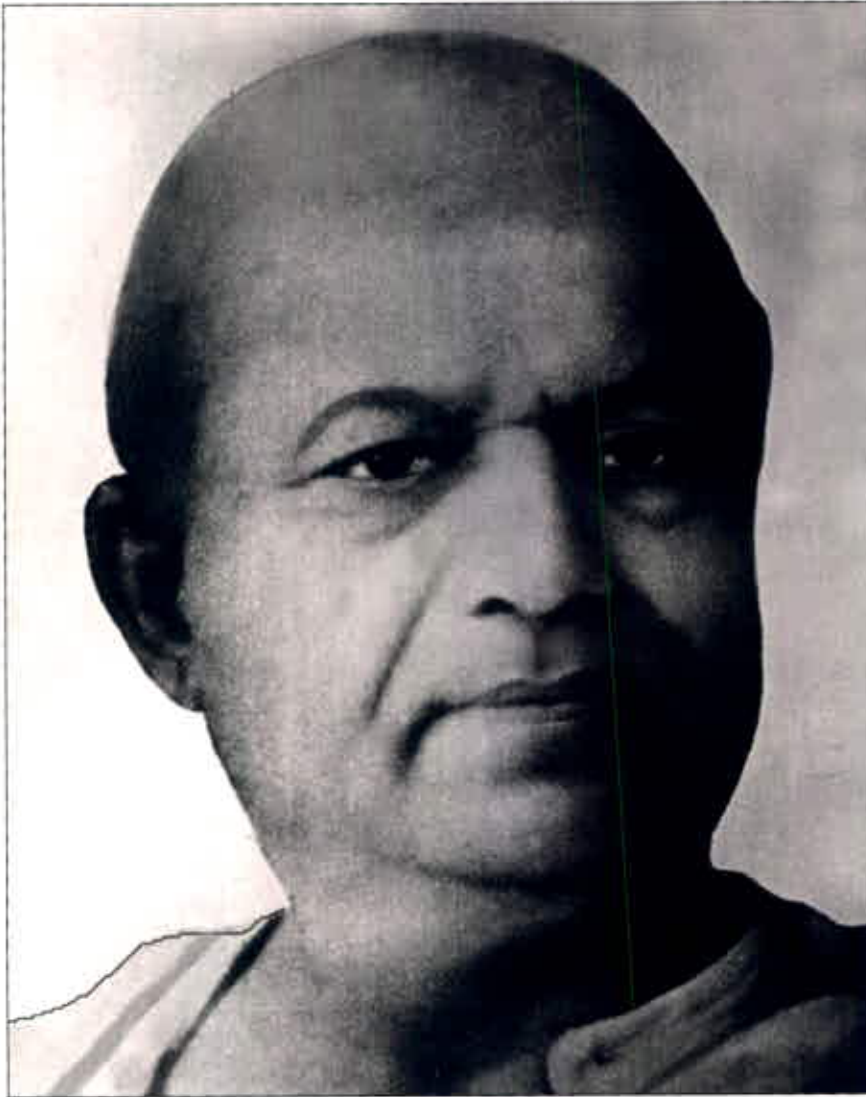


रमेश आशेर
Ramesh Asher

दादासाहेब फ़ाल्के
पुरस्कार 2007

**Dadasaheb Phalke
Award 2007**





दुंदीराज गोविन्द फाल्के
Dhundiraj Govind Phalke

ABOUT DADASAHEB PHALKE AWARD

The prestigious and top most award of Indian cinema is named after the father of Indian cinema, Dhundiraj Govind Phalke. He is credited with making the first ever Indian feature film in 1913. Beginning with *Raja Harishchandra*, Dadasaheb Phalke, as he was popularly called, went on to make 95 movies and 26 short films in a span of 19 years until 1932.

To honour this enterprising film personality, the Dadasaheb Phalke award was introduced in 1969. The award recognises the contribution of film personalities to the development of Indian cinema. The first award was presented to the renowned actress and pioneer of studio system in India, Devika Rani.

दादासाहेब फाल्के पुरस्कार

भारतीय सिनेमा का सर्वोत्तम पुरस्कार भारत में सिनेमा के जनक माने जाने वाले दुंदीराज गोविन्द फाल्के के नाम से सुशोभित है। 'राजा हरीश्चन्द्र' से फिल्मी जीवन का प्रारंभ करने वाले दादासाहेब फाल्के ने 1932 तक, 19 वर्षों में 95 फिल्में तथा 26 लघु फिल्में बनाईं।

दादासाहेब फाल्के के सम्मानार्थ यह नामित पुरस्कार सन् 1969 में पहली बार प्रसिद्ध अभिनेत्री तथा स्टूडियो तंत्र की प्रतिपादक देविका रानी को प्रदान किया गया। प्रत्येक वर्ष भारतीय सिनेमा के उत्पादन और विकास के लिए आजीवन काम करने वाले व्यक्ति को इस पुरस्कार से सम्मानित किया जाता है।

मन्ना डे 2007

फिल्मी संगीत हो या गैर-फिल्मी संगीत, शास्त्रीय हो या पॉप, लोकगीत, भजन, गजल, कव्वाली या फिर रोमांटिक गाथागीत या रॉक एंड रोल गाने, मन्ना डे ने हर तरह के गीत गाये हैं। मन्ना डे भारतीय संगीत की सर्वाधिक बहुमुखी प्रतिमाओं में से एक हैं। वे अपने गानों की असीम विविधता और अनूठेपन के लिए जाने जाते हैं। पिछले सात वर्षों में वे, ए माई जरा देख के चलो, एक धतुर नार करके सिंगार, ये इश्क इश्क है, प्यार हुआ तकरार हुआ, आओ दिवस्ट करें, ऐ मेरे प्यारे बतान, तू प्यार का सागर है, यारी है ईमान, ऐ मेरी जोहरा जबी, जिन्दगी कैसी है पहले, न तो कारवां की तलाश है, मुड़ मुड़ के न देख, मेरी बस को डंडा क्यों मारा जैसे बहुरंगी गानों से संगीत प्रेमियों की कई पीढ़ियों का दिल जीताते रहे हैं। मन्ना डे ने विभिन्न भारतीय भाषाओं में 3500 से अधिक गाने गाये हैं।

मन्ना डे की संगीत साधना का सबसे महत्वपूर्ण पहलू है, संगीत के शास्त्रीय व्याकरण और अनुशासन पर कड़ी पकड़। उन्होंने अपने लोचमरे स्वर से रागों पर आधारित जटिल गीतों को सहज और सरल बनाकर प्रस्तुत किया। उनके सर्वाधिक लोकप्रिय गीत वे हैं जो अर्धशास्त्रीय शैली में गाये गए हैं। इनमें प्रमुख हैं: सुर ना राजे क्या गाऊ नै, पूछो नू कैसे मैंने रैन बितायी, लागो चुनरी में दाग, आगो कहां से घनश्याम, इनक अनक तोरी बाजे पायलिया, फूलगैदवा ना मारो आदि। उनके बाजे गो बीना, बंधोना, फूल ओ माला डोरे, आमी जे जलसाघरे और कोफी हाऊसेर, सई अज्जा जैसे बंगला गीत भी समान रूप से मधुर और लोकप्रिय रहे। उन्होंने महान शास्त्रीय संगीतकार पंडित भीमसेन जोशी के साथ लोकप्रिय युगल गीत कैतकी गुलाब जूही भी गाया।



मन्ना डे का वास्तविक नाम प्रबोध चंद्र डे है। उनका जन्म 1 मई, 1919 को कोलकाता में हुआ। दचपन में मन्ना डे को कुश्ती, मुक्केबाजी और फुटबॉल जैसे खेलों का शौक था। वे बहुत ही नटखट थे और दूसरों से झगड़ना, हलवाई की दुकान से मिठाई और पड़ोस के घर से अचार चुरा लेना उनके रोजमर्रा के कारनामे थे। लेकिन बहुत जल्दी ही उन पर संगीत हावी हो गया और शराब पीछे छूट गयी। उन्होंने अपनी आत्मकथा 'यार्द जी उठी' में लिखा है - "हमारे पुरतनी घर के संगीतमय वातावरण ने एक शराबी लड़के को संगीतकार में बदल दिया।"

उन्होंने संगीत की शिक्षा अपने चाचा और जाने माने संगीत निर्देशक के.सी.डे और उस्ताद दबीर खां से ली। कोलकाता के विद्यासागर कालेज से स्नातक की शिक्षा पूरी करने के बाद वे इस दुर्घटना में थे कि वे वकील बनें या पार्श्व गायक। किंतु उन पर के.सी. डे का पुरा प्रभाव था और उन्होंने मन्ना डे को संगीत का रास्ता चुनने को तैयार कर लिया। उन्होंने ही उन्हें "मन्ना" नाम दिया।

1942 में मन्ना डे अपने चाचा के साथ मुम्बई चले गए। वहां उन्होंने पहले अपने चाचा और फिर सथिन देव बर्मन के सहायक के रूप में काम किया। उन्होंने पार्श्व गायन का श्रीगणेश 1943 में 'तमन्ना' फिल्म से किया। यह गीत उन्होंने सुरेशा के साथ गाया, जिसका संगीत के.सी. डे ने सजाया था। उन्होंने अपना पहला एकल गाना, ऊपर गगन विशाल, एस.डी बर्मन के निर्देशन में 'मशाल' फिल्म के लिए गाया जो काफी लोकप्रिय हुआ। मन्ना डे ने मोहम्मद रफी, मुकेश और किशोर कुमार के साथ मिलकर 1950 के दशक से 1970 के दशक तक भारतीय फिल्म पार्श्व संगीत पर राज किया। मोहम्मद रफी ने एक बार संवाददाताओं से बातचीत में कहा था- "आप लोग मेरे गाने सुनते हैं लेकिन मैं केवल मन्ना डे के गीत सुनता हूँ।"

मन्ना डे ने पद्मश्री (1971), पद्मभूषण (2005) और मध्यप्रदेश सरकार का लता मंगेशकर पुरस्कार (1985) सहित अनेक पुरस्कार प्राप्त किए हैं। उन्हें दो बार 1969 तथा 1971 में राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार और 1971 में फिल्मफेयर पुरस्कार मिला। बंगला में लिखी उनकी आत्मकथा 'जीबोनेर जलसाघारे' अंग्रेजी में 'मैमोरीज कम अलाइव' और हिंदी में 'यार्द जी उठी' नाम से प्रकाशित हुई हैं। उनका विवाह सुलोचना कुमारन से हुआ और उनकी दो बेटियां शुरुमा और सुमिता हैं। लगभग 50 वर्ष तक मुम्बई में रहने के बाद इन दिनों में वे बंगलौर में रहते हैं।

Manna Dey 2007

Be it film or non-film music, classical, pop or folk, bhajan, ghazal or qawwali, romantic ballads or rock'n'roll numbers. Manna Dey has sung them all. One of the most versatile voices in Indian music. Manna Dey is recognised for a wide repertoire and unparalleled range of songs. For the past sixty years he has delighted generations of listeners with eternal favourites like *Ai bhai zara dekh ke chalo*, *Ek chatur naar karke singaar*, *Yeh ishq ishq hai*, *Pyar hua iqraar hua hai*, *Aao twist karen*, *Ai mere pyare watan*, *Tu pyaar ka saagar hai*, *Yaari hai imaan*, *Ai men zohrajabeen*, *Zindagi kaisi haipaheli*, *Na to karvaan ki talaash hai*, *Mud mud ke na dekh*, *Meri bhains ko danda kyon maara* and many more. Not just the range, the quantity has been just as staggering—he has recorded more than 3500 songs in various Indian languages.

The most exemplary aspect about Manna Dey's music has been the strong grasp of the classical grammar and rigour. He made the most intricate of raga-based songs sound easy and effortless. His most outstanding creations have been in the semi-classical mould—*Sur na saje kya gaaon main*, *Poocho na kaise maine rain bitayi*, *Laga chunri mein daag*, *Aayo kahan se ghanshyam*, *Jhanak jhanak tori baaje payaliya*, *Phoolgendwa na maaro* et al. His Bengali compositions are just as masterly—*Baaje go bina*, *Bendhona phool-o-mala dore*, *Aami je jalsaghare* and *Coffee Houser shei addata*. He also recorded a popular duet—*Ketaki gulaab juhi*—with legendary classical musician Pandit Bhimsen Joshi.

Dey's real name is Prabodh Chandra and he was born in Kolkata on 1 May 1919. As a child Manna Dey was passionate about wrestling, boxing and football. He was a prankster, picking up fights, shoplifting sweets from a confectionary and stealing pickle from the neighbour's house. But music soon took hold. "The musical ambience of our ancestral house was instrumental in effecting the turnaround from mischief monger to a music maker," writes Manna Dey in his autobiography, *Memories Come Alive*.

He began taking singing lessons from his illustrious uncle, Krishna Chandra Dey, the well-known singer-composer of the 30s and Ustad Dabir Khan. He was in two minds after graduating from Vidyasagar College, Kolkata, on whether to become a barrister or a playback singer. However, he was hugely influenced by his uncle K.C. Dey who took the nephew under his wings, gave him the petname 'Manna' and convinced him to pursue a career in music.

In 1942, Dey accompanied his uncle to Mumbai. There he started working as an assistant, first under his uncle and then later under Sachin Dev Burman. He started his career in playback singing with the movie, *Tamanna*, in 1943. The musical score was by K.C. Dey and he sang a duet with Suraiya. S.D. Burman gave him his first solo hit from the film *Mashal*—*Upar gagan vishaal*. Along with Mohammed Rafi, Kishore Kumar and Mukesh, he dominated Indian film playback music from the 1950s to the 1970s. Mohammad Rafi once told journalists: "You listen to my songs. I listen to Manna Dey songs only".

Manna Dey has received a number of awards including the Padma Shri (1971), Padma Bhushan (2005) and the Lata Mangeshkar award of Government of Madhya Pradesh (1985). He has won the national film award twice, in 1969 and 1971 and Filmfare award in 1971. His Bengali-language autobiography, *Jiboner Jalsaghorey*, has been published in English as *Memories Come Alive* and in Hindi as *Yaden Jee Uthi*. He is married to Sulochana Kumaran and they have two daughters: Shuroma and Sumita. He currently lives in Bangalore after having spent more than fifty years in Mumbai.

पिछले वर्षों के दादा साहेब फाल्के पुरस्कार
DADASAHEB PHALKE AWARD - PAST RECIPIENTS

देविका रानी राओरिक, 1969
Devika Rani Roerich

कानन देवी, 1976
Kanan Devi

दुर्गा खोटे, 1983
Durga Khote

बी.एन. सरकार, 1970
B.N. Sircar

नितिन बोस, 1977
Nitin Bose

सत्यजित राय, 1984
Satyajit Ray

पृथ्वीराज कपूर, 1971
Prithviraj Kapoor

आर.सी. बोराल, 1978
R.C. Boral

वी. शांताराम, 1985
V. Shantaram

पंकज मलिक, 1972
Pankaj Mullick

सोहराब मोदी, 1979
Sohrab Modi

बी. नागी रेड्डी, 1986
B. Nagi Reddy

सुलोचना, 1973
Sulochana (Ruby Myers)

पी. जयरज, 1980
P. Jairaj

राज कपूर, 1987
Raj Kapoor

बी.एन. रेड्डी, 1974
B.N. Reddy

नौशाद अली, 1981
Naushad Ali

अशोक कुमार, 1988
Ashok Kumar

धीरेन गांगुली, 1975
Dhiren Ganguly

एल.वी. प्रसाद, 1982
L.V. Prasad

लता मंगेशकर, 1989
Lata Mangeshkar

पिछले वर्षों के दादा साहेब फाल्के पुरस्कार
DADASAHEB PHALKE AWARD - PAST RECIPIENTS

अक्कीनेनी नागेश्वर राव, 1990
Akkineni Nageshwara Rao

बी.जी. पेंडारकर, 1991
B.G. Pendharakar

डॉक्टर भूपेन हज़ारिका, 1992
Dr. Bhupen Hazarika

मजरूह सुल्तानपुरी, 1993
Majrooh Sultanpuri

दिलीप कुमार, 1994
Dilip Kumar

डॉ. राजकुमार, 1995
Dr. Rajkumar

शिवाजी गणेशन, 1996
Shivaji Ganesan

कवि प्रदीप, 1997
Kavi Pradeep

बी.आर. चोपड़ा, 1998
B.R. Chopra

ऋषिकेश मुखर्जी, 1999
Hrishikesh Mukherjee

आशा भोसले, 2000
Asha Bhosle

यश चोपड़ा, 2001
Yash Chopra

देव आनन्द, 2002
Dev Anand

मृणाल सेन, 2003
Mrinal Sen

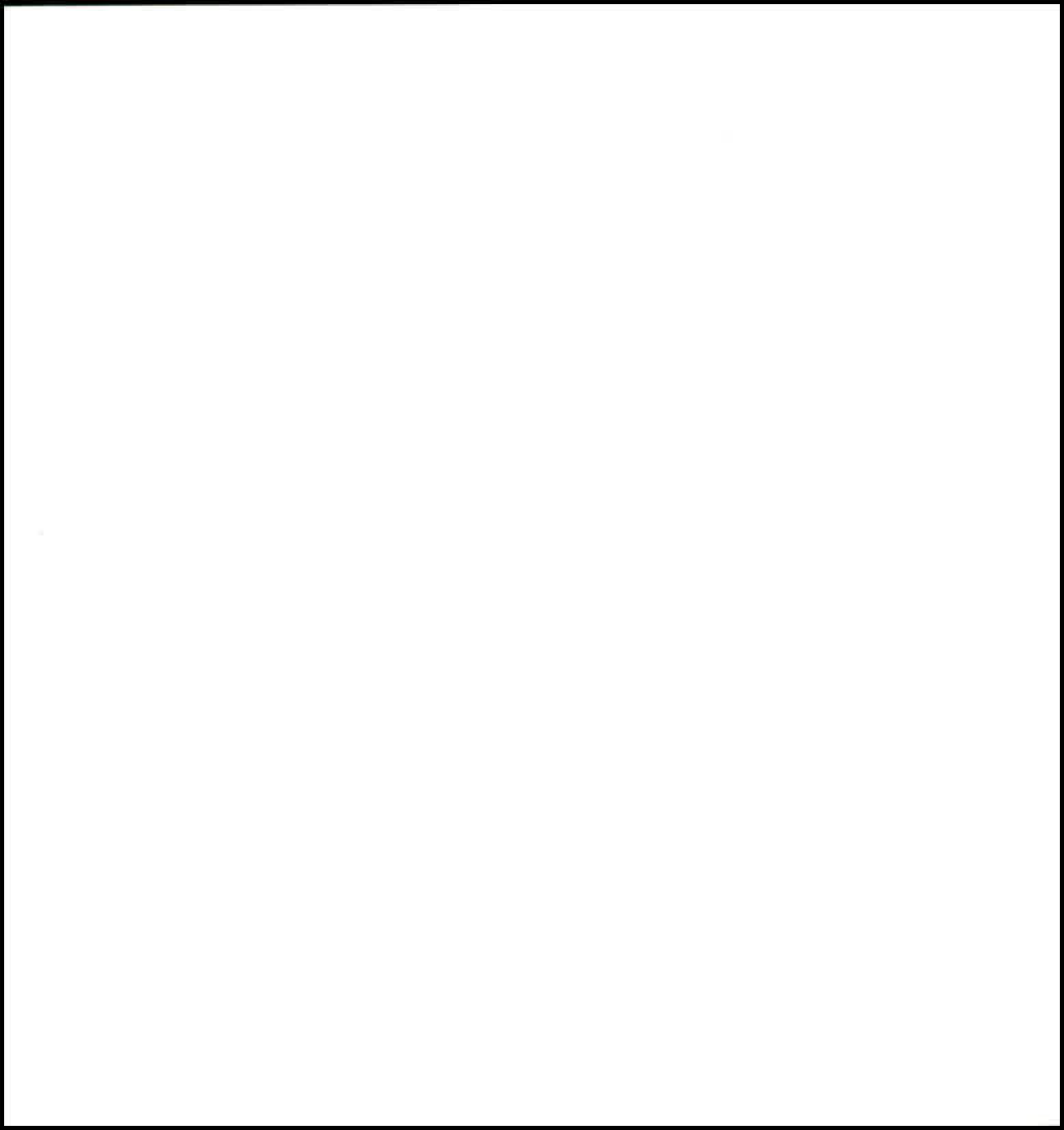
अदूर गोपालकृष्णन, 2004
Adoor Gopalakrishnan

श्याम बेनेगल, 2005
Shyam Benegal

तपन सिन्हा, 2006
Tapan Sinha







कथाचित्र
पुरस्कार

**Awards for
Feature Films**

कथाचित्र पुरस्कार : एक नजर में

1.	अंतर्द्वन्द्व (हिंदी)	सामाजिक विषयों पर सर्वोत्तम फिल्म
2.	यालीगंज कोर्ट (बंगला)	सर्वोत्तम बंगला फिल्म
3.	चक दे! इंडिया (हिंदी)	स्वस्थ मनोरंजन प्रदान करने वाली सर्वोत्तम लोकप्रिय फिल्म
4.	धर्म (हिंदी)	राष्ट्रीय एकता पर सर्वोत्तम फिल्म के लिए नर्गिस दत्त पुरस्कार
5.	फोटो (हिंदी)	सर्वोत्तम बाल फिल्म
6.	फ़ोज़न (हिंदी और लद्दाखी)	निर्देशक की पहली सर्वोत्तम फिल्म के लिए इंदिरा गांधी पुरस्कार सर्वोत्तम छायांकन
7.	गांधी, माई फादर (हिंदी, अंग्रेजी)	निर्णायक मंडल का विशेष पुरस्कार सर्वोत्तम पटकथा सर्वोत्तम सह अभिनेता
8.	गुलाबी टाकीज़ (कन्नड़)	सर्वोत्तम कन्नड़ फिल्म सर्वोत्तम अभिनेत्री
9.	इनिमे नांगथान (तमिल)	सर्वोत्तम कार्टून फिल्म
10.	जब वी मेट (हिंदी)	सर्वोत्तम पार्श्व गायिका सर्वोत्तम नृत्य निर्देशन
11.	कांचीवरम (तमिल)	सर्वोत्तम कथाचित्र सर्वोत्तम अभिनेता
12.	कृष्णकांतेर विल (बंगला)	सर्वोत्तम वेशभूषाकार
13.	दि लास्ट लीयर (अंग्रेजी)	सर्वोत्तम अंग्रेजी फिल्म सर्वोत्तम सह अभिनेत्री
14.	नालु पेनंगुल (मलयालम)	सर्वोत्तम निर्देशन सर्वोत्तम संपादन
15.	निराप (मराठी)	सर्वोत्तम मराठी फिल्म
16.	ओम शांति ओम (हिंदी)	सर्वोत्तम कला निर्देशन
17.	ओरे कडल (मलयालम)	सर्वोत्तम मलयालम फिल्म सर्वोत्तम संगीत निर्देशन
18.	परदेसी (मलयालम)	सर्वोत्तम मेक-अप कलाकार
19.	पेशीयार (तमिल)	सर्वोत्तम तमिल फिल्म
20.	शिवाजी (तमिल)	सर्वोत्तम विशेष प्रभाव
21.	तारे ज़मीं पर (हिंदी)	परिवार कल्याण पर सर्वोत्तम फिल्म सर्वोत्तम पार्श्व गायक
22.	टिंग्या (मराठी)	सर्वोत्तम बाल कलाकार
23.	1971 (हिंदी)	सर्वोत्तम हिंदी फिल्म सर्वोत्तम ध्वनि आलेखन

Awards for Feature Films at a Glance

1.	BALLYGUNGE COURT (Bengali)	Best Bengali Film
2.	ANTARDWANDWA (Hindi)	Best Film on Social Issues
3.	CHAK DE! INDIA (Hindi)	Best Popular Film Providing Wholesome Entertainment
4.	DHARM (Hindi)	Nargis Dutt Award for Best Film on National Integration
5.	FOTO (Hindi)	Best Children's Film
6.	FROZEN (Hindi and Ladakhi)	Indira Gandhi Award for Best Debut Film of a Director Best Cinematography
7.	GANDHI, MY FATHER (Hindi and English)	Special Jury Award Best Screenplay Best Supporting Actor
8.	GULABI TALKIES (Kannada)	Best Kannada Film Best Actress
9.	INIMEY NAANGATHAAN (Tamil)	Best Animation Film
10.	JAB WE MET (Hindi)	Best Female Playback Singer Best Choreography
11.	KANCHIVARAM (Tamil)	Best Feature Film Best Actor
12.	KRISHNAKANTER WILL (Bengali)	Best Costume Designer
13.	THE LAST LEAR (English)	Best English Film Best Supporting Actress
14.	NAALU PENUNGAL (Malayalam)	Best Direction Best Editing
15.	NIROP (Marathi)	Best Marathi Film
16.	OM SHANTI OM (Hindi)	Best Art Direction
17.	ORE KADAL (Malayalam)	Best Malayalam Film Best Music Director
18.	PARADESI (Malayalam)	Best Make-Up Artist
19.	PERIYAR (Tamil)	Best Tamil Film
20.	SIVAJI (Tamil)	Best Special Effects
21.	TAARE ZAMEEN PAR (Hindi)	Best Film on Family Welfare Best Lyrics
22.	TINGYA (Marathi)	Best Child Artist
23.	1971 (Hindi)	Best Hindi Film Best Audiographer

सर्वोत्तम कथाचित्र

कांचीवरम (तमिल)

निर्माता पर्सेप्ट पिक्चर कंपनी एवं फोर फ्रेम्स पिक्चर्स लिमिटेड को स्वर्ण कमल और 2,50,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक प्रियदर्शन को स्वर्ण कमल और 2,50,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

....कांची के रेशम बुनकर समुदाय के जीवन तथा अपने आदर्शों व निजी सपनों के बीच उलझे एक बुनकर के अंतर्द्वंद्व के अनूठे चित्रण के लिए। यह फिल्म संपूर्ण सिनेमाई अनुभव के सृजन के लिए जीवंत कथा तथा तकनीकी श्रेष्ठता का मिश्रण है।

BEST FEATURE FILM

KANCHIVARAM (Tamil)

Swarna Kamal and a cash prize of Rs 2,50,000/- to PRODUCERS PERCEPT PICTURE COMPANY and FOUR FRAMES PICTURES LTD

Swarna Kamal and a cash prize of Rs 2,50,000/- to DIRECTOR PRIYADARSHAN

CITATION

....for presenting a rare portrayal of Kanchi's silk weaver community and the internal struggle of a weaver caught between his ideals and personal dreams. A vibrant story and technical excellence blend to create a total cinematic experience.

परसेप्ट पिक्चर कम्पनी

यह कंपनी परसेप्ट लिमिटेड का भाग है। यह भारत में स्थित एक अग्रणी मनोरंजन तथा संचार ग्रुप है जिसकी गतिविधियां मध्यपूर्व, दक्षिण एशिया, इंग्लैंड तथा विश्व के अन्य हिस्सों तक फैली हैं। 2002 में स्थापित परसेप्ट पिक्चर कंपनी अपने क्षेत्र की सबसे तेजी से प्रगति करने वाली कंपनी है। यह फिल्मों के निर्माण, वितरण और विपणन के अलावा टेलीविजन सॉफ्टवेयर, विज्ञापन फिल्म, कॉर्पोरेट फिल्म तथा लाइव कार्यक्रमों के आयोजन जैसे विविध कार्य करती है। इनके यहां फिल्म निर्माण से जुड़ी सभी सुविधाएं एक स्थान पर उपलब्ध हैं। कंपनी की *हनुमान*, *फिर मिलेंगे* तथा *पेज-3* जैसी फिल्मों को कई पुरस्कार मिले हैं। इनकी अन्य मुख्य फिल्में हैं *रिटर्न आफ हनुमान* (कार्टून), *डोल*, *डेडलाइन-सिर्फ 24 घंटे*, *एमजी 3*, *ट्रैफिक सिग्नल*, *कॉर्पोरेट*, *मालामाल वीकली*, *प्यार में कभी-कभी गकड़ी*, *प्यार में ट्विस्ट*, *होम डिलीवरी*, *रू-ब-रू जम्बो*, *फिराक* तथा *8x10 तस्वीर*।

प्रियदर्शन

लोकप्रिय और कुशल फिल्मकार प्रियदर्शन को फिल्म कला का 25 वर्षों का अनुभव है और वे अब तक 60 से अधिक फीचर फिल्में बना चुके हैं। प्रियदर्शन ने फिल्मी क्षेत्र में उस समय प्रवेश किया जब उनके मित्र सुपरस्टार मोहनलाल अभिनय जगत में कदम रख रहे थे। उनकी पहली फिल्म *पूचक्कोरू मूक्कूति* काफी लोकप्रिय हुई। आम लोगों के बीच उनकी लोकप्रियता का एक कारण यह है कि वे अपनी फिल्मों में हास्य का पुट अवश्य डालते हैं। *वित्रम* और *किलुक्कम* उनकी प्रसिद्ध मलयालम फिल्में हैं। उन्होंने हिंदी, तमिल और तेलुगु फिल्में भी बनाई हैं। उनकी पहली हिंदी फिल्म *गर्दिश क्रीडम* का रीमेक थी और फिल्म *मुस्कराहत किलुक्कम* पर आधारित थी। उनकी हिंदी फिल्म *विरासत* को राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार के अतिरिक्त 7 फिल्मफेयर पुरस्कार मिले। उनकी दो हिंदी फिल्में *बम बम बोले* तथा *दे दना दन* बन चुकी हैं और जल्दी ही रिलीज होने वाली हैं।



PERCEPT PICTURE COMPANY

Percept Picture Company (PPC) is a leading media, entertainment and communication group based in India with operations in Middle East, South Asia, UK and other parts of the world. Established in 2002, PPC is a fully integrated content creation, aggregation and distribution company with expertise in producing motion pictures, television software, film distribution and marketing, ad film production, corporate films, live events and special projects. PPC films, like *Hanuman*, *Phir Milenge* and *Page 3* have won numerous awards. Its films include *Return of Hanuman* (Animation), *Dhol*, *Traffic Signal*, *Corporate*, *Malamaal Weekly*, *Pyaar Mein Kabhi Kabhi*, *Makdee*, *Phir Milenge*, *Pyaar Mein Twist*, *Home Delivery*, *Ru Ba Ru*, *Jumbo*, *Firaaq* and *8x10 Tasveer*.

PRIYADARSHAN

The prolific filmmaker has over 25 years of experience in the film industry with over 60 feature films to his credit. Priyadarshan entered films around the time when his friend, superstar Mohanlal, was starting out. His first film *Poochkkoru Mookkuthi* was a blockbuster. His popularity with the masses is attributed to the signature slapstick comedy he uses extensively. Priyadarshan's famous works include *Chithram* and *Kilukkam*. *Gardish*, his first Hindi film, was a remake of *Kireedam* and *Muskurahat* was a remake of *Kilukkam*. *Virasat* (Hindi) won National Award besides seven Filmfare trophies. His two new films in Hindi *Bam Bam Bole* and *De Dana Dan* are ready for release.

निर्देशक की पहली सर्वोत्तम फिल्म का इंदिरा गांधी पुरस्कार

फ़ोजन (हिंदी)

निर्माता शिवाजी चंद्रभूषण को स्वर्ण कमल तथा 1,25,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक शिवाजी चंद्रभूषण को स्वर्ण कमल तथा 1,25,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

...पुरस्कार बर्फ से ढके उन सुदूरवर्ती पर्वतों के जनजीवन का जीवंत एवं मार्मिक चित्रण करने के लिए दिया गया है जहां जीना ही अपने आप में विषम चुनौती है।

INDIRA GANDHI AWARD FOR THE BEST FIRST FILM OF A DIRECTOR

FROZEN (Hindi)

Swarna Kamal and a cash prize of Rs 1,25,000 to PRODUCER SHIVAJEE CHANDRABHUSHAN

Swarna Kamal and a cash prize of Rs 1,25,000 to DIRECTOR SHIVAJEE CHANDRABHUSHAN

CITATION

...for bringing to life with warmth and vivacity life in those distant, desolate, snow-bound heights where existence itself is a full-time challenge.

शिवाजी चंद्रभूषण

समाजशास्त्र के स्नातक शिवाजी चंद्रभूषण ने अपना कैरियर टेलीविजन के लिए फिल्म वीडियो तैयार करने से शुरू किया। पर्यटन और फोटोग्राफी में रुचि तथा फिल्म निर्माण से लगाव ही उन्हें प्राकृतिक भूमि लद्दाख तक ले गए जिस पर उनकी फिल्म *फ्रोजन* आधारित है। इस फिल्म को एम.ए.एम.आई., ओसियन सिनेफेन, व्लादिवोस्तोक, मैड्रिड, बेल्जियम और ग्रेनाडा फिल्म समारोहों में 20 से अधिक पुरस्कार मिल चुके हैं।



SHIVAJEE CHANDRABHUSHAN

A bachelor in sociology, Shivajee Chandrabhushan began his career producing music videos for television. But it was his interest in travel and photography, coupled with a love for filmmaking, which culminated into a journey to Ladakh, which is where his debut film, *Frozen*, is based. The film has already won over 20 national and international awards in festivals like MAMI, Osian Cinefan, Vladivostok, Madrid, Belgium and Granada.

लोकप्रिय एवं स्वस्थ मनोरंजन प्रदान करने वाली सर्वोत्तम फिल्म

चक दे! इंडिया (हिन्दी)

निर्माता आदित्य चोपड़ा को स्वर्ण कमल और 2, 00,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक शिमित अमीन को स्वर्ण कमल और 2, 00,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

.....दर्शकों का भरपूर मनोरंजन करते हुए उनमें भारतीय होने पर गर्व का भाव जागृत करने के लिए। यह प्रेरणास्पद फिल्म निर्माण की अनोखी कृति है।

AWARD FOR THE BEST POPULAR FILM PROVIDING WHOLESOME ENTERTAINMENT

CHAK DE! INDIA (Hindi)

Swarna Kamal and a cash prize of Rs 2,00,000 to PRODUCER ADITYA CHOPRA

Swarna Kamal and a cash prize of Rs 2,00,000 to DIRECTOR SHIMIT AMIN

CITATION

.....for thoroughly entertaining the audience, making one proud to be an Indian. A masterpiece of inspired filmmaking.

आदित्य चोपड़ा

यश चोपड़ा के बेटे आदित्य चोपड़ा का नई पीढ़ी के फिल्म निर्माताओं में अग्रणी स्थान है। उनकी अनूठी प्रतिभा 'दिल वाले दुल्हनियां ले जाएंगे' फिल्म में दिखाई दी जो उन्होंने 23 वर्ष की उम्र में बनाई। वो भारत के फिल्मी इतिहास की सबसे अधिक सफल फिल्मों में थी और उसे लोकप्रिय एवं स्वस्थ मनोरंजन प्रदान करने वाली सर्वोत्तम फिल्म का राष्ट्रीय पुरस्कार मिला था। 10 वर्ष पहले बनी यह फिल्म देश की सबसे लंबे समय तक चलने वाली फिल्म है। 2005 में उन्होंने निर्माता के रूप में *हम तुम* तथा *धूम* फिल्में बनाई और तब से वे *बबली और बंटी*, *चक दे! इंडिया* और *न्यूयार्क* जैसी सफल फिल्मों का निर्माण कर चुके हैं। इस प्रक्रिया में उन्होंने अनेक नए निर्देशकों को अवसर दिया और सृजनात्मक तथा तकनीकी लोगों का एक समूह तैयार कर लिया है।

शिमित अमीन

शिमित अमीन ने निर्देशन का दायित्व संभालने से पहले अनेक फिल्मों का ध्वनि आलेखन और संपादन किया। उन्होंने अपने कैरियर की शुरुआत संतोष शिवन की *अशोका* पर वृत्तचित्र बनाकर की। 2004 में उन्होंने निर्देशक के रूप में अपनी पहली फिल्म *अब तक छपन* बनाई। *चक दे! इंडिया* को आई आई एफ ए पुरस्कार, स्क्रीन अवार्ड, वी.शांताराम और स्टैंडर्ड अवार्ड जैसे अनेक पुरस्कार मिल चुके हैं। उनकी नई फिल्म *राकेट सिंह : सेल्समैन आफ दि ईयर* इस समय निर्माणाधीन है।



ADITYA CHOPRA

Yash Chopra's eldest son, Aditya Chopra, has been the torchbearer of the young generation of filmmakers in India. His redoubtable flair reflected in *Dilwale Dulhania Le Jaayenge* that he made at 23. The film was one of the biggest box office hits in the Indian film history and won the national award for providing wholesome entertainment. With more than 10 year run behind it, DDLJ is the longest running film in the history of Indian cinema. In 2005, Chopra donned the mantle of producer with *Hum Tum* and *Dhoom* and has since produced several successful films like *Bunty Aur Babli*, *Chak De! India* and *New York*. In the process he has launched several young directors and built a pool of creative and technical talent.

SHIMIT AMIN

Shimit Amin has worked in several films as sound editor and editor before taking to direction. He started off by a making-of documentary on Santosh Sivan's *Asoka*. In 2004 he made his directorial debut with the much acclaimed *Ab Tak Chhappan*. *Chak De! India* has already received several awards like the IIFA awards, Screen, V. Shantaram and Stardust award. His new film *Rocket Singh—Salesman of the Year* is currently under production.

राष्ट्रीय एकता संबंधी सर्वोत्तम कथाचित्र के लिए नरगिस दत्त पुरस्कार धर्म (हिंदी)

निर्माता **शीतल वी. तलवार** को रजत कमल और 1,50,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक **भावना तलवार** को रजत कमल और 1,50,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

....यह संदेश सशक्त ढंग से उजागर करने के लिए कि मानवता का मूल्य धार्मिकता से अधिक है। एक रूढ़िवादी और अंधविश्वासी पुजारी के जीवन में आए परिवर्तन को सुंदरता के साथ चित्रित किया गया है।

NARGIS DUTT AWARD FOR BEST FEATURE FILM ON NATIONAL INTEGRATION

DHARM (Hindi)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 1,50,000 to PRODUCER SHEETAL V. TALWAR

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 1,50,000 to DIRECTOR BHAVNA TALWAR

CITATION

....for powerfully bringing forth the message that humanism is of much greater value than religiosity. The transformation of an orthodox and superstitious priest to a more sensitive and humane person is very beautifully depicted.

शीतल वी. तलवार

शीतल वी. तलवार बैंकिंग तथा विपणन के एक प्रतिष्ठित अधिकारी हैं जिन्हें बैंकिंग तथा विपणन उद्योग में एक दशक से अधिक वर्षों का लंबा अनुभव है। वे जेट एयरवेज़, अमेरिकन एक्सप्रेस बैंक, मोएट हेनेस्से, रीबोक, कोका कोला आदि अनेक जानी-मानी कंपनियों से जुड़े रहे हैं। शीतल ने डब्ल्यू एस जी पिवचर्स के साथ फिल्म निर्माण क्षेत्र में प्रवेश किया। *धर्म* उनकी पहली फिल्म है।



भावना तलवार

भावना तलवार ने अपना कैरियर समाचार पत्र एशियन एज में पत्रकार के रूप में शुरू किया। बाद में उन्होंने 8 वर्ष तक एक विज्ञापन फिल्म कंपनी में सहायक निर्देशक के रूप में काम किया। *धर्म* निर्देशक के रूप में उनकी पहली फिल्म है। 2007 के कांस फिल्म समारोह के विश्व सिनेमा खंड की अंतिम फिल्म के रूप में धर्म का प्रदर्शन किया गया।



SHEETAL V. TALWAR

Sheetal V. Talwar is a well-regarded banking and marketing professional who has over a decade long experience in the banking and marketing industry in India. He has been associated with some of the most premium brands in India like Jet Airways, American Express Bank, Moët Hennessey, Reebok, Coca Cola, etc. Sheetal ventured into the world of film production with WSG Pictures. *Dharm* is his first production.

BHAVNA TALWAR

Bhavna Talwar started her career as a journalist at Asian Age, covering film, theatre, fashion, and later worked for over eight years as an assistant director with an ad film company. *Dharm*, her debut film, premiered as the closing film at the World Cinema Section at the Cannes Film Festival 2007.

परिवार कल्याण पर सर्वोत्तम फिल्म

तारे ज़मीं पर (हिंदी)

निर्माता आमिर खान को रजत कमल और 1,50,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक आमिर खान को रजत कमल और 1,50,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

....एक ऐसे सामान्य परिवार की मनोवैज्ञानिक दुविधा के यथार्थपूर्ण चित्रण के लिए जो अपने बच्चों को अच्छी शिक्षा दिलाने पर ध्यान तो देता है लेकिन डायस्लेक्सिया रोग से पीड़ित अपने प्रतिभाशाली बच्चे की उपेक्षा करता है।

AWARD FOR BEST FILM ON FAMILY WELFARE

TAARE ZAMEEN PAR (Hindi)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 1,50,000 to Producer AAMIR KHAN

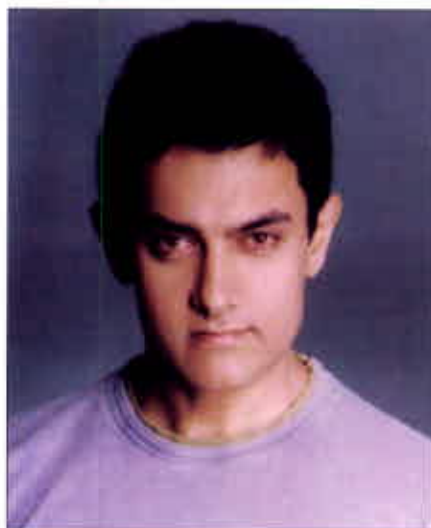
Rajat Kamal and a cash prize of Rs 1,50,000 to Director AAMIR KHAN

CITATION

....The award is given for realistically depicting the psychological dialectic between an ordinary family driving their children to educational excellence and a specially gifted child dealing with the problem of dyslexia in isolation.

आमिर खान

आमिर खान का संबंध ऐसे परिवार से है जो लंबे समय से फिल्म निर्माण से जुड़ा रहा है। कालेज के दिनों में ही आमिर थिएटर ग्रुप **अवांतर** में काम करने लगे। 18 वर्ष की उम्र में वे भारतीय सिनेमा जगत के सफलतम निर्देशकों में एक नासिर हुसैन के सहायक निर्देशक बन गए। केतन मेहता की **होली** उनकी पहली फिल्म थी। 1998 में बनी मंसूर खान की **कयामत से कयामत तक** ने उन्हें प्रसिद्धि दिलाई। 20 वर्षों में आमिर खान ने कई फिल्मों की हैं और उनकी गिनती लगातार भारत के सबसे बड़े सितारों में होती रही है। **राख, जो जीता वही सिकंदर, दिल है कि मानता नहीं, अंदाज़ अपना अपना, गुलाम, रंगीला, सरफरोश, दिल चाहता है, रंग दे बसंती, फना** जैसी फिल्मों समीक्षकों द्वारा भी सराही गई हैं और व्यावसायिक दृष्टि से भी हिट रही हैं। निर्माता के रूप में उनकी पहली फिल्म **लगान** 2002 में आस्कर पुरस्कार के लिए विदेशी भाषाओं की फिल्मों के वर्ग में अंतिम पांच में मनोनीत हुई। उसी वर्ष उन्हें पद्म श्री का सम्मान प्रदान किया गया। **'तारे ज़मीं पर'** के साथ आमिर ने निर्देशन के क्षेत्र में प्रवेश किया है। उनकी फिल्म **गज़नी** ने भारतीय सिनेमा के इतिहास में कमाई के सारे रिकार्ड तोड़ दिए।



AAMIR KHAN

Aamir Khan comes from a family that has been deeply rooted in filmmaking. While still in college Aamir worked in the theatre group **Avantar**. At the young age of 18 he began his career in films as an assistant director to one of India's most successful directors, Mr Nasir Hussain. He debuted in Ketan Mehta's **Holi**. Mansoor Khan's **Qayamat Se Qayamat Tak** (1988) catapulted him to success. In a career of over 20 years Aamir has consistently been one of the biggest stars of the Indian screen. **Raakh, Jo Jeeta Wahi Sikandar, Dil Hai Ki Maanta Nahin, Andaz Apna Apna, Ghulam, Rangeela, Sarfarosh, Dil Chahta Hai, Rang De Basanti, Fanaa** have been his critically as well as commercially successful films. **Lagaan**, with which he turned producer, reached the final five for the Best Foreign Film Oscars in 2002. The same year he was awarded one of the highest civilian honours, the Padma Shree. With **Taare Zameen Par** he made his directorial debut and, last year, his film **Ghajini**, broke all records to become the biggest grosser in the history of Indian cinema.

मद्यनिषेध, महिला एवं बाल कल्याण, दहेज विरोधी, नशीले पदार्थों के सेवन से होने वाली हानियां, विकलांग कल्याण आदि सामाजिक विषयों पर सर्वोत्तम फिल्म

अंतर्द्वन्द्व (हिंदी)

निर्माता सुशील राजपाल को रजत कमल और 1,50,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक सुशील राजपाल को रजत कमल और 1,50,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

.....शादी के नाम पर तगी के धंधे का भंडाफोड़ करने और एक शोषित लड़की द्वारा हिम्मत और साहस जुटाकर अपने अत्याचारी पिता के प्रति विद्रोह के नाटकीय चित्रण के लिए।

AWARD FOR BEST FILM ON SOCIAL ISSUES SUCH AS PROHIBITION, WOMEN AND CHILD WELFARE, ANTI-DOWRY, DRUG ABUSE, WELFARE OF THE HANDICAPPED ETC:

ANTARDWANDWA (Hindi)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 1,50,000 to PRODUCER SUSHIL RAJPAL

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 1,50,000 to DIRECTOR SUSHIL RAJPAL

CITATION

..... for exposing the "marriages for sale" racket and dramatically presenting a browbeaten girl who finds courage and her voice and rebels against her tyrannical father.

सुशील राजपाल

इतिहास विषय में स्नातकोत्तर डिग्री प्राप्त करने के बाद सुशील राजपाल ने छायांकन में प्रशिक्षण के लिए भारतीय फिल्म एवं टेलीविज़न संस्थान, पुणे में प्रवेश लिया। उन्होंने अनेक फिल्मों तथा विज्ञापनों के लिए छायांकन किया। *अंतर्द्वन्द्व* निर्देशक के रूप में उनकी पहली फिल्म है। इसकी कहानी उन्होंने अपने राज्य बिहार से ली है।



SUSHIL RAJPAL

A post graduate in history, Sushil Rajpal joined the FTII, Pune, to study cinematography. He worked as a cinematographer for several films and advertisements. With *Antardwandwa* he turns to direction, the story borrowing deeply from the state he grew up in—Bihar.

सर्वोत्तम बाल फ़िल्म

फोटो (हिंदी)

निर्माता भारतीय बाल चित्र समिति को स्वर्ण कमल और 1,50,000/-रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक वीरेन्द्र सीनी को स्वर्ण कमल और 1,50,000/-रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

....सिनेमा के इतिहास की उल्लेखनीय घटनाओं पर सुबोध ढंग से प्रकाश डालकर एक मेधावी बालक के सामने छवियों और ध्वनि का जादुई संसार उजागर करने लिए।

AWARD FOR BEST CHILDREN'S FILM

FOTO (Hindi)

Swarna Kamal and a cash prize of Rs 1,50,000 to PRODUCER CHILDREN'S FILM SOCIETY, INDIA

Swarna Kamal and a cash prize of Rs 1,50,000 to DIRECTOR VIRENDRA SAINI

CITATION

.....The award is given for unfolding a magic world of images and sound to a talented young child by highlighting the milestones of cinema history in a lucid manner.

भारतीय बाल चित्र समिति

भारतीय बाल चित्र समिति बच्चों के दृष्टिकोण को उदार बनाने और मनोरंजन के उनके अधिकार को सार्थक बनाने के उद्देश्य से फिल्मों तथा टेलीविजन के माध्यम से उन्हें स्वस्थ मनोरंजन प्रदान करने वाला भारत सरकार का प्रमुख संगठन है। इसकी स्थापना 1956 में हुई थी। समिति बाल फिल्मों का निर्माण, खरीद, वितरण, संवर्धन तथा प्रदर्शन से जुड़े दायित्व संभालती है। यह भारत तथा विदेशों में बाल फिल्म आंदोलन का प्रचार-प्रसार करती है। समिति की पहली ही फिल्म 'जलदीप' को 1957 में वीनस बाल फिल्म समारोह में प्रथम पुरस्कार मिला।

समिति ने केंदार शर्मा, सत्येन बोस, मोहन कौल, राजिन्द्र शर्मा जैसे कई प्रतिभाशाली एवं प्रतिबद्ध फिल्मकारों से बाल फिल्में बनवाईं। मृगाल सेन, श्याम बेनेगल, तपन सिन्हा, साई परांजपे आदि फिल्मकार भी समिति से जुड़े रहे हैं। समिति ने बच्चों की विशेष रुचि के विषयों पर लघु वृत्तचित्रों, कठपुतली फिल्मों तथा एक कार्टून फिल्म का भी निर्माण किया। समिति ने विदेशों से भी श्रेष्ठ बाल फिल्में प्राप्त की हैं। इन्हीं प्रयासों के फलस्वरूप बाल फिल्मों का विशाल संग्रहालय अगली पीढ़ी के लिए बन सका है।

वीरेंद्र सैनी

वीरेंद्र सैनी ने 1976 में भारतीय फिल्म एवं टेलीविजन संस्थान, पुणे से छायांकन में डिप्लोमा प्राप्त किया। वे भारत के नव सिनेमा आंदोलन से जुड़े रहे हैं। उन्होंने मणि कौल, सईद मिर्जा, साई परांजपे, कुंदन शाह, विनोद चोपड़ा, भीमसेन जैसे प्रयोगवादी फिल्मकारों के साथ काम किया है। 1990 में उन्हें *सलीम लंगड़े पर मत रो* फिल्म के लिए सर्वोत्तम छायांकन का राष्ट्रीय पुरस्कार मिला। बाबरी मस्जिद गिराए जाने के बाद बने उनका वृत्तचित्र *अयोध्या 1993* अनेक फिल्म समारोहों में दिखाया गया। निर्देशक के रूप में उनकी पहली फिल्म *कमी पास कमी फेल* को सर्वोत्तम बाल फिल्म का राष्ट्रीय पुरस्कार मिला।



CHILDREN'S FILM SOCIETY OF INDIA

CFSI, established in 1955, is a nodal Government of India organisation dedicated to providing wholesome entertainment for children through film and television. Engaged in production, acquisition, distribution, exhibition and promotion of children's films, CFSI's maiden production '*Jaldeep*', an adventure story centered around a lighthouse, went on to win the first prize at the 1957 Venice Film Festival for Children's Films.

Several talented and committed filmmakers, such as Kidar Sharma, Satyen Bose, Mohan Kaul and Rajindar Sharma were enthused to make films for children. stalwarts like Mrinal Sen, Shyam Benegal, Tapan Sinha, Sai Paranjpye also joined them.

VIRENDRA SAINI

Virendra Saini graduated from the Film and Television Institute of India with a diploma in cinematography in 1976. He has been closely associated with the New Cinema Movement in India, working for both feature films and full-length documentaries with several major directors including Mani Kaul, Saeed Mirza, Sai Paranjpye, Kundan Shah, Vinod Chopra, Bhimsain et al. In 1990 he won the National award for Best Cinematography for the film, *Salim Langde Pe Mat Ro*. His documentary *Ayodhya 1993*, which he made after the demolition of the Babri Masjid, was screened in several film festivals. His debut feature film as a director, *Kabhi Pass Kabhi Fail* won the National Award for Best Children's Film.

सर्वोत्तम कार्टून फिल्म

इनिमे नांगथान (तमिल)

निर्माता एस. श्रीदेवी को स्वर्ण कमल और 1,00,000/-रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक एस. वेंकी बाबू को स्वर्ण कमल और 1,00,000/-रुपये का नकद पुरस्कार

एनीमैटर एस. वेंकी बाबू को स्वर्ण कमल और 1,00,000/- रूपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

....ऐसे प्यारे पात्रों के चित्रण के लिए जो अपनी साहसिक और अजीबोगरीब हरकतों से तालच जैसी बुरी ताकतों का अभिनव ढंग से मुकाबला करते हैं। फिल्म में कार्टून कला को नई दिशा मिली है।

AWARD FOR THE BEST ANIMATION FILM

INIMEY NAANGATHAAN (Tamil)

Swarna Kamal and a cash prize of Rs 1,00,000 to PRODUCER S. SRIDEVI

Swarna Kamal and a cash prize of Rs 1,00,000 to DIRECTOR S. VENKY BABOO

Swarna Kamal and a cash prize of Rs 1,00,000 to ANIMATOR S. VENKY BABOO

CITATION

....for creating endearing characters who with their breath-taking quixotic antics battle the evil force of greed in a refreshingly new manner, for taking animation in a new direction

एस. श्रीदेवी

एस. श्रीदेवी ने 2004 में मायाबिम्बम मीडिया की स्थापना की जो भारत में मौलिक 3 डी एनीमेटेड आई पी एस के लिए जाना जाता है। मद्रास विश्वविद्यालय की वाणिज्य स्नातक श्रीमती श्रीदेवी को वित्त, लेखा और मानव संसाधन जैसे क्षेत्रों में काम करने का 12 वर्ष से अधिक का अनुभव है। उन्होंने 2004 में भारत में स्वदेशी टेक्नोलॉजी से तैयार किए गए पहले 3 डी एनीमेटेड लघुचित्र **पुलि राजा** (तमिल) का निर्माण किया। इस फिल्म से प्रोत्साहित होकर उन्होंने **इनिमे नांगथान** फिल्म का निर्माण किया, जिसे टोकियो ब्राडकास्टिंग सर्विस का सर्वोत्तम प्रयास का पुरस्कार मिला।



S. SRIDEVI

Mrs Sridevi co-founded Mayabimbham Media in 2004 which is recognised for its unique 3D animated original IPs in India. A commerce graduate from Madras University she has over 12 years of experience in areas like finance, accounts and HR. She produced India's first indigenously developed 3D animated short film, *Puli Raja* (Tamil) in 2004. It motivated her to produce *Inimay Naangathaana* which got her best effort prize by Tokyo Broadcasting Service.

एस. वेंकी बाबू

एस. वेंकी बाबू ने मद्रास विश्वविद्यालय से अंग्रेजी में स्नातक डिग्री प्राप्त की। उन्होंने अपना कैरियर एक व्यावसायिक चित्रकार के रूप में शुरू किया। वे दृश्य निर्देशक, कला निर्देशक तथा सृजन निर्देशक के रूप में काम कर चुके हैं। वे भारत की प्रथम 3 डी फिल्म **पुलि राजा** के रचनाकार हैं। **इनिमे नांगथान** के सभी विभागों—कहानी, संवाद, पटकथा के साथ—साथ सृजनात्मक, तकनीकी और एनीमेशन संबंधी पहलुओं में उनका योगदान रहा है।



S. VENKY BABOO

A graduate in English from Madras University, S. Venky Baboo started as a commercial artist and has worked as visualiser, art director and creative director. He pioneered India's first 3D short film, *Puli Raja*. He has looked into all aspects of *Inimay Naangathaana*—story, dialogue, screenplay as well as creative, technical and animation aspects.

सर्वोत्तम निर्देशन

अडूर गोपालकृष्णन को नालु पेन्नंगुल (मलयालम) के लिए

निर्देशक अडूर गोपालकृष्णन को स्वर्ण कमल और 2,50,000/-रूपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

.....परंपरागत समाज में लिंगभेद की समस्या को सूक्ष्म और संवेदनशील ढंग से प्रस्तुत करने के लिए। अलग-अलग वैवाहिक स्तर वाली चार महिलाएं अपने जीवन साथियों तथा परिवार की घोर उपेक्षा की शिकार होती हैं।

AWARD FOR BEST DIRECTION

ADOOR GOPALAKRISHNAN for NAALU PENNUNGAL (Malayalam)

Swarna Kamal and a cash prize of Rs 2,50,000 to DIRECTOR ADOOR GOPALAKRISHNAN

CITATION

..... for his delicate and subtle handling of gender issues in a conventional society. Four women of different marital status are trivialised and subjected to abject neglect by their immediate partners and family.

अडूर गोपालकृष्णन

अडूर गोपालकृष्णन का जन्म 1941 में कथकली नृत्य तथा अन्य कलाओं को समर्पित परिवार में हुआ। उन्होंने भारतीय फिल्म एवं टेलीविज़न संस्थान, पुणे में निर्देशन तथा पटकथा लेखन का अध्ययन किया। उन्होंने 11 फीचर फिल्मों तथा लगभग 30 लघु चित्रों का लेखन एवं निर्देशन किया है। उनकी पहली ही फिल्म *स्वयंवरम* को सर्वोत्तम फिल्म निर्देशन, छायांकन और अभिनेत्री के राष्ट्रीय पुरस्कार मिले। उनकी फिल्म *एलिप्यतयम* को 1992 की सर्वाधिक मौलिक एवं कल्पनाशील फिल्म का ब्रिटिश फिल्म इंस्टीच्यूट का पुरस्कार मिला। उन्हें 6 बार अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समीक्षक पुरस्कार मिल चुके हैं। उनकी फिल्मों के सिंहावलोकन वाशिंगटन के स्मिथसोनियन इंस्टीच्यूट, पेरिस के सिनेमाथेक और न्यूयार्क के पेसाराओ, लो रोशेले तथा लिंकन सेंटर में आयोजित किए जा चुके हैं। उन्हें 2004 में फ्रांस सरकार का सर्वोच्च संस्कृति सम्मान कमांडर आफ आर्ट एंड लेटर्स तथा 2005 में दादा साहब फालके पुरस्कार मिला। 2006 में उन्हें पद्म विभूषण से सम्मानित किया गया।



ADOOR GOPALAKRISHNAN

Born in 1941 in a family that patronised Kathakali and other performing arts, Adoor Gopalakrishnan studied screenplay-writing and direction at FTII, Pune. He has written and directed 11 feature and about 30 short films. His debut film *Swayamvaram* won the national awards for best film, direction, cinematography and actress. *Elippathayam* won British Film Institute's award for most original and imaginative film of 1992. The international film critics prize (FIPRESCI) has gone to him six times. His retrospectives have been held at Smithsonian Institute, Washington, Cinematheque in Paris, La Rochelle, Pesaro and Lincoln Centre, New York. He has received the French government's title, Commander of the Order of Arts and Letters in 2004 and **Dadasaheb Phalke**, the highest Indian award for lifetime achievement in films, in 2005. He has also been honoured with **Padma Vibhushan** for his contribution to the arts in 2006.

सर्वोत्तम अभिनेता

प्रकाश राज को कांचीवरम (तमिल) के लिए

अभिनेता प्रकाश राज को रजत कमल और 50,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

...नियति द्वारा बुने गए रेशमी धागों के जाल में उलझे हुए एक बुनकर के चरित्र की संवेदनशील एवं बहुआयामी प्रस्तुति के लिए।

AWARD FOR THE BEST ACTOR

PRAKASH RAJ for KANCHIVARAM (Tamil)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 50,000 to ACTOR PRAKASH RAJ

CITATION

....for his sensible, multi-layered portrayal of a weaver caught in a web of silken threads, woven by destiny.

प्रकाश राज

प्रकाश राज ने 10 वर्ष तक कन्नड़, रंगमंच के अभिनेता, लेखक और निर्देशक के रूप में काम किया। वे कन्नड़ टी.वी. धारावाहिकों के लेखक और अभिनेता बनने के बाद फिल्मों में आए। कन्नड़ में उनकी पहली बड़ी फिल्म *हराकायाकुई* को 1993 में सर्वोत्तम क्षेत्रीय फिल्म का राष्ट्रीय पुरस्कार मिला। महान निर्देशक के.बालचंदर ने उन्हें तमिल फिल्म *डुएट* में मौका दिया। तब से वे कन्नड़, तमिल, तेलुगु, मलयालम तथा हिंदी की लगभग 200 फिल्मों में अभिनय कर चुके हैं। 1998 में उन्हें मणिरत्नम की फिल्म *इरुवर* के लिए सर्वोत्तम अभिनेता का राष्ट्रीय पुरस्कार मिला। उन्हें अनेक राज्य पुरस्कार भी प्राप्त हुए हैं। 1998 में उन्होंने डुएट मूवीज़ नाम से अपनी अलग फिल्म निर्माण कंपनी शुरू की। इस समय वे *मायिलु* और *इनितु इनितु* फिल्में बना रहे हैं।



PRAKASH RAJ

Prakash Raj had been an actor, writer and director of Kannada amateur theatre for more than 10 years. He entered mainstream cinema after working his way up as an actor and writer of Kannada TV serials. His first major film in Kannada, *Harakayakrui* bagged the National Award for best regional film in 1993. Veteran director K Balachander introduced him in his Tamil film *Duet*. Since then he has acted in more than 200 films in Tamil, Telugu, Kannada, Malayalam and Hindi. He has won several national and state awards including the national award for best supporting actor for *Iruvar* (1998) directed by Mani Ratnam. He launched his own production house Duet Movies in 1998. His under production films include *Mayilu* and *Inithu Inithu*.

सर्वोत्तम अभिनेत्री

उमाश्री को गुलाबी टाकीज़ (कन्नड़) के लिए

अभिनेत्री उमाश्री को रजत कमल और 50,000/-रूपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

....अल्पसंख्यक वर्ग की एक ऐसी सताई हुई औरत की कारुणिक दशा के मार्मिक चित्रण के लिए जो अपने आस-पास के लोगों की उपेक्षा और तिरस्कार की शिकार है।

AWARD FOR BEST ACTRESS

UMASHREE for GULABI TALKIES (Kannada)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 50,000 to ACTRESS UMASHREE

CITATION

....for a heart-rending portrayal of the sorry plight of a wronged woman belonging to a minority community surrounded by an uncaring and hostile society.

उमाश्री

कन्नड़ सिनेमा की अनुभवी अभिनेत्री उमाश्री ने अपनी अभिनय यात्रा बी.वी. कारंत और गिरीश कर्नाड जैसे मंजे हुए नाटककारों के साथ शुरू की। वे 100 से अधिक फिल्मों में काम कर चुकी हैं और उन्हें 5 बार राज्य पुरस्कार मिले हैं। **गुलाबी टाकीज** के लिए वे ओसियान सिनेफैन में भी सर्वोत्तम अभिनेत्री का पुरस्कार ग्रहण कर चुकी हैं। वे ग्रामीण तथा उपेक्षित महिलाओं के कल्याण की कई सामाजिक गतिविधियों से भी जुड़ी हैं। उन्होंने कर्नाटक के गांवों में औरतों को पेश आने वाली समस्याओं पर कई नाटक भी खेले हैं। राज्य की विधान परिषद के सदस्य के रूप में भी वे कर्नाटक सरकार के सामने इन मुद्दों को उठाती रही हैं। इन दिनों वे कर्नाटक प्रदेश कांग्रेस कमेटी के पिछड़ा वर्ग विभाग की अध्यक्ष हैं।



UMASHREE

A veteran actress of Kannada cinema, Umashree started out in theatre with stalwarts like B.V. Karanth and Girish Karnad. She has acted in more than 100 films and won state award five times. She had earlier bagged the best actress award for *Gulabi Talkies* at Osian Cinefan. She is also involved in many social activities for upliftment of rural and suppressed women and has done many stage-plays highlighting the issues they face, in many interior villages of Karnataka. She also brought these issues to the notice of the Karnataka government as a sitting MLC. Currently she is the Chairman for Other Backward Class Department in Karnataka Pradesh Congress Committee.

सर्वोत्तम सह अभिनेता

दर्शन जरीवाला को गांधी, माई फादर (हिंदी और अंग्रेजी) के लिए

सह अभिनेता दर्शन जरीवाला को रजत कमल और 50,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

....एक महान ऐतिहासिक विभूति राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की चिंता के यथार्थ चित्रण के लिए जो अपने ही पुत्र के साथ रिश्ता निभाने में असफल रहते हैं।

AWARD FOR BEST SUPPORTING ACTOR

DARSHAN JARIWALA for GANDHI, MY FATHER (Hindi and English)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 50,000 to ACTOR DARSHAN JARIWALA

CITATION

....for truthfully portraying the angst of a great historical figure, Mahatma Gandhi, the Father of the Nation, who stands defeated in his personal relationship with his own son.

दर्शन जरीवाला

दर्शन जरीवाला गुजराती, अंग्रेजी तथा हिंदी रंगमंच के मजे हुए अभिनेता हैं। वे अब तक 50 से अधिक नाटकों में अभिनय कर चुके हैं। उन्होंने परेश रावल, केतन मेहता, विपुल शाह, नौशील मेहता, विक्रम कपाडिया, लिली दुबे और महाबानु मोदी कोतवाल जैसे अनुभवी नाटककारों के साथ काम किया है। उन्होंने फिरोज़ अब्बास खान के नाटक *महात्मा वर्सिस गांधी* में भी काम किया, जिस पर *गांधी, माई फादर* फिल्म आधारित है। उन्होंने विक्रम सेठ के नाटक *सुटेबल ब्वाय* के टीवी पर नाट्य रूपांतरण और संस्कृत नाटक *मृच्छकटिकम्* के रूपांतर में भी अभिनय किया। उन्होंने दो अंतर्राष्ट्रीय फिल्मों *लायन्स आफ पंजाब* तथा *कर्मा कालिंग* में भी अभिनय किया है।



DARSHAN JARIWALA

Darshan Jariwala is a veteran of Gujarati, English and Hindi stage. He has acted in about 50 plays so far and worked with noted directors like Paresh Rawal, Ketan Mehta, Vipul Shah and Naushil Mehta and Vikram Kapadia, Lillete Dubey and Mahabhanu Modi Kotwal. He won laurels for portraying Gandhi in Feroz Abbas Khan's *Mahatma vs Gandhi*, the play on which the film *Gandhi, My Father* is based. He featured in the BBC rendition of Vikram Seth's *Suitable Boy* and the English translation of the classic play *Mrichhikattikum*. He has acted in two international projects—*Loins of Punjab Presents* and *Karma Kalling*.

सर्वोत्तम सह अभिनेत्री

शेफाली शाह को दि लास्ट लीयर (अंग्रेजी) के लिए

सह अभिनेत्री शेफाली शाह को रजत कमल और 50,000/— रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

....एक बंगला गृहिणी के आक्रामक चित्रण के लिए। जो बूढ़े हो रहे अपने पति के सनकी अतिथियों के व्यवहार के प्रति समय बीतने के साथ अधिक सहनशील बन जाती है।

AWARD FOR THE BEST SUPPORTING ACTRESS

SHEFALI SHAH for THE LAST LEAR (English)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 50,000 to ACTRESS SHEFALI SHAH

CITATION

....for her aggressive portrayal of a Bengali housewife who in time becomes more tolerant of her aging husband's many eccentric guests.

शेफाली शाह

शेफाली शाह की अभिनय यात्रा टी वी धारावाहिकों से शुरू हुई। *बनेगी अपनी बात*, *कैंपस* और *हसरते* जैसे धारावाहिकों में उनका काम काफी सराहा गया। *अंताक्षरी* जैसे टी वी शो के संचालन के कारण उन्हें बहुत शौहरत मिली। रामगोपाल वर्मा ने उन्हें अपनी फिल्म *सत्या* में महत्वपूर्ण भूमिका दी जिसके लिए शेफाली को फिल्म फेयर समीक्षक पुरस्कार तथा स्क्रीन का सर्वोत्तम सह अभिनेत्री पुरस्कार मिला। मीरा नायर की *मानसून वैडिंग* में शोषण की शिकार लड़की की भूमिका निभाने के लिए वे चर्चा में रहीं। उनकी उल्लेखनीय फिल्में हैं : *वक्त*, *15 पार्क एवेन्यु* तथा *ब्लैक एंड व्हाइट*।



SHEFALI SHAH

Shefali Shah started off on TV and has won acclaim for several soaps and serials, like *Banegi Apni Baat*, *Campus* and *Hasratein*. Hosting TV shows like *Antakshari* made her a household name. Filmmaker Ram Gopal Verma cast her in an important role in *Satya* which fetched her Filmfare critics award and Screen Best Supporting Actress award. She again caught the eye of the audience as the much abused girl in Mira Nair's *Monsoon Wedding*. Her notable films include *Waqt*, *15 Park Avenue* and *Black and White*.

सर्वोत्तम बाल कलाकार

शरद गोएकर को टिंग्या (मराठी) के लिए

बाल कलाकार शरद गोएकर को रजत कमल और 50,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

....एक बैल के प्रति प्रेम को अपने जीवन की प्रेरक शक्ति मानने वाले बालक टिंग्या के चरित्र को निभाते हुए दयालुता से लेकर क्रोधपूर्ण विरोध तक के विविध भावों की अत्यंत सहज अभिव्यक्ति के लिए।

THE AWARD FOR BEST CHILD ACTOR

SHARAD GOEKAR for TINGYA (Marathi)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 50,000 to CHILD ACTOR SHARAD GOEKAR

CITATION

....for covering a range—from tenderness to angry defiance with consummate ease—while portraying Tingya, a boy whose love for his ox is the driving force of his young life.

शरद गोएकर

शरद गोएकर का जन्म और लालन-पालन पुणे से 100 किलोमीटर दूर राजुरी गांव में हुआ। एक खानाबदोश जनजाति का उनका परिवार राजुरी से करीब 4 कि.मी. दूर 35 कच्चे घरों की एक बस्ती में रहता है। उनके घर में 3 घोड़े, 150 भेड़-बकरियां और कुछ मुर्गियां हैं। शरद इस समय शहर के बाहरी इलाके वडगांव-बुद्रुक के सिंहगढ़, रिप्रगडेल्लस रेजीडेंशियल पब्लिक स्कूल में पढ़ रहा है। उसकी आदिवासी पृष्ठभूमि को देखते हुए अंग्रेजी माध्यम वाले इस स्कूल में उसकी प्रगति अच्छी रही है। उसने पांचवी कक्षा में 70 प्रतिशत अंक प्राप्त किए। छठी कक्षा में शरद ने संस्कृत में प्रथम स्थान प्राप्त किया।



SHARAD GOEKAR

Sharad Goekar was born and brought up in Rajuri village, around 100 km from Pune. Hailing from a nomadic gypsy tribe, the Goekar family lives in a hamlet of around 30-35 shanties, nearly four kilometres from Rajuri, along with their three horses, around 150 goats and sheep and a few hens. Sharad is currently studying in The Sinhgad Springdale Residential Public School at Wadgaon-Budruk, on the outskirts of the city. He did remarkably well in the English medium school, given his background. For a child who didn't know the English alphabet, he ended up scoring 70 percent in Class 5, this year (in Class 6), he topped the school in Sanskrit.

सर्वोत्तम पार्श्व गायक

शंकर महादेवन को तारे ज़मी पर (हिंदी) के लिए

पार्श्व गायक शंकर महादेवन को रजत कमल और 50,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

.....मानवीय द्वंद को अभिव्यक्त करने वाले हृदयस्पर्शी विषय गीत की करुणामयी प्रस्तुति के लिए।

AWARD FOR THE BEST MALE PLAYBACK SINGER

SHANKAR MAHADEVAN for TAARE ZAMEEN PAR (Hindi)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 50,000 to SINGER **SHANKAR MAHADEVAN**

CITATION

.....for the plaintive rendition of that soulful theme song that touches the heart in an absorbing human dilemma.

शंकर महादेवन

शंकर महादेवन कम्प्यूटर इंजीनियर हैं और उन्होंने ओरेकल कंपनी में काम किया। शास्त्रीय गायन में प्रशिक्षित शंकर 5 वर्ष की उम्र में ही सरस्वती वीणा बजाने लगे और 9 वर्ष की उम्र से उन्होंने शास्त्रीय संगीत के कार्यक्रम देना शुरू कर दिया। 11 वर्ष की आयु में उन्होंने लता मंगेशकर तथा भीमसेन जोशी के एलबम के लिए वीणा बजाई। उन्होंने अनेक विज्ञापन फिल्मों में अपनी आवाज दी है और एहसान तथा लाय के साथ मिलकर लोकप्रिय संगीत निर्देशक तिगडी बनाई है। इस तिगडी को *कल हो न हो* फिल्म के लिए सर्वोत्तम संगीत का राष्ट्रीय पुरस्कार मिला। शंकर ने हिंदी, मराठी, तमिल, तेलुगु, कन्नड़, मलयालम, गुजराती, पंजाबी जैसी भाषाओं में गीत गाए हैं। उन्हें तमिल फिल्म *कंडुकोडीन कंडुकोडीन* के लिए सर्वोत्तम पार्श्व गायक का राष्ट्रीय पुरस्कार मिला।



SHANKAR MAHADEVAN

An engineer in computer science Shankar Mahadevan has worked for Oracle. Trained as a classical vocalist Shankar learnt to play the sarswati veena from the age of 5 and began performing classical music since he was 9. He played veena for Lata Mangeshkar and Bhimsen Joshi's album when he was just 11. He has sung for several ad films and teamed up with Ehsaan and Loy to form the popular music director trio. They won national award for best music for *Kal Ho Naa Ho*. He has sung songs in various languages like Hindi, Marathi, Tamil, Telugu, Kannada, Malayalam, Gujarati and Punjabi. He won the national award for best singer for the Tamil film, *Kandukondein Kandukondein*.

सर्वोत्तम पार्श्व गायिका

श्रेया घोषाल को जब वी मेट (हिंदी) के लिए

पार्श्व गायिका श्रेया घोषाल को रजत कमल और 50,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

.....कर्णप्रिय सुमधुर आवाज और स्वर संगति की श्रेष्ठता के लिए। उनके गायन में प्रकृति का सौंदर्य अपनी सूक्ष्म अभिव्यक्तियों के साथ सजीव हो उठता है।

AWARD FOR THE BEST FEMALE PLAYBACK SINGER

SHREYA GHOSHAL for JAB WE MET (Hindi)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 50,000 to SINGER SHREYA GHOSHAL

CITATION

.....for her mellifluous voice and rich tonal quality. Her rendition evokes the beauty of nature through its subtle nuances.

श्रेया घोषाल

12 मार्च 1984 को जन्मी श्रेया घोषाल ने 4 वर्ष की उम्र से ही संगीत, विशेषकर बांगला गीत सीखना शुरू कर दिया। 6 वर्ष की उम्र में वे हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत में औपचारिक प्रशिक्षण लेने लगीं। जनवरी 1995 में उन्होंने दिल्ली में अखिल भारतीय सुगम संगीत प्रतियोगिता में पुरस्कार जीता। श्रेया ने सा-रे-गा-मा कार्यक्रम की बाल विशेष श्रृंखला में पहला स्थान प्राप्त किया। मार्च 1999 में निर्देशक संजय लीला भंसाली और संगीत निर्देशक इस्माइल दरबार ने उनसे *देवदास* में गीत गवाया, जो श्रेया की पहली फिल्म थी। तब से वे लगातार गा रही हैं और कई संगीत निर्देशकों के साथ काम कर चुकी हैं। श्रेया हिंदी के अलावा तमिल, तेलुगु, कन्नड़, बंगला, नेपाली, भोजपुरी, असमिया, उडिया भाषाओं में भी गा चुकी हैं। उनके कई गीत हिट रहे हैं और पुरस्कृत हुए हैं।



SHREYA GHOSHAL

Born on March 12, 1984, Shreya Ghoshal started learning music, mainly Bengali songs, at the age of 4. At the age of 6, she started getting formal training in Hindustani Classical music. Later, in January 1995 she won the All India Light Vocal music competition in Delhi. She won the children's special of **Sa Re Ga Ma**. In March 1999 director Sanjay Leela Bhansali and music director Ismail Darbar picked her up for playback singing in *Devdas*, her debut film. Since then she has been working continuously and recorded with several music directors. She has rendered songs, not just in Hindi but also in Tamil, Telegu, Kannada, Bengali, Nepali, Bhojpuri, Assamese, Oriya and has many hits and awards to her credit.

सर्वोत्तम छायांकन

शंकर रामन को फ्रोजन (हिंदी) के लिए

छायाकार शंकर रामन को रजत कमल और 50,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

फिल्म प्रोसेसिंग लैबोरेटरी प्रसाद फिल्म लैबोरेटरीज लि., मुंबई को रजत कमल और 50,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

....संरचना की उच्च कोटि बनाए रखते हुए रंग विन्यास तथा स्थूल रचनाओं की सुंदर पुनर्प्रस्तुति के माध्यम से छायांकन की कलात्मक एवं तकनीकी श्रेष्ठता प्राप्त करने के लिए।

AWARD FOR BEST CINEMATOGRAPHY

SHANKER RAMAN for FROZEN (Hindi)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 50,000 to CAMERAMAN SHANKER RAMAN

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 50,000 to the PRASAD FILM LABORATORIES LTD., MUMBAI

CITATION

....for the artistic and technical excellence of cinematography revealed through superb reproduction of tonalities and accurate compositions, maintaining the texture on high altitudes.

शंकर रामन

भारतीय फिल्म एवं टेलीविज़न संस्थान, पुणे से चलचित्र छायांकन में स्नातकोत्तर डिप्लोमा प्राप्त करने वाले शंकर रामन को फिल्मों तथा टेलीविज़न, संगीत वीडियो, विज्ञापनों तथा वृत्तचित्रों में छायांकन करने का 14 वर्षों का अनुभव है। उनकी उपलब्धियों में बीबीसी वर्ल्ड के लिए *अर्थ फाइल*, *रीयल इंडिया ट्रैवल शो* तथा *व्हील्स*, स्टार टी.वी के लिए *दि ग्रेट एस्केप* और *लिविंग आन दि ऐज*, कविता जोशी और मालती राव की फिल्म *सग रुटस यो अपवार्ड्स* तथा फंडामेंटल फिल्मस और व्हाइट फेडर फिल्मस की कृति *ग्रेट इंडियन बटरफ्लाई* शामिल हैं। फ़ोर्जन के लिए उन्हें डर्बन अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह में भी सर्वोत्तम छायांकन का पुरस्कार मिला।

प्रसाद फिल्म लैबोरेटरीज, मुंबई

प्रसाद फिल्म लैबोरेटरीज में चलचित्र उद्योग के लिए समन्वित लैब सुविधाएं उपलब्ध हैं। इनमें उच्च कोटि की निगेटिव प्रोसेसिंग, इंटर पोजिटिव, ड्यूप निगेटिव, डेलीज, आंसर प्रिंट, रिलीज प्रिंट, 16 एम.एम से 35 एम.एम बलो अप प्रिंट, एनामोर्फिक से लैट तथा लैट से एनामोर्फिक कन्वर्शन तथा सुपर 16 एम.एम प्रोसेसिंग और प्रिंट, सुपर 35 एम.एम से एनामोर्फिक कन्वर्शन सेवा, साउंड सर्विस, टेलीसिने फिल्म संपादन, निगेटिव कटिंग, स्पेशल इफेक्ट, ऑप्टिकल साउंड ट्रांसफर तथा स्क्रीनिंग रूम सुविधाएं उपलब्ध हैं। प्रसाद फिल्म लैबोरेटरीज की प्रयोगशालाएं चेन्नई, हैदराबाद, मुंबई, बंगलौर, भुवनेश्वर और तिरुवनंतपुरम में काम कर रही हैं।



SHANKER RAMAN

A post graduate in motion picture photography from the FTII, Pune, Shanker Raman has 14 years of experience in film and TV, music videos, commercials and documentaries. His work includes *Earth File*, *The Real India Travel Show* and *Wheels for BBC World*, *The Great Escape* and *Living On The Edge* for Star TV, Kavita Joshi and Malati Rao's *Some Roots Grow Upwards* and Fundamental Films and White Feather Films' *The Great Indian Butterfly*. *Frozen* got him best cinematographer award at the Durban International Film Festival.

PRASAD FILM LABORATORIES LTD, Mumbai

Prasad Film Laboratories, a pioneer providing intergrated laboratory services to the motion picture industry offers a wide range of film services including high quality negative processing, Interpositives, Dupe negatives, Dailies, Answer prints, Release prints, 16mm to 35mm blowup printing, 35mm to 16mm reduction printing, Sound services, Telecine, Film editing, Special effects, Optical sound transfer and Screening rooms. Prasad Film Laboratories have units in Chennai, Hyderabad, Mumbai, Bangalore, Bhubaneswar and Thiruvananthapuram.

सर्वोत्तम पटकथा

फ़िरोज़ अब्बास खान को गांधी, माई फादर (हिंदी और अंग्रेजी) के लिए

पटकथा लेखक फ़िरोज़ अब्बास खान को रजत कमल और 50,000/-रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

.....राष्ट्रपिता के जीवन के हठी और कठोर पक्ष, विशेष रूप से अपने विद्रोही बेटे के साथ रिश्ते के संदर्भ को नई दृष्टि एवं भावात्मक ढंग से प्रस्तुत करने के लिए।

AWARD FOR BEST SCREENPLAY

FEROZ ABBAS KHAN for GANDHI, MY FATHER (Hindi and English)

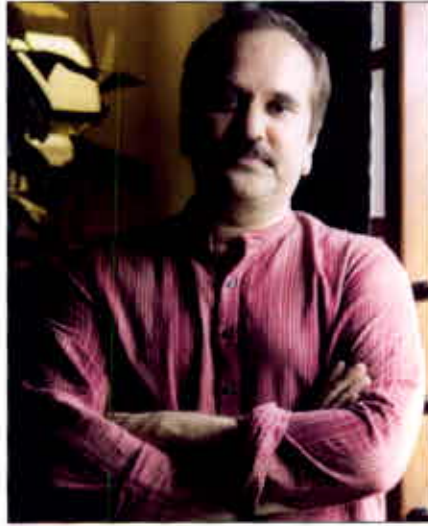
Rajat Kamal and a cash prize of Rs 50,000 to WRITER FEROZ ABBAS KHAN

CITATION

.....The award is given for the imaginative and emotional handling of uncompromisingly steadfast side of the father of the Nation with special reference to his relationship with his troubled son.

फिरोज़ अब्बास खान

भारतीय नाटक जगत में फिरोज़ अब्बास खान एक जाना-पहचाना नाम है। उनके नाटक देश-विदेश में खेले जाते हैं। उनके नाटक न केवल लोकप्रिय रहे हैं बल्कि गुणवत्ता की दृष्टि से भी सराहे गए हैं। उनकी महत्वपूर्ण नाट्य कृतियों में *तुम्हारी अमृता*, *सालगिरह*, *महात्मा वर्सिस गांधी* और *सेल्समैन रामलाल* विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। उनके नाटकों में नसीरुद्दीन शाह, शबाना आजमी, अनुपम और किरण खेर, फारूख शेख, के.के.मेनन जैसे नामी कलाकारों ने काम किया है। प्रतिष्ठित पृथ्वी थिएटर के पहले मानद निदेशक के रूप में उन्होंने स्वर्गीय जेनिफर कपूर के साथ मिलकर अन्तर्राष्ट्रीय पृथ्वी थिएटर समारोह का सफल आयोजन किया। *गांधी, माई फादर फिल्म* को हार्वर्ड विश्वविद्यालय में सराहना मिली और एशिया पैसिफिक स्क्रीन अवार्ड में इसे सर्वोत्तम पटकथा का पुरस्कार मिला। नोबेल पुरस्कार से सम्मानित नैदीन गोर्डिमेर ने इसे ऐतिहासिक और युगांतरकारी फिल्म बताया है।



FEROZ ABBAS KHAN

A leading name in Indian theatre, his productions have travelled extensively in India and abroad. They have been staged to packed audiences and fetched him critical acclaim. His significant productions include *Tumhari Amrita*, *Saalgirah*, *Mahatma v/s Gandhi* and *Salesman Ramlal*. He has worked with some of the finest actors—Naseeruddin Shah, Shabana Azmi, Anupam and Kirron Kher, Farooque Sheikh, Kay Kay Menon to name just a few. As the first honorary director of the prestigious Prithvi Theatre, Feroz, alongwith late Jennifer Kapoor, spearheaded the International Prithvi Theatre Festival. *Gandhi, My Father* was felicitated by Harvard University and won him the best screenplay award at the Asia Pacific Screen Awards. Nobel Laureate Nadine Gordimer called it a landmark and groundbreaking film.

सर्वोत्तम ध्वनि आलेखन

कुणाल शर्मा को 1971 (हिंदी) के लिए

ध्वनि आलेखक कुणाल शर्मा को रजतकमल और 50,000/-रूपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

....हमारे पड़ोसी देशों के साथ रिश्तों की खटास और युद्ध के समय की मनोदशा तथा तनाव को उजागर करने के लिए।

AWARD FOR BEST AUDIOGRAPHY

KUNAL SHARMA for 1971 (Hindi)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 50,000 to SOUND DESIGNER KUNAL SHARMA

CITATION

....for capturing the mood and tension of that war-torn period which marked the climax of the deteriorating ties with our neighbours.

कुणाल शर्मा

कुणाल शर्मा ने करीब एक दशक पहले ध्वनि आलेखन, साउंड डिज़ाइन और ध्वनि संपादन के क्षेत्र में प्रवेश किया। उनकी महत्वपूर्ण फिल्मों में *देवदास*, *खाकी*, *ब्लैक फ्राइडे*, *नो स्मोकिंग* और *गुलाल* शामिल हैं।



KUNAL SHARMA

Kunal Sharma has had about a decade long stint in cinema in sound editing, sound design and audiography. His significant films include *Devdas*, *Khakee*, *Black Friday*, *No Smoking* and *Gulaal*.

सर्वोत्तम संपादन

बी. अजित कुमार को नालु पेन्नुंगल (मलयालम) के लिए

संपादक बी. अजित कुमार को रजत कमल और 50,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

.....चार अलग-अलग कहानियों को एक इकाई के रूप में समान गति से प्रस्तुत करने के लिए।

AWARD FOR BEST EDITING

B. AJITH KUMAR for NAALU PENNUNGAL (Malayalam)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 50,000 to EDITOR B. AJITH KUMAR

CITATION

.....for presenting at a uniform pace four different stories which unfold as a single entity.

बी. अजित कुमार

बी. अजित कुमार ने भारतीय फिल्म एवं टेलीविजन संस्थान, पुणे से संपादन में विशेषज्ञता के साथ सिनेमा में डिप्लोमा प्राप्त किया है। वे स्वतंत्र रूप से फिल्म एवं वीडियो संपादक तथा वृत्तचित्र निर्माता के रूप में काम करते रहे हैं। उन्होंने 25 मलयालम तथा दो हिंदी फिल्मों का संपादन किया है, जिन्हें राष्ट्रीय तथा राज्य पुरस्कार मिले हैं। उन्होंने विज्ञापनों तथा संगीत वीडियो के संपादन के साथ-साथ 25 वीडियो वृत्तचित्रों का संपादन किया है। उन्हें गैर-कथाचित्र वर्ग में दो बार सर्वोत्तम संपादन का राष्ट्रीय पुरस्कार मिल चुका है। कथाचित्रों *निडलक्कुतु* तथा *भवम* के लिए उन्हें सर्वोत्तम संपादन का केरल राज्य पुरस्कार दिया गया।



B. AJITH KUMAR

B. Ajith Kumar has a diploma in cinema from FTII, Pune, with specialisation in editing. He has been working as freelance film and video editor and documentary filmmaker. He has edited about 25 Malayalam and two Hindi films that have won many national and state awards. He has edited 25 video documentaries and also edited commercials and music videos. He has won the national award for best editing in non-features category twice. He has won the Kerala state award for best editor for his feature films *Nizhalkkuthu* and *Bhavam*.

सर्वोत्तम कला निर्देशन

साबु सिरिल को ओम शांति ओम (हिंदी) के लिए

कला निर्देशक साबु सिरिल को रजत कमल और 50,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

.....1970 के दशक की फिल्मों की प्रामाणिक स्थितियों के सृजन और एक पीढ़ी के बाद जीर्ण-शीर्ण अवस्था में उनके पुनर्सृजन के लिए।

AWARD FOR BEST ART DIRECTION

SABU CYRIL for OM SHANTI OM (Hindi)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 50,000 to ART DIRECTOR SABU CYRIL.

CITATION

.....for creating authentic film settings of 1970s and recreating them in a dilapidated condition a generation later.

साबु सिरिल

साबु सिरिल ने मद्रास स्कूल आफ आर्ट्स एण्ड क्राफ्ट्स से स्नातक की डिग्री प्राप्त की। उन्होंने अपने कैरियर की शुरुआत ग्राफिक्स डिजाइनर के रूप में की। 1988 से वे कला निर्देशक के रूप में काम कर रहे हैं और उन्होंने अब तक 480 विज्ञापनों, 3 टी वी धारावाहिकों और हिंदी, मलयालम, तमिल, कन्नड़ और तेलुगु के लगभग 90 वृत्तचित्रों के लिए कला निर्देशन किया है। 1996 में उन्होंने विश्व सुंदरी प्रतियोगिता के लिए स्टेज डिजाइनिंग की। वे दो मलयालम फिल्मों *तेनमाविन कोंबातु* और *कालापानी* के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार के अलावा बहुत से फिल्मफेयर और राज्य पुरस्कार प्राप्त कर चुके हैं।



SABU CYRIL

A graduate of Madras School of Arts and Crafts he started off as a freelance graphics designer. He started his career as art director in 1988 and has since worked in 480 ads, 3 TV serials and about 90 feature films in Hindi, Malayalam, Kannada, Tamil and Telugu. In 1996 he did the stage design for the Miss World beauty pageant. He has won many Filmfare and state awards besides two national awards, for *Thenmavin Kombathu* and *Kalapani*, both in Malayalam.

सर्वोत्तम वेशभूषाकार

रूमा सेनगुप्ता को कृष्णाकांतेर विल (बंगला) के लिए

वेशभूषाकार रूमा सेनगुप्ता को रजत कमल और 50,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

...उस रंगीन दरबारी जीवन और भड़कीले वस्त्रों के प्रचलन के ऐतिहासिक युग के चरित्रों की यथार्थ प्रस्तुति के लिए।

AWARD FOR BEST COSTUME DESIGNER

RUMA SENGUPTA for KRISHNAKANTER WILL (Bengali)

Rajat Kamal and a cash prize of 50,000 to COSTUME DESIGNER RUMA SENGUPTA

CITATION

....for creating realistic characters during that historic period when life was dominated by lavish costumes and colourful court life.

रूमा सेनगुप्ता

रूमा सेनगुप्ता ने 1997 में फिल्मों तथा टेलीविज़न में वेशभूषाकार के रूप में काम करना शुरू किया। इससे पहले 1980 तथा 1980 के दशकों में उन्होंने मॉडलिंग की। इस समय वे रियल्टी शो तैयार करने वाली एक टेलीविज़न निर्माण कंपनी में कार्यक्रम अधिकारी तथा वेशभूषाकार के रूप में काम कर रही हैं।



RUMA SENGUPTA

Ruma Sengupta was a professional model in the 80's and 90's, before she took up Costume Designing from 1997 in films & television. Presently she is working as a programming executive & costume designer in a television production house, engaged in Reality shows.

सर्वोत्तम मेक-अप कलाकार

पट्टनम रशीद को परदेसी (मलयालम) के लिए

मेकअप कलाकार पट्टनम रशीद को रजत कमल और 50,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

.....मुख्य पात्र के चरित्र को मेक-अप के जरिए सजीव करने की तकनीकी श्रेष्ठता के लिए।

AWARD FOR BEST MAKEUP ARTIST

PATTANAM RASHEED for PARADESI (Malayalam)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 50,000 to MAKEUP ARTIST PATTANAM RASHEED

CITATION

.....for technical excellence of detailing through makeup of the character of the protagonist.

पट्टणम रशीद

पट्टणम रशीद को फिल्मों, नाटकों तथा टेलीविज़न में काम करने का 25 साल का अनुभव है। उन्होंने हिंदी, तमिल, मलयालम और अरबी भाषा की 250 से अधिक फिल्मों के लिए शाजी एन. करुण, टी.वी. चंद्रन, सिबी मलाइल और जयराज जैसे नामी निर्देशकों के साथ काम किया है। उन्हें पांच राज्य तथा कई क्षेत्रीय पुरस्कार मिले हैं।



PATTANAM RASHEED

Pattanam Rasheed has 25 years experience in film, theatre and TV. He has done over 250 national and international films in Malayalam, Hindi, Tamil and Arabic with famous directors like Shaji N. Karun, T.V. Chandran, Sibi Malayil and Jayaraj. He has won five state awards and many other regional ones.

सर्वोत्तम संगीत निर्देशन

औसेपच्चन को ओरे कडल (मलयालम) के लिए

संगीत निर्देशक औसेपच्चन को रजत कमल और 50,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

....अनूठे प्रेम के विक्षोभ की उत्कटता को संगीत के माध्यम से उजागर करने के लिए।

AWARD FOR BEST MUSIC DIRECTION

OUSEPHACHAN for ORE KADAL (Malayalam)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 50,000 to MUSIC DIRECTOR OUSEPHACHAN

CITATION

....for achieving through music the poignancy of the turmoil of unconventional love.

औसेपच्चन

औसेपच्चन मलयालम फिल्म उद्योग के चहेते संगीत निर्देशकों में से एक हैं। अपनी औपचारिक शिक्षा पूरी करने तक वे एक कुशल वायलिन वादक बन चुके थे। उन्होंने अपनी संगीत यात्रा कुछ संगीत मंडलियों में वायलिन बजाने के साथ शुरू की। उन्होंने विख्यात पार्श्व गायिका माधुरी के संगीत कार्यक्रमों में संगीत निर्देशक परावूर देवराजन के साथ वायलिन वादन किया। इसके बाद वे चेन्नई चले गए जहां अधिकतर मलयालम फिल्मों के लिए रिकॉर्डिंग होती थी। संगीत निर्देशन का श्रीगणेश उन्होंने *एनम* फिल्म से किया, जिसमें उन्होंने पृष्ठभूमि संगीत दिया। पहली बार स्वतंत्र रूप से संगीत निर्देशन उन्होंने भरतन द्वारा निर्देशित फिल्म *कठोडु कथोरम* (1985) में किया। इस फिल्म में औसेपच्चन के काम की ओर लोगों का ध्यान गया और उनके तीन गीत सुपरहीट हो गए। इन गीतों में वायलिन का उपयोग भी लोगों को पसंद आया। इसका प्रमुख कारण यह था कि औसेपच्चन स्वयं वायलिन वादक हैं और मम्मूटि द्वारा अभिनीत किया गया मुख्य पात्र भी वायलिन वादक था। तब से वे लगभग 40 फिल्मों में संगीत दे चुके हैं। उन्होंने वी.के. प्रकाश द्वारा निर्देशित हिंदी फिल्म *फ्रीकी चक्र* का भी संगीत निर्देशन किया।



OUSEPHACHAN

He is one of the most sought after musicians in the Malayalam film industry. By the time he finished his formal education, he had also become an expert violinist. Later he got the chance to be the violinist in concerts of renowned playback singer Madhuri. Then he moved to Madras where most of the recording works of Malayalam films were done. He debuted in film industry with the film *Enam* for which he set the background score. He debuted as music director with *Kathodu Kathoram* (1985), directed by Bharathan. Ouseppachan's work was noted for the film and three songs from the film became superhits. These songs were noted also for the immense use of violin. This may be attributed to the facts that Ouseppachan himself is a violinist and that the protagonist of the film Mammooty also plays a violin. Ouseppachan then went on to compose music for over 40 films. He also scored music for the Hindi film *Freaky Chakra*, directed by V.K. Prakash.

सर्वोत्तम गीतकार

प्रसून जोशी को तारे ज़मीं पर (हिंदी) के लिए

गीतकार प्रसून जोशी को रजत कमल और 50,000/-रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

.....एक ऐसे परिवार की वेदना को अभिव्यक्त करने वाली भावपूर्ण कविता के लिए जो अपने बच्चे के असामान्य रोग से जूझ रहा है जिसे एक समझदार अध्यापक ठीक कर देता है।

AWARD FOR BEST LYRICS

PRASOON JOSHI for TAARE ZAMEEN PAR (Hindi)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 50,000 to LYRICIST PRASOON JOSHI

CITATION

.....for the soulful poetry that captures the trauma of a family beset with a rare problem of their little son who is happily saved by an understanding teacher.

प्रसून जोशी

प्रसून जोशी एक कुशल लेखक, गीतकार तथा विज्ञापन विशेषज्ञ हैं। गद्य और पद्य की उनकी तीन पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं और उन्होंने अपनी पहली पुस्तक 17 वर्ष की उम्र में प्रकाशित की। जिन अन्य कथाचित्रों में उन्होंने गीत लिखे हैं उनमें *फिर मिलेंगे*, *हम तुम*, *फना*, *रंग दे बसंती* और *दिल्ली-6* शामिल हैं। वे शुभा मुदगल तथा पंडित जाकिर हुसैन के साथ गैर-फिल्मी एलबम के लिए भी काम कर चुके हैं। वे मैक्कैन एरिक्सन इंडिया कंपनी के कार्यकारी अध्यक्ष तथा एशिया पैसिफिक क्षेत्र के लिए उसके क्षेत्रीय निदेशक हैं। वे विज्ञापन के क्षेत्र में युवाओं के आदर्श माने जाते हैं और विज्ञापन कला में भारत के बहु-सांस्कृतिक भावों के इस्तेमाल का द्वार खोलने का श्रेय उन्हीं को जाता है। वे 400 से अधिक पुरस्कार प्राप्त कर चुके हैं जिनमें कान्स गोल्ड लायन भी शामिल हैं। प्रसून जोशी ने पल्स पोलियो, धूम्रपान निषेध, महिला सशक्तिकरण, बालिका कल्याण तथा भारतीय पर्यटन जैसे मुद्दों पर सामाजिक संचार अभियानों में भी निष्ठापूर्वक योगदान दिया है।



PRASOON JOSHI

Prasoos Joshi is an accomplished writer, poet, song-writer and advertising professional. He has published three books of poetry and prose, the earliest to come out was when he was just 17. His feature films include *Phir Milenge*, *Hum Tum*, *Fanaa*, *Rang De Basanti*, *Taare Zameen Par* and *Delhi 6* that have fetched him several awards. He has worked on non film albums with Shubha Mudgal and Pt Zakir Hussain. He is the executive chairman of McCann Erickson India and regional director Asia Pacific. He is considered the torch-bearer for young ad professionals and noted for introducing Indian multi-cultural sensibility to advertising. He has more than 400 awards, including the Cannes Gold Lions. He has also passionately worked for social communication campaigns for Pulse Polio, anti-smoking, women empowerment, girl child and Indian tourism.

निर्णायक मंडल का विशेष पुरस्कार

गांधी, माई फादर (हिंदी और अंग्रेजी)

निर्माता अनिल कपूर को रजत कमल और 62,500/- रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक फिरोज अब्बास खान को रजत कमल और 62,500/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

....महात्मा गांधी के जीवन के एक अनजाने पहलू और अपने विद्रोही बेटे के साथ उनके अप्रिय संबंधों पर प्रभावशाली ढंग से प्रकाश डालने के लिए।

SPECIAL JURY AWARD

GANDHI, MY FATHER (HINDI and ENGLISH)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 62,500 to PRODUCER ANIL KAPOOR

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 62,500 to DIRECTOR FEROZ ABBAS KHAN

CITATION

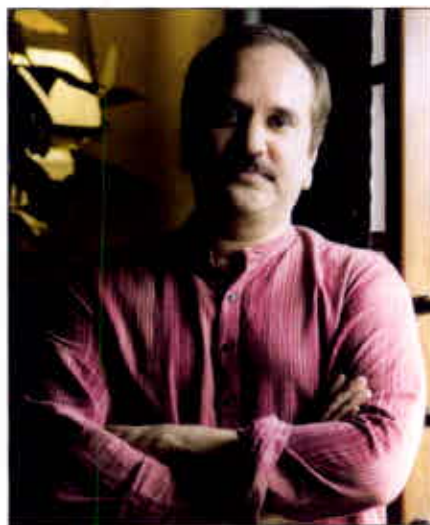
....for throwing light on a hidden aspect of the Father of the Nation and the story of his liaison with his difficult and rebellious son to whom he could never be a father.

अनिल कपूर

1983 में *वो सात दिन* फिल्म से अपने अभिनय जीवन की शुरुआत करने वाले अनिल कपूर पिछले 25 वर्षों से सिने दर्शकों का मनोरंजन कर रहे हैं। वे उन गिने-चुने लोगों में शामिल हैं, जो सबसे अधिक समय तक नायक के रूप में फिल्मों में लगातार आते रहे। वे अपने भाई बनी कपूर की फिल्मों में सहायक निर्माता तथा कलाकार निर्देशक के रूप में भी काम करते रहे। अनिल बहुमुखी प्रतिभा के धनी अभिनेता हैं, जिन्होंने हिंसा प्रधान, हास्य प्रधान, पारिवारिक और रोमांचकारी जैसी सब तरह की फिल्मों में सफलतापूर्वक अभिनय किया है। उनकी उल्लेखनीय फिल्मों में *शक्ति, बीवी नम्बर वन, साहिब, विरासत, राम लखन, कर्मा, तेजाब, मिस्टर इंडिया, लम्हे* आदि शामिल हैं। उन्हें कई बार फिल्मफेयर पुरस्कार मिले हैं। 2000 में अनिल कपूर को पुकार फिल्म के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार मिला। उन्होंने डैनी बोयले की अंतर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त फिल्म *स्लमडॉंग मिलियनेयर* में भी काम किया।

फिरोज अब्बास खान

भारतीय नाटक जगत में फिरोज अब्बास खान एक जाना-पहचाना नाम है। उनके नाटक देश-विदेश में खेले जाते हैं। उनके नाटक न केवल लोकप्रिय रहे हैं बल्कि गुणवत्ता की दृष्टि से भी सराहे गए हैं। उनकी महत्वपूर्ण नाट्य कृतियों में *तुम्हारी अमृता, सालगिरह, महात्मा वर्सिस गांधी* और *रोल्सगैरन रामलाल* विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। उनके नाटकों में नसीरुद्दीन शाह, शबाना आजमी, अनुपम और किरण खेर, फारूख शेख, के.के.मेनन जैसे नामी कलाकारों ने काम किया है। प्रतिष्ठित पृथ्वी थिएटर के पहले मानद निर्देशक के रूप में उन्होंने स्वर्गीय जेनिफर कपूर के साथ मिलकर अन्तर्राष्ट्रीय पृथ्वी थिएटर समारोह का सफल आयोजन किया। *गांधी, माई फादर* फिल्म को हार्वर्ड विश्वविद्यालय में सराहना मिली और एशिया पैसिफिक स्क्रीन अवार्ड में इसे सर्वोत्तम पटकथा का पुरस्कार मिला। नोबेल पुरस्कार से सम्मानित नैदीन गोर्डेयर ने इसे ऐतिहासिक और युगांतरकारी फिल्म बताया है।



ANIL KAPOOR

Since his debut in 1983 with *Woh Saat Din* Anil Kapoor has been entertaining Hindi film audiences for over 25 years. He has had one of the longest and most consistent careers as a leading man. He has also worked as assistant producer and casting director for the home productions of his brother Boney Kapoor. Anil is a versatile actor with varied memorable characters in a wide range of films, from action and comedies to family dramas and thrillers. His well-known films include *Shakti, Biwi No. 1, Sahib, Virasat, Ram Laxhan, Karma, Tezaab, Mr India, Lamhe* etc. He has won Filmfare several times and won the national award for best actor for *Pukar* in 2000. He starred in a leading role in Danny Boyle's internationally acclaimed *Slumdog Millionaire*.

FEROZ ABBAS KHAN

A leading name in Indian theatre, his productions have travelled extensively in India and abroad. His significant productions include *Tumhari Amrita, Saalgirah, Mahatma v/s Gandhi* and *Salesman Ramlal*. He has worked with some of the finest actors—Naseeruddin Shah, Shabana Azmi, Anupam and Kirron Kher, Farooque Sheikh, Kay Kay Menon to name just a few. As the first honorary director of the prestigious Prithvi Theatre, Feroz, along with late Jennifer Kapoor, spearheaded the International Prithvi Theatre Festival.

सर्वोत्तम विशेष प्रभाव

इंडियन आर्टिस्ट्स कम्प्यूटर ग्राफिक्स लि., चेन्नई को शिवाजी (तमिल) के लिए

इंडियन आर्टिस्ट्स कम्प्यूटर ग्राफिक्स लि., चेन्नई को रजत कमल और 50,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

.....वास्तविकता का बोध कराने वाले रंगविन्यास तथा संरचनाओं के संयोजन का अनूठा प्रयास करने के लिए। कम्प्यूटर ग्राफिक्स के कष्टसाध्य प्रयासों से त्वचा के काले रंग को गोरे रंग में बदलने का काम बहुत ही प्रामाणिक ढंग से किया गया है।

AWARD FOR BEST SPECIAL EFFECTS

INDIAN ARTISTS COMPUTER GRAPHICS LTD, CHENNAI for SIVAJI (Tamil)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 50,000 to **INDIAN ARTISTS COMPUTER GRAPHICS LTD, CHENNAI**

CITATION

.....for the pioneering effort in the rendering of tones and textures that assume realistic proportions. Turning dark skin tone to fair skin by painstaking computer graphics work is most convincing.

इंडियन आर्टिस्ट्स कंप्यूटर ग्राफिक्स प्रा. लि., चेन्नई

इस कंपनी ने 1989 में विज्ञापन फिल्मों तथा कॉर्पोरेट फिल्मों से अपना काम शुरू किया और बाद में फिल्म उद्योग में प्रवेश किया। अपने पहले कथाचित्र *इंडियन* (निर्देशक एस.रामन) के बाद कंपनी ने *रामना* (निर्देशक मुरुगदास), *धूल*, *चिल्ली* और *कुरुवीर* निर्देशक धरनी), *ब्वायज़*, *अन्नियन* और *शिवाजी* (निर्देशक एस. शंकर) जैसी फीचर फिल्मों के लिए काम किया। 2002 में स्टीरियो स्कोपिक फिल्म *मैजिक* (3 डी) में कंपनी को अपने वीएफएक्स काम के लिए सर्वोत्तम विशेष प्रभाव का राष्ट्रीय पुरस्कार मिला। कंपनी ने तेलुगु तथा मुलयालम फिल्म उद्योगों को भी अपनी सेवाएं दी हैं। इन दिनों कंपनी एस.शंकर द्वारा निर्देशित फिल्म *एंथिरन* के लिए काम कर रही है जिसकी मुख्य भूमिकाओं में रजनीकांत और ऐश्वर्य राय हैं।



INDIAN ARTISTS
Computer Graphics Pvt. Ltd.,

INDIAN ARTISTS COMPUTER GRAPHICS PVT LTD, CHENNAI

INDIAN ARTISTS COMPUTER GRAPHICS PVT LTD started out in 1989 with ad films and Corporate films and subsequently moved to the Film industry. From their first film *Indian* (Director S Shankar), INDIAN ARTISTS COMPUTER GRAPHICS PVT LTD worked in feature films like *Ramana* (Director Murugadoss), *Dhool*, *Ghilli* and *Kuruvi* (Director Dharani), *Boys*, *Anniyan* and *Sivaji* (Director S Shankar). In 2002 their VFX work in Stereoscopic film *Magic Magic* (3D) won them National Award for Best Special effects. It also has contributed to the vision and dreams of the Directors in Telugu and Malayalam film industries. Their current venture with Rajnikanth and Aishwarya Rai, directed by S Shankar, is *Enthiran*. Their mission statement : To be on par with Hollywood and bring up Indian Cinema VFX standard to the International level.

सर्वोत्तम नृत्य निर्देशन

सरोज खान को जब वी मेट (हिंदी) के लिए

नृत्य निर्देशक सरोज खान को रजत कमल और 50,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

.....पर्वतीय पृष्ठभूमि में एक मधुर पहाड़ी लोक गीत की जीवंत प्रस्तुति के लिए।

AWARD FOR BEST CHOREOGRAPHY

SAROJ KHAN for JAB WE MET (Hindi)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 50,000 to CHOREOGRAPHER SAROJ KHAN

CITATION

.....for the lively depiction of a hill song against a mountainous backdrop.

सरोज खान

सरोज खान ने बाल नृत्यांगना के रूप में 3 वर्ष की उम्र में नृत्य के क्षेत्र में पदार्पण किया और 10 वर्ष की होने तक वह समूह नर्तकी बन चुकी थी। उनके शिक्षक बी. सोहनलाल ने उन्हें अपनी सहायक बना लिया। नृत्य निर्देशक के रूप में उनकी पहली फिल्म *गीता मेरा नाम* थी, जिसमें साधना और सुनील दत्त मुख्य भूमिका में थे। *तेजाब* के नृत्यगीत एक, दो, तीन से उन्हें खूब ख्याति मिली, जिसके लिए उन्हें फिल्मफेयर पुरस्कार भी मिला। उसके बाद के दो वर्षों में भी उन्हें *चालबाज़* तथा *सैलाब* के लिए फिल्मफेयर अवार्ड मिले। उन्होंने बड़ी संख्या में फिल्मफेयर, स्क्रीन और जी. सिने पुरस्कार प्राप्त किए हैं। *देवदास* में उनके नृत्यगीत *डोला रे डोला* को विभिन्न सिने संस्थाओं से 17 पुरस्कार प्राप्त हुए। वे *नच बलिये*, *झलक दिखला जा* और *बूगी वूगी टी वी* रियलिटी नृत्य कार्यक्रमों में भाग ले चुकी हैं। चार दशकों से बालीवुड पर राज करने के साथ-साथ वे नृत्य की शिक्षा देने के लिए सरोज खान डांस अकादेमी भी चलाती हैं।



SAROJ KHAN

Saroj Khan started off as a child artist at the age of three and became a group dancer at 10. Her teacher B. Sohanlal trained her as his assistant. She got her break as a choreographer in R.K. Nayar's *Geeta Mera Naam* starring Sadhna and Sunil Dutt. She became a household name with *Ek Do Teen* in *Tezaab* which also fetched her Filmfare award. She struck a hat-trick at Filmfare fetching awards in the following years for *Chalbaaz* and *Sailaab*. She has won innumerable Filmfare, Screen and Zee Cine awards. Her number *Dola Re* from *Devdas* won a record 17 film awards. She has been on several TV reality shows like *Nach Baliye*, *Jhalak Dikhlai* and *Boogie Woogie*. Having ruled Bollywood for over four decades she also runs Saroj Khan Dance Academy.

संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल प्रत्येक भाषा में सर्वोत्तम
कथाचित्र

सर्वोत्तम बंगला कथाचित्र

बालीगंज कोर्ट

निर्माता गणेश कुमार बागडिया को रजत कमल और 1,00,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक पिनाकी चौधरी को रजत कमल और 1,00,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

....शहरी समाज में वृद्ध होने के कष्टों पर सशक्त टिप्पणी करने के लिए।

**AWARDS FOR BEST FEATURE FILM IN EACH OF THE LANGUAGE
SPECIFIED IN THE SCHEDULE VIII OF THE CONSTITUTION**

AWARD FOR BEST FEATURE FILM IN BENGALI

BALLYGUNGE COURT

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 1,00,000 to PRODUCER GANESH KUMAR BAGARIA

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 1,00,000 to DIRECTOR PINAKI CHAUDHURI

CITATION

....for providing a powerful commentary on the travails of the aging in an urban milieu.

गणेश कुमार बागरिया

गणेश कुमार बागरिया पश्चिम बंगाल के उभरते हुए फिल्म निर्माता हैं। उन्होंने 2006 में अपनी निर्माण कंपनी गणपति प्रोडक्शन की स्थापना की। *बालीगंज कोर्ट* इस कंपनी की पहली फिल्म है।



GANESH KUMAR BAGARIA

Ganesh Kumar Bagaria is a film producer from West Bengal. He floated his production house "Ganpati Production" in the year 2006. *Ballygunge Court* is its maiden venture.

पिनाकी चौधरी

पिनाकी चौधरी एक अनुभवी फिल्मकार हैं। उन्होंने अनेक टी वी फिल्मों, धारावाहिकों तथा फीचर फिल्मों का निर्माण एवं निर्देशन किया है। उन्हें 1997 में फिल्म *संघात* के लिए सर्वोत्तम निर्देशन का राष्ट्रीय पुरस्कार मिला।



PINAKI CHAUDHURI

Pinaki Chaudhuri is a veteran in cinema having produced and directed several TV serials, TV films and feature films. He got the National Award for best director in 1997 for his film *Sanghat*.

सर्वोत्तम हिंदी कथाचित्र

1971

निर्माता सागर फिल्मस प्रा. लि. को रजत कमल और 1,00,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक अमृत सागर को रजत कमल और 1,00,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

....विदेशी भूमि पर शत्रुतापूर्ण माहौल तथा सरकार की उपेक्षा से त्रस्त और हताशापूर्ण स्थितियों में भी असीम धैर्य का परिचय देने वाले युद्धबंदियों की कष्टपूर्ण दशा के संवेदनशील चित्रण के लिए।

BEST FEATURE FILM IN HINDI

1971

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 1,00,000 to PRODUCER SAGAR FILMS PVT LTD

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 1,00,000 to DIRECTOR AMRIT SAGAR

CITATION

....for a sensitive depiction of the ordeal of Indian prisoners of war trapped between extreme hostility and official apathy in an alien land and showing fortitude in a hopeless situation.

सागर फिल्मस प्रा. लि.

इस फिल्म निर्माण कंपनी की स्थापना जाने-माने फिल्म निर्माता रामानंद सागर ने 1950 में की। उन्होंने 25 कथाचित्रों का निर्माण और 35 फिल्मों के लिए लेखन किया। उनकी कुछ उल्लेखनीय फिल्में हैं—*घूंघट*, *जिंदगी*, *पैगाम*, *आरजू*, *आंखें*, *गीत* तथा *ललकार*। उन्होंने टी वी के लिए *रामायण* तथा *श्री कृष्ण* धारावाहिकों का निर्माण किया। अब उनके बेटे सुभाष, आनंद, प्रेम और मोती तथा तीसरी पीढ़ी के ज्योति, अमृत, शक्ति और शिव इस कंपनी का संचालन कर रहे हैं जिसकी गतिविधियों में टी वी, उपग्रह, वीडियो, डीवीडी, विजुअल इफेक्ट, पोस्ट प्रोडक्शन, टीवी तथा फिल्म अकादमी, स्टुडियो, वितरण, यात्रा, होटल तथा निर्यात आदि शामिल हो चुके हैं।

अमृत सागर

अमृत सागर ने अमरीका के कैलिफोर्निया कालेज आफ आर्ट्स एंड क्रॉफ्ट्स से निर्देशन का प्रशिक्षण प्राप्त किया। विद्यार्थी के रूप में उन्होंने अमरीका के फिल्म कालेजों की प्रविष्टियों के बीच आल स्टूडेंट फिल्म फेस्टीवल का प्रमाण-पत्र प्राप्त किया। उन्हें छात्र फिल्म के लिए आल कालेज ऑनर पुरस्कार भी मिला। टी.वी धारावाहिक *हातिम*, *पृथ्वी राज चौहान* तथा *होटल किंगस्टन* के निर्माण से जुड़े रहे हैं। 1971 उनकी पहली फीचर फिल्म है।



SAGAR FILMS PVT LTD

The production house Sagar Arts was launched by veteran filmmaker Late Ramanand Sagar in 1950. He produced and directed 25 films and produced or wrote another 35. Some significant ones were *Ghunghat*, *Zindagi*, *Paigham*, *Arzoo*, *Aankhen*, *Geet* and *Lalkar*. Patriarch of Sagar Films Ramanand Sagar made *Ramayan* and *Shri Krishna* for TV. Now his sons Subhash, Anand, Prem and Moti and the third generation of Sagar—Jyoti, Amrit, Shakti and Shiv—are looking after the Sagar group with activities as wide-ranging as TV, satellite, video, DVD, visual effects and post production, TV and film academy, studios, distribution, travel, hotels and export division.

AMRIT SAGAR

Amrit Sagar majored in direction from California College of Arts and Craft in California, USA. As a student he won the All Student Film Festival certificate competing with entries from 35 film colleges in the USA. He also received the All College honor award for his student film. He has been creatively involved in the making of TV serials *Hatim*, *Prithviraj Chauhan* and *Hotel Kingston*. 1971 is his debut feature film.

सर्वोत्तम मलयालम कथाचित्र

ओरे कडल

निर्माता विंध्यन एन.बी. को रजत कमल और 1,00,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक श्यामप्रसाद को रजत कमल और 1,00,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

....उग्रवादी बुद्धिजीवी पुरुष के प्रेम में पागल हो जाने वाली एक मध्यवर्गीय गृहिणी के भावात्मक द्वंद्व के प्रभावशाली तथा सजीव चित्रण के लिए।

BEST FEATURE FILM IN MALAYALAM

ORE KADAL

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 1,00,000 to PRODUCER VINDHYAN N.B.

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 1,00,000 to DIRECTOR SHYAMAPRASAD

CITATION

....for a well-crafted movie on the emotional conflict of a middle class housewife irresistibly drawn to a radical intellectual.

विंध्यन एन.बी.

विंध्यन ने नाट्य विद्यालय से नाट्य कला में स्नातक डिग्री प्राप्त की। केरल में उच्च स्तर के सिनेमा के विकास में उनकी अग्रणी भूमिका रही है और वे 15 फीचर फिल्मों बना चुके हैं। उन्हें कई राज्य तथा अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार मिले हैं। वे केरल फिल्म निर्माता संघ के कोषाध्यक्ष हैं।

श्यामप्रसाद

श्यामप्रसाद ने ब्रिटेन के हल विश्वविद्यालय से फिल्म एवं मीडिया प्रोडक्शन में स्नातकोत्तर डिग्री प्राप्त की। उनका प्रारंभिक प्रशिक्षण बी बी सी और चैनल-4 में हुआ। उन्होंने मलयालम टीवी के लिए टेलीफिल्मों तथा वृत्तचित्रों के निर्माण को नया स्वरूप प्रदान किया। वे अमृता टेलीविजन के कार्यक्रम निर्माण विभाग के अध्यक्ष हैं। उनके कथाचित्रों को अनेक राष्ट्रीय एवं राज्य पुरस्कार मिले हैं। उनकी फिल्म *अग्निसाक्षी* को 1998 में तथा *अकले* को 2004 में राष्ट्रीय पुरस्कार मिला। *ओरे कडल* को 2008 के केरल के अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह में फिप्रेसी व नेटपैक पुरस्कार मिल चुके हैं। इस फिल्म को स्टटगार्ट समारोह में दर्शक पुरस्कार से नवाजा गया।



VINDHYAN N.B.

Vindhyan completed his bachelors degree in theatre arts from the school of drama. He has been on the forefront of quality cinema in Kerala and produced over 15 features. He has won several state and international awards. He is the treasurer of Kerala Film Producers' Association.

SHYAMAPRASAD

Shyamaprasad did masters in film and media production at Hull University, UK and interned at BBC and Channel 4. He redefined the parameters of telefilms and documentaries in Malayalam TV. He is the president, programming, Amrita Television. His features have won several national and state awards. His films, *Agnisakshi* and *Akale*, won national award in 1998 and 2004 respectively. *Ore Kadal* bagged the Fipresci and Netpac awards at International Film Festival of Kerala in 2008 and the audience prize in Stuttgart.

सर्वोत्तम मराठी कथाचित्र

निरोप

निर्माता अपर्णा धर्माधिकारी को रजत कमल और 1,00,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक सचिन कुंडालकर को रजत कमल और 1,00,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

....मानव मन की आंतरिक अनुभूतियों को नया परिप्रेक्ष्य प्रदान करने वाली एक मौलिक और लकीर से अलग फिल्म के लिए।

BEST FEATURE FILM IN MARATHI

NIROP

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 1,00,000 to PRODUCER APARNA DHARMADHIKARI

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 1,00,000 to DIRECTOR SACHIN KUNDALKAR

CITATION

....for an original, off-beat film that gives a fresh perspective of the internal landscapes of human mind

अपर्णा धर्माधिकारी

अपर्णा धर्माधिकारी सलाम सिनेमा के अपने बैनर के तहत पहली बार फिल्म निर्माण के क्षेत्र में दाखिल हुई हैं। *निरोप* उनकी पहली फिल्म है। वे पिछले दस वर्षों से छायाकार के रूप में काम कर रही हैं।



APARNA DHARMADHIKARI

Under her banner Salaam Cinema, Aparna Dharmadhikari has entered film production for the first time. *Nirop* is the first production. She has been working as a cinematographer for the last 10 years.

सचिन कुंडालकर

सचिन कुंडालकर की निर्देशक के रूप में पहली फिल्म *रेस्टोरेंट* 2006 में बनी। *निरोप* उनकी दूसरी फिल्म है। उन्होंने मराठी में चार नाटक तथा एक उपन्यास *कोबाल्ट ब्लू* लिखा है। उन्होंने कई लघुचित्र बनाए हैं, जिनमें *आउट आफ दि बाक्स*, *शुभ्र काही*, *दि बाथ* तथा *उने नोएसेते* शामिल हैं।



SACHIN KUNDALKAR

Sachin Kundalkar made his debut with *Restaurant* in 2006. *Nirop* is his second film. He has written four plays and a Marathi novel, *Cobalt Blue*. His short films include *Out of the Box*, *Shubhra Kahi*, *The Bath* and *Une Noisette*.

सर्वोत्तम तमिल फिल्म

पेरीयार

निर्माता लिबर्टी क्रिएशन्स लि. को रजत कमल और 1, 00,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक ज्ञान राजशेखरन को रजत कमल और 1,00,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

...पेरीयार नाम से प्रसिद्ध महान समाज सुधारक ईवी रामास्वामी नायकर के जीवन और समय के साथ पूरा न्याय करने वाली जीवनी फिल्म के लिए।

BEST FEATURE FILM IN TAMIL

PERIYAR

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 1,00,000 to PRODUCER LIBERTY CREATIONS LTD

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 1,00,000 to DIRECTOR GNANA RAJASEKARAN

CITATION

...for a biographical feature doing full justice to the life and times of Shri EV Ramaswamy Naicker, popularly known as Periyar.

लिबर्टी क्रिएशन्स लि.

लिबर्टी क्रिएशन्स लि. का एक लिमिटेड कंपनी के रूप में पंजीकरण 1998 में हुआ। इस कंपनी की स्थापना पेरियार के आदर्शों-तर्कवाद तथा मानववाद का प्रचार-प्रसार करने वाली फिल्में बनाने के मूल उद्देश्य से की गई। 2000 में कंपनी ने *पुरतचिकारन* फिल्म बनाई जिसमें सामाजिक परिवर्तन की आवश्यकता का संदेश प्रसारित किया गया। *पेरीयार* इसकी दूसरी फिल्म है।

ज्ञान राजशेखरन

भारतीय प्रशासनिक सेवा के 1983 बैच के अधिकारी ज्ञान राजशेखरन इस समय तमिलनाडु में श्री पेरंबदूर में राजीव गांधी राष्ट्रीय युवा विकास संस्थान के निदेशक के पद पर काम कर रहे हैं। उन्होंने *मोघा मल्ल* (तमिल) जैसी फिल्में बनाई हैं जिसे सर्वोत्तम कथाचित्र का राष्ट्रीय पुरस्कार मिला। उनकी तीसरी फिल्म *भारती* को 4 राष्ट्रीय तथा 6 तमिलनाडु राज्य पुरस्कार मिले।



LIBERTY CREATIONS LTD

LIBERTY CREATIONS LIMITED, was registered as a limited company in the year 1998. The Company was incorporated with the primary objective of producing films which convey Periyar's ideals, i.e rationalism and humanism. In the year 2000, Liberty Creations Limited produced a movie *PURATCHIKARAN* which carried the message of need for social transformation. *Periyar* is their second film.

GNANA RAJASEKARAN

An IAS officer of the 1983 batch G. N. Rajasekaran is presently director of the Rajiv Gandhi National Institute of Youth Development in Sriperumbudur. He has made films like *Mogha Mull* (Tamil), which won the national award for best first film. His third film, *Bharati* won four national and six Tamil Nadu state awards.

संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल भाषाओं से इतर भाषाओं में सर्वोत्तम कथाचित्र

सर्वोत्तम अंग्रेजी कथाचित्र

दि लास्ट लीयर

निर्माता अरिंदम चौधरी को रजत कमल और 1,00,000/-रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक रितूपर्णो घोष को रजत कमल और 1,00,000/-रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

...शेक्सपीयर के नाटकों के गरिमा खो चुके एक सनकी, अहंकारी तथा एकांतप्रिय अभिनेता के जीवन पर दृश्यात्मक रूप से विस्मयकारी और शानदार फिल्म के लिए।

AWARD FOR BEST FEATURE FILM IN EACH OF THE LANGUAGES OTHER THAN THOSE SPECIFIED IN SECTION VIII OF THE CONSTITUTION

BEST FEATURE FILM IN ENGLISH

THE LAST LEAR

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 1,00,000 to PRODUCER ARINDAM CHAUDHURI

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 1,00,000 to DIRECTOR RITUPARNO GHOSH

CITATION

.... for brilliant and visually stunning work of cinema on the life of a reclusive Shakespearian actor, whimsical and passionate but well past his prime.

अरिंदम चौधरी

अरिंदम चौधरी देश के अग्रणी मैनेजमेंट गुरु तथा उद्योगपति हैं। उनका इंडियन इंस्टीट्यूट आफ प्लैनिंग एण्ड मैनेजमेंट देश के सबसे बड़े बिजनेस संस्थानों में से एक है। 1996 में उन्होंने प्रबंधन परामर्श सेवाओं के लिए प्लैनमैन कंसल्टिंग नाम की संस्था बनाई। 2001 में उन्होंने एक फिल्म निर्माण कंपनी प्लैनमैन मोशन पिक्चर्स की स्थापना की। यह कंपनी अब तक बंगला में *सांजबाथिर रूपकथारा* तथा *दोसोर* और हिंदी में *फाल्तू और रोक सको तो रोक लो* फिल्में बना चुकी हैं। इसने अंग्रेजी में *दि लास्ट लीयर* के अलावा *मिथ्या* और *सनग्लास* फिल्में भी बनाई हैं।

रितुपर्णो घोष

रितुपर्णो घोष ने जादवपुर विश्वविद्यालय में अर्थशास्त्र का अध्ययन किया। उनके पिता एक चित्रकार तथा वृत्तचित्र निर्माता थे। घोष ने अपना करियर विज्ञापनों से शुरू किया। 1992 में उन्होंने बाल फिल्म *हीरेर अंगति* बनाई। उनकी दूसरी फिल्म *उनिश एप्रिल* को 1995 का सर्वोत्तम फिल्म का राष्ट्रीय पुरस्कार मिला। तब से ऋतुपर्णो घोष ने बंगला में *दहन*, *उत्सव*, *चोखेर बाली*, *असुख*, *बारीवली*, *अंतर्महल* तथा हिंदी में *रैनकोट* फिल्मों का निर्देशन किया है और अनेक राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त किए हैं। *बारीवली* को बर्लिन में नेटपैक पुरस्कार मिला। उन्हें *चोखेर बाली* तथा *अंतर्महल* के लिए *लोकानो समारोह* में सर्वोत्तम फिल्म का पुरस्कार प्राप्त हुआ। उनकी फिल्म *शुभो मुहूर्त* को सर्वोत्तम बंगला कथाचित्र का राष्ट्रीय पुरस्कार मिला।



ARINDAM CHOWDHURI

He is a leading management guru and entrepreneur. His business school, Indian Institute of Planning and Management, is among the largest in the country. In 1996, Arindam Chaudhuri founded Planman Consulting, a management consultancy. In 2001, he founded Planman Motion Pictures, a film production company, which has produced movies like *Saanjbathir Roopkathara* and *Dosor* in Bengali, *Faltu, Rok Sako To Rok Lo* in Hindi, *The Last Lear*, *Mithya* and *Sunglass*.

RITUPARNO GHOSH

Rituparno Ghosh studied economics at Jadavpur University. His father was a documentary filmmaker and a painter. Ghosh began his career in advertising. In 1992, he made a low-key film debut with a children's feature titled *Hirer Angti* (*The Diamond Ring*). His second movie *Unishe April* (*19 April*), won the 1995 National Film Award for best film. Since then, Ghosh has directed *Dahan*, *Utsab*, *Chokher Bali*, *Asukh*, *Bariwali*, *Antarmahal* and *Raincoat* (in Hindi) and won several national and international awards. *Bariwali* won the NETPAC award at Berlin. Ghosh won the best film award at Locarno for *Chokher Bali* and later *Antarmahal*. *Shubho Mahuri* got him the national award for best Bengali film.

पुरस्कार जो नहीं दिए गए।

पर्यावरण संरक्षण पर सर्वोत्तम कथाचित्र

सर्वोत्तम उड़िया फिल्म

सर्वोत्तम तेलुगु फिल्म

सर्वोत्तम तुलु फिल्म

सर्वोत्तम भोजपुरी फिल्म

AWARDS NOT GIVEN

Best Film on Environmental Issues

Best Oriya Film

Best Telugu Film

Best Bhojpuri Film

Best Tulu Film

गैर कथाचित्र
पुरस्कार

Awards for
Non-Feature Films

गैर कथाचित्र पुरस्कार : एक नज़र में

1.	अंतर्ध्वनि (हिंदी)	सर्वोत्तम जीवनी फिल्म
2.	अयोध्या गाथा (हिंदी)	सर्वोत्तम प्रकथन/वॉयस ओवर
3.	बाघेर बाच्चा (बंगला)	सामाजिक विषयों पर सर्वोत्तम फिल्म
4.	भंगा घौर (बंगला)	सर्वोत्तम पर्यावरण संरक्षण फिल्म
5.	मुलतिर खेरो (बंगला)	निर्णायक मंडल का विशेष पुरस्कार
6.	ईकोज आफ साइलेंस (अंग्रेजी)	सर्वोत्तम संगीत निर्देशक
7.	होप डाइज लारस्ट इन वार (अंग्रेजी/हिंदी/पंजाबी/बंगला)	सर्वोत्तम गैर-कथाचित्र सर्वोत्तम संपादन
8.	दि जर्नलिस्ट एंड द जिहादी (अंग्रेजी)	सर्वोत्तम खोजी फिल्म
9.	क्रमशः (हिंदी)	सर्वोत्तम छायांकन सर्वोत्तम ध्वनि आलेखन
10.	लाल जूतो (बंगला)	निर्देशक की पहली सर्वोत्तम फिल्म
11.	मेकिंग दि फेस (अंग्रेजी)	परिवार कल्याण पर सर्वोत्तम फिल्म
12.	पूमरम (मलयालम)	निर्णायक मंडल का विशेष पुरस्कार
13.	प्रारंभ (कन्नड)	सर्वोत्तम शैक्षिक/प्रेरक फिल्म
14.	शिफिटिंग प्रोफेसी (अंग्रेजी)	सामाजिक विषयों पर सर्वोत्तम फिल्म
15.	द टाई फाकेज (अंग्रेजी)	सर्वोत्तम मानव शास्त्रीय/मानवजातीय फिल्म
16.	उधेड बुन (हिंदी)	सर्वोत्तम लघु कल्पित फिल्म
17.	वेल्लापोक्कातिल (मलयालम)	सर्वोत्तम निर्देशन

Awards for Non-Feature Films at a Glance

1.	ANTARDHWANI (Hindi)	Best Biographical Film
2.	AYODHYA GATHA (Hindi)	Best Narration-Voice Over
3.	BAGHER BACHA (Bengali)	Best Film on Social Issues
4.	BHANGA GHARA (Bengali)	Best Environment Conservation Film
5.	BHULTIR KHERO : CHRONICLE OF AN AMNESIAC (Bengali)	Special Jury Award
6.	ECHOES OF SILENCE (English)	Best Music Director
7.	HOPE DIES LAST IN WAR (English/Hindi/Punjabi/Bengali)	Best Non-feature Film Best Best Editor
8.	THE JOURNALIST AND THE JIHADI- THE MURDER OF DANIEL PEARL (English)	Best Investigative Film
9.	KRAMASHA (Hindi)	Best Cinematographer Best Audiographer
10.	LAL JUTO (Bengali)	Best Debut Film of a Director
11.	MAKING THE FACE (English)	Best Film on Family Welfare
12.	POOMARAM (Malayalam)	Special Jury Award
13.	PRARAMBHA (Kannada)	Best Educational Film
14.	SHIFTING PROPHECY (English)	Best Film on Social Issues
15.	THE TAI PHAKEYS (English)	Best Anthropological/Ethnographic Film
16.	UDEDH BUN (Hindi)	Best Short Fiction Film
17.	VELLAPOKKATHIL (Malayalam)	Best Direction

सर्वोत्तम गैर-कथाचित्र

होप डाइज लास्ट इन वार

निर्माता सुप्रियो सेन को स्वर्ण कमल और 1,00,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक सुप्रियो सेन को स्वर्ण कमल और 1,00,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

....विदेशों की जेलों में रह रहे कैदियों की हालत के संवेदनशील चित्रण के लिए। रंग-बिरंगी ध्वनियों के जटिल संयोजन से युक्त यह फिल्म निराशा के विरुद्ध संघर्ष में आशा की तलाश करने का प्रयास है।

BEST NON-FEATURE FILM

HOPE DIES LAST IN WAR

Swarna Kamal and a cash prize of Rs 1,00,000/- to PRODUCER SUPRIYO SEN

Swarna Kamal and a cash prize of Rs 1,00,000/- to DIRECTOR SUPRIYO SEN

CITATION

....for its sensitive albeit searching exploration of those in prisons in alien countries; a complex polyphony of variegated voices, the film is an endeavour to find hope in the midst of a struggle against despair.

सुप्रियो सेन

पत्रकार से स्वतंत्र फिल्म निर्माता बने सुप्रियो सेन ने फीचर फिल्मों तथा गैर फीचर फिल्मों का निर्माण और निर्देशन किया है। सुप्रियो को बर्लिन फिल्म समारोह में बर्लिन टुडे पुरस्कार, कार्लोवी वैरी फिल्म समारोह में क्रिस्टल ग्लोब, कॉमनवेल्थ फिल्म फेस्टीवल में बीबीसी आडिऐंस अवार्ड, मुम्बई अन्तर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह में गोल्डन कोंच, कराकोव तथा हुएस्का समारोह में निर्णायक मंडल के विशेष पुरस्कार तथा हैम्बर्ग में आडिऐंस अवार्ड मिल चुके हैं। उन्हें *दि नेस्ट* तथा *वे बैक होम* फिल्म के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार भी मिला। *वे बैक होम* व्यावसायिक रूप से रिलीज होने वाला भारत का पहला वृत्तचित्र था। उन्होंने बर्लिनेल टैलेंट कैंपस से प्रशिक्षण लिया। उन्हें सनडांस डॉक्युमेंटरी फंड तथा एशियन सिनेमा फंड से अनुदान मिल चुका है।



SUPRIYO SEN

A journalist turned independent filmmaker Supriyo Sen has produced and directed feature and short documentaries. Supriyo has won Berlin Today award at the Berlin Film Festival, Crystal Globe at Karlovy Vary, BBC Audience award at Commonwealth Film Festival, Golden Conch at Mumbai International Film Festival, Jury's special mention at Krakow and Huesca and audience award at Hamburg. He has also received National Awards for his films *The Nest* and *Way Back Home*. *Way Back Home* also happens to be the first Indian documentary to get released commercially. He is an alumnus of Berlinale Talent Campus and has got grants from Sundance Documentary Fund and Asian Cinema Fund from Pusan Film Festival.

निर्देशक का पहला सर्वोत्तम गैर-कथाचित्र

लाल जूतो

निर्माता सत्यजित रे फिल्म एवं टेलीविजन संस्थान, कोलकाता को रजत कमल और 50,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक श्वेता मर्चेन्ट को रजत कमल और 50,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

....एक जानी-पहचानी साहित्यिक कृति की परंपरागत प्रस्तुति के लिए। विस्मय के भाव को सहज और स्वाभाविक ढंग से अत्यंत गहनता के साथ चित्रित किया गया है।

AWARD FOR THE BEST FIRST NON-FEATURE FILM OF A DIRECTOR

LAALJUTO

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 50,000/- to PRODUCER SATYAJIT RAY FILM AND TELEVISION INSTITUTE, KOLKATA

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 50,000/- to DIRECTOR SHWETA MERCHANT

CITATION

....for its conventional handling of a renowned literary text. The element of surprise is presented in an effortless manner, spontaneous and full of miraculous madness.

सत्यजित रे फिल्म एवं टेलीविजन संस्थान, कोलकाता

यह सूचना और प्रसारण मंत्रालय के अंतर्गत स्वायत्त संस्था है जिसका संचालन भारत सरकार द्वारा गठित सोसायटी द्वारा किया जाता है। संस्थान चार विषयों के छात्र-छात्राओं के तीन बैचों द्वारा पाठ्यक्रम के भाग के रूप में बनाई जाने वाली फिल्मों का निर्माण करता है और उनका पूरा खर्च उठाता है। संस्थान में बनी अनेक फिल्मों विभिन्न अन्तर्राष्ट्रीय समारोहों में दिखाई गई हैं और उन्हें राष्ट्रीय पुरस्कार समेत कई पुरस्कार मिले हैं।

श्वेता मर्चेंट

श्वेता मर्चेंट ने निर्देशन और पटकथा लेखन में स्नातकोत्तर डिप्लोमा फिल्म एंड टेलीविजन संस्थान, कोलकाता से प्राप्त किया। उनकी फिल्म *लाल जूतो* को शंघाई अन्तर्राष्ट्रीय फिल्म फेस्टिवल 2008 में सर्वोत्तम सृजनात्मक विचार का पुरस्कार मिला। इसे केरल के अन्तर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह, 2007 तथा म्यूनिक अन्तर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह 2008 के लिए भी चुना गया। श्वेता ने एनएचके जापान के लिए वृत्तचित्र *'शब्दों की नजरों से'* का निर्देशन किया। इस समय वे एक कथाचित्र के निर्देशन में सुमंत्र घोषाल की सहयोगी के रूप में काम कर रही हैं।



SATYAJIT RAY FILM AND TELEVISION INSTITUTE, KOLKATA

SRFTI, Kolkata, is a fully funded, autonomous institution under the ministry of information and broadcasting, run by a society constituted by the government of India. The institute produces and finances entirely all the student films made as part of the curriculum by three batches of students from four disciplines. Several of the student films have been screened at various international festivals and won several awards including the national awards.

SHWETA MERCHANT

Shweta Merchant completed post-graduate diploma in direction and screenplay writing from Satyajit Ray Film and Television Institute, Kolkata. Her diploma film, *Laal Juto* won the best creative idea award at Shanghai International Film Festival, 2008. It was selected in International Film Festival of Kerala, 2007 and Munich International Student Film Festival 2008. Shweta has directed *Shabdon Ki Nazaron Se*, a documentary for NHK Japan and is currently assisting Sumantra Ghoshal on a feature film.

सर्वोत्तम मानव शास्त्रीय/मानव जातीय फिल्म

द ताई फाकेज

निर्माता प्रियम चालीहा को रजत कमल और 50,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक मृदुल गुप्ता को रजत कमल और 50,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

....द ताई फाकेज पूर्वोत्तर क्षेत्र के बहुत कम जनसंख्या वाले फाके समुदाय के जनजीवन और परंपराओं का प्रामाणिक चित्रण है, जो वैश्वीकरण के प्रभाव के बावजूद अपनी विशिष्ट अपनी पहचान बनाए हुए है।

BEST ANTHROPOLOGICAL/ETHNOGRAPHIC FILM

THE TAI PHAKEYS

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 50,000/- to PRODUCER PREEYAM CHALIHA

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 50,000/- to DIRECTOR MRIDUL GUPTA

CITATION

....*The Tai Phakeys is an honest portrayal of life and traditions in the miniscule Phakey community of the North East, which despite the influence of globalisation continues to preserve its individual identity.*

प्रियम चालीहा

प्रियम चालीहा असम की जानी-पहचानी वृत्तचित्र निर्माता हैं और उन्होंने अनेक टेलीविजन कार्यक्रम तैयार किए हैं।



PREEYAM CHALIHA

Preeyam Chaliha is a well-known documentary filmmaker and producer in Assam and has also made a number of TV programmes.

मृदुल गुप्ता

मृदुल गुप्ता की गिनती पूर्वोत्तर क्षेत्र के श्रेष्ठतम फिल्मकारों में होती है। वे निर्माता, निर्देशक और छायाकार भी हैं। उन्होंने विज्ञापन फिल्मों, वृत्तचित्रों तथा फीचर फिल्मों का निर्माण किया है।



MRIDUL GUPTA

Mridul Gupta is one of the finest filmmakers in the North East, a cinematographer, director and producer all rolled into one. This self-taught filmmaker has done a range of work—ads, documentaries and feature films.

सर्वोत्तम जीवनी/ऐतिहासिक पुनर्निर्माण/संकलन फिल्म

अंतर्ध्वनि

निर्माता फिल्म प्रभाग को रजत कमल और 50,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक जब्बार पटेल को रजत कमल और 50,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

.....यह फिल्म वाद्ययंत्र संतूर की खोई हुई प्रतिष्ठा को पुनर्जीवित करने की दिशा में पंडित शिव कुमार शर्मा की यात्रा के समय और जीवन की सृजनात्मक अभिव्यक्ति है। फिल्म की गति और लय संतूर के मधुर लयपूर्ण संगीत के अनुरूप है।

BEST BIOGRAPHICAL/HISTORICAL RECONSTRUCTION/ COMPILATION FILM

ANTARDHWANI

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 50,000/- to PRODUCER FILMS DIVISION

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 50,000/- to DIRECTOR JABBAR PATEL

CITATION

.....The film creatively brings out the life and times of Pandit Shiv Kumar Sharma in his journey to revive the lost magic of the Santoor and place it on the world stage. The pace and rhythm of the film is in tune with the melodious music of the Santoor.

फिल्म प्रभाग

वृत्तचित्र निर्माण के मामले में फिल्म प्रभाग विश्व का पुराना और सर्वाधिक बड़ा फिल्म निर्माता है। भारत के दृश्य विश्वकोष नाम से विख्यात फिल्म प्रभाग एक प्रमुख मीडिया एकक है और इसने भारत में वृत्तचित्र फिल्म आंदोलन को एक संगठित मंच दिया है। इसमें संपादन कक्ष, रिकॉर्डिंग थियेटर, एनिमेशन स्टूडियो, प्रिव्यू थियेटर, कैमरा और वीडियो उपकरणों सहित सभी आधुनिक सुविधाएं उपलब्ध हैं। प्रभाग 1950 से लगातार वृत्तचित्र, लघु फिल्म तथा कार्टून फिल्म का मुंबई अन्तर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह का सफलतापूर्वक आयोजन करता रहा है।

जब्बार पटेल

जब्बार पटेल शिक्षा तथा व्यवसाय से बच्चों के डाक्टर हैं और पुणे के निकट एक पोलिक्लिनिक चलाते हैं। मराठी साहित्य की श्रेष्ठता से प्रेरित होकर उन्होंने नाटकों के क्षेत्र में प्रवेश किया और प्रसिद्ध नाटककार के रूप में ख्याति अर्जित की। उन्होंने बड़ी संख्या में उच्च कोटि के वृत्तचित्रों और कथाचित्रों का निर्देशन किया, जिन्हें राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कार मिले हैं। **घासीराम कोतवाल** उनका सबसे प्रतिष्ठित नाटक है। **सिंहासन, जैत रे जैत, उंबरता** इत्यादि उनकी प्रसिद्ध फिल्में हैं।



FILMS DIVISION

Ranked among the oldest and largest documentary producers in the world, Films Division is acclaimed as the "visual encyclopaedia of India" and has provided an organised platform for documentary film movement in India. It has successfully organised the Mumbai International Film Festival for Documentary, Short and Animation Films since 1950. It is equipped with all modern facilities including editing suites, recording theatres, animation studios, preview theatre and camera and video equipment.

JABBAR PATEL

A paediatrician by education and profession Jabbar Patel runs a polyclinic near Pune. Inspired by the richness of Marathi literature he stepped into theatre and made a name for himself as a director of refinement and perception. He has directed several highly regarded documentaries and feature films that have won national and international awards. **Ghasiram Kotwal** is his most celebrated play. His noted films are **Simhasan, Jait Re Jait, Umbartha** etc.

पर्यावरण संरक्षण/अनुरक्षण पर सर्वोत्तम फिल्म

भंगा घौर

निर्माता भारतीय फिल्म एवं टेलीविजन संस्थान, पुणे को रजत कमल और 50,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक नीलांजन दत्ता को रजत कमल और 50,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

....पर्यावरण संरक्षण अभियान को आगे बढ़ाने के लिए। फिल्म में प्रकृति के अनिवार्य प्रभाव से निपटने में मालदा जिले के दो क्षेत्रों के बीच अंतर को दर्शाया गया है। एक क्षेत्र गंगा नदी के कटाव का सामना करता है तो दूसरा क्षेत्र पानी की कमी के संकट में अपना अस्तित्व बचाने के लिए अपने को नए रूप में ढालता है।

BEST ENVIRONMENT CONSERVATION/ PRESERVATION FILM (including awareness)

BHANGA GHARA

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 50,000/- to PRODUCER FILM AND TELEVISION INSTITUTE OF INDIA, PUNE

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 50,000/- to DIRECTOR NILANJAN DATTA

CITATION

....for championing the cause of environmental conservation. The film depicts the contrast between two regions of the Malda district as they come to terms with the inevitable flow of nature. While one faces the eroding onslaught of the river Ganga, the other renews itself to survive amidst scarcity of water.

भारतीय फ़िल्म एवं टेलीविज़न संस्थान, पुणे

पुणे के पूर्व प्रभात स्टुडियो में स्थापित, भारतीय फिल्म एवं टेलीविज़न संस्थान, श्रेष्ठ फिल्म निर्माण की समृद्ध परंपरा का वारिस है। फिल्म निर्माण तथा टेलीविज़न कार्यक्रम तैयार करने में प्रशिक्षण का अपना उद्देश्य पूरा करने में यह पूरी तरह खरा उतरा है। संस्थान न केवल भारत बल्कि एशिया और यूरोप में श्रेष्ठता के केन्द्र के रूप में जाना जाता है। संस्थान के छात्रों द्वारा बनाई गई फिल्मों देश के समारोहों में प्रदर्शित की जाती हैं और उन्हें राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कार मिले हैं। यहां से शिक्षा लेकर सिने जगत में नाम कमाने वालों में सुभाष घई, मणि कौल, नसीरुद्दीन शाह, जया बच्चन, रज़ा मुराद, शत्रुघ्न सिन्हा, मिथुन चक्रवर्ती, टॉम आल्टर, अदूर गोपालकृष्णन, संजय लीला भंसाली, राजकुमार हिरानी, विधु विनोद चोपड़ा आदि शामिल हैं।

नीलांजन दत्ता

नीलांजन दत्ता ने भारतीय फिल्म एवं टेलीविज़न संस्थान, पुणे से संपादन में डिप्लोमा प्राप्त किया है। *गंगा घौर* के अलावा उन्होंने *मिसिंग माई डाटर*, *संकुलर आर्किटेक्चर* तथा *रेडियो मिर्ची* जैसे वृत्तचित्र और दूरदर्शन के लिए राष्ट्रीय महिला आयोग द्वारा प्रायोजित एक वीडियो स्पॉट का निर्माण किया है। नीलांजन द्वारा संपादित फिल्मों में *अंतहीन*, *पुनः गर्ल ऑन ए साइकिल*, *सलाम इंडिया*, *शिपबिल्डिंग इन केरल* एवं *फैक्टरी लंच* शामिल है।



FILM AND TELEVISION INSTITUTE OF INDIA, PUNE

The Film and Television Institute of India (FTII), established in 1960 on the erstwhile Prabhat Studio premises at Pune, has lived up to its objective in imparting training in film making and television programme production. Today FTII is considered a Center of Excellence not only in India but also in Asia and Europe. Films made by the students of the Institute are entered in Festivals both in India and abroad and have won several national and international awards. The alumni of FTII include Subhash Ghai, Mani Kaul, Naseeruddin Shah, Jaya Bachchan, Raza Murad, Shatrughan Sinha, Mithun Chakraborty, Tom Alter, Adoor Gopalakrishnan, Sanjay Leela Bhansali, Raj Kumar Hirani and Vidhu Vinod Chopra among others.

NILANJAN DATTA

Nilanjan Datta has a diploma in editing from Film and Television Institute of India, Pune. Besides *Bhanga Ghara*, he has made *Missing My Daughter*, *Secular Architecture*, *Radio Mirchi* and a video spot on child marriage for Doordarshan, commissioned by National Commission for Women. The films he has worked as Editor include *Antaheen*, *Punha*, *Girl On A Cycle*, *Salam India*, *Ship Building in Kerala* and *Factory Lunch*

सामाजिक विषयों पर सर्वोत्तम फिल्म

बाघेर बाच्चा और शिफ्टिंग प्रोफेसी

निर्माता सत्यजित रे फिल्म एवं टेलीविजन संस्थान, कोलकाता (बाघेर बाच्चा के लिए) तथा पब्लिक सर्विस ब्राम्डकारिस्टिंग ट्रस्ट (शिफ्टिंग प्रोफेसी के लिए) प्रत्येक को रजत कमल और 25,000/- का नकद पुरस्कार निर्देशक बिष्णु देव हल्दार (बाघेर बाच्चा के लिए) तथा मेराजुर रहमान बरूआ को (शिफ्टिंग प्रोफेसी के लिए) प्रत्येक को रजत कमल और 25,000/- का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

....*बाघेर बाच्चा* को रेलवे स्टेशन पर रहने वाले एक बच्चे के जीवन के सहज एवं बहुआयामी चित्रण के लिए। बच्चे को जीवन के संघर्ष तथा अपराधी जीवन के बीच की सीमा रेखा पर चलते हुए दर्शाया गया है।

....*शिफ्टिंग प्रोफेसी* को तमिलनाडु में मुस्लिम महिलाओं के प्रति कुछ रूढ़िवादी मौलवियों के भेदभाव को उजागर करने के लिए। फिल्म एक महिला के संघर्ष की कहानी का सफलतापूर्वक बखान करती है जो सामाजिक रूप से उपेक्षित औरतों को नारी असमानता के खिलाफ लड़ने के लिए एकजुट करती है।

AWARD FOR BEST FILM ON SOCIAL ISSUES

(such as prohibition, women and child welfare and dowry, drug abuse, welfare of the handicapped etc)

BAGHER BACHA and SHIFTING PROPHECY

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 25,000/- to PRODUCERS SATYAJIT RAY FILM AND TELEVISION INSTITUTE, KOLKATA (for Bagher Bacha) & PUBLIC SERVICE BROADCASTING TRUST (for Shifting Prophecy), Rajat Kamal and a cash prize of Rs 25,000/- to DIRECTORS BISHNU DEV HALDER (for Bagher Bacha) & MERAJUR RAHMAN BARUAH (for Shifting Prophecy)

CITATION

....*Bagher Bacha* for its spontaneous and multi-layered depiction of the life of a child living in a railway station. He is shown on the borderline between a struggle for survival and a life of crime.

....*Shifting prophecy* for handling the discrimination that Muslim women face in Tamil Nadu from some of the conservative clergy. The film successfully brings out the story of a woman activist who has galvanised socially repressed women into fighting their gender discrimination.

सत्यजित रे फिल्म एवं टेलीविजन संस्थान, कोलकाता

यह सूचना और प्रसारण मंत्रालय के अंतर्गत स्वायत्त संस्था है जिसका संचालन भारत सरकार द्वारा गठित सोसायटी द्वारा किया जाता है। संस्थान चार विषयों के छात्र-छात्राओं के तीन बैचों द्वारा पाठ्यक्रम के भाग के रूप में बनाई जाने वाली फिल्मों का निर्माण करता है और उनका पूरा खर्च उठाता है। संस्थान में बनी अनेक फिल्मों विभिन्न अन्तर्राष्ट्रीय समारोहों में दिखाई गई हैं और उन्हें राष्ट्रीय पुरस्कार समेत कई पुरस्कार मिले हैं।

विष्णु देव हल्दार

विष्णु देव हल्दार ने सत्यजित रे फिल्म एवं टेलीविजन संस्थान, कोलकाता से निर्देशन एवं पटकथा लेखन में स्नातकोत्तर डिप्लोमा प्राप्त किया। उनकी फिल्म **बाघेर बाघ्या** भारतीय अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह, गोआ, 2007 के इंडियन पैनोरमा खंड में दिखाई गई पहली फिल्म थी। इसे जीविका वृत्तचित्र समारोह, नई दिल्ली में निर्णायक मंडल का विशेष पुरस्कार मिला और यह 11 अन्तर्राष्ट्रीय फिल्म समारोहों के लिए चुनी गई। वे इस समय बदलते हुए भारतीय समाज के बारे में एक कथाचित्र : **'ए टेल आफ थी सिस्टर्स'** बना रहे हैं।

पब्लिक सर्विस ब्रॉडकास्टिंग ट्रस्ट

पीएसबीटी एक गैर लाभकारी न्यास है जो प्रसारण की साझी संस्कृति को बढ़ावा देने वाली शक्तियों का संगम है। यह संगठन सभी लोकतांत्रिक मूल्यों का प्रतिनिधि है और सामाजिक दृष्टि से जागरूक व सक्रिय है। यह न्यास भारत में प्रसारण की नई शब्दावली तथा नई गतिविधियों का निर्माण करना चाहता है। अनुभवी फिल्मकार राजीव मेहरोत्रा इसके प्रबंध न्यासी हैं। न्यास ने लगभग 300 वृत्तचित्र बनाए हैं, 50 से अधिक राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त किए हैं और 300 से अधिक बार इसकी फिल्मों का राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय समारोहों में प्रदर्शन हुआ है।

मेराजुर रहमान बरूआ

मेराजुर रहमान बरूआ पिछले 7 साल से कला, मूर्तिकला, यौन संबंध, संघर्ष, मानव अधिकार, साम्प्रदायिकता, पर्यावरण जैसे विविध विषयों पर फिल्मों के निर्माण से जुड़े हुए हैं। इनमें से बहुत-सी फिल्मों को पुरस्कार मिले हैं और उनकी काफी सराहना हुई है।



SATYAJIT RAY FILM AND TELEVISION INSTITUTE, KOLKATA

SRFTI, Kolkata, is a fully funded, autonomous institution under the ministry of information and broadcasting, run by a society constituted by the government of India. The institute produces and finances entirely all the student films made as part of the curriculum by three batches of students from four disciplines.

BISHNU DEV HALDER

Bishnu Dev Halder did post-graduate diploma in direction and screenplay writing from SRFTI, Kolkata. His student film Bagher Bacha was the opening film for the non-feature section of the Indian panorama at the International Film Festival of India, Goa, 2007. It won special jury mention at the Jeevika Documentary Film Festival, New Delhi and has been on the official selection at 11 international film festivals. He is currently making a documentary titled A Tale of Three Sisters on the subject of changing Indian society.

PUBLIC SERVICE BROADCASTING TRUST

PSBT is a not for profit trust that represents the confluence of energies to foster a shared public culture of broadcasting that is as exciting and cutting edge, as it is socially responsive and representative of democratic values. PSBT seeks to situate a new vocabulary and activism at the very heart of broadcasting in India.

MERAJUR RAHMAN BARUAH

For the last seven years Merajur Rahman Baruah has been involved in making films in various capacities on plethora of issues ranging from art/sculptures, sexuality, conflict, human rights, communalism and environment. Many of them have won awards and have been widely appreciated.

सर्वोत्तम शैक्षिक/प्रेरक/अनुदेशात्मक फिल्म

प्रारंभ

निर्माता संतोष शिवन को रजत कमल और 50,000/-रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक संतोष शिवन को रजत कमल और 50,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

.....फिल्म में एक एच.आई.वी पीड़ित बच्चे के संघर्ष का सजीव चित्रण है जिसे स्कूल से निकाल दिया गया है। फिल्म में मनोरंजक ढंग से इस समस्या के प्रति रचनात्मक रवैया अपनाने की प्रेरणा दी गई है।

BEST EDUCATIONAL/MOTIVATIONAL/INSTRUCTIONAL FILM PRARAMBH

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 50,000/- to PRODUCER SANTOSH SIVAN

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 50,000/- to DIRECTOR SANTOSH SIVAN

CITATION

.....Prarambh is a sensitive portrayal of the struggle faced by an HIV infected boy who is dismissed from school. The film takes a playful standpoint to inspire and instill a positive attitude towards this issue.

संतोष शिवन

भारतीय फिल्म एवं टेलीविजन संस्थान, पुणे से डिग्री प्राप्त करने वाले संतोष शिवन ने 45 फीचर फिल्मों तथा 41 वृत्तचित्रों के लिए काम किया है तथा अनेक राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त किए हैं। वे इस समय देश के सर्वश्रेष्ठ छायाकारों में से एक हैं। उन्हें *पेरुमताचन*, *काला पानी*, *मोहिनीअट्टम*, *इरुवार* और *दिल से* फिल्मों के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार मिले हैं। निर्देशक के रूप में उनकी फिल्म *हैलो* को सर्वोत्तम बाल फिल्म का पुरस्कार मिला। उनकी फिल्म *टेररिस्ट* की विश्व भर में सराहना हुई तथा उसे तमिल की सर्वोत्तम फिल्म का राष्ट्रीय पुरस्कार मिला। यह फिल्म सिने समीक्षक रोजर एबर्ट की 100 सर्वोत्तम फिल्मों की सूची (1999) में भी शामिल है। *मल्ली*, *बिफोर दि रेन्स*, और *तहान* उनकी अन्य बहुप्रशंसित फिल्में हैं।



SANTOSH SIVAN

A graduate from FTII, Pune, Santosh Sivan has worked in 45 features and 41 documentaries and won several national and international awards. He is the most sought after cameraperson in India today and has bagged the national award for cinematography for *Perumthachan*, *Kaalapani*, *Mohiniyattam*, *Iruvar* and *Dil Se*. As a director his film *Halo* won him national award for best children's film. *The Terrorist* got him accolades worldwide and also brought home the national award for best Tamil film. It was listed in leading critic Roger Ebert's 100 Best Films (1999). *Malli*, *Before The Rains* and *Tahaan* are some of his other acclaimed films.

सर्वोत्तम खोजी फिल्म

दि जर्नलिस्ट एंड द जिहादी

निर्माता मूविंग पिक्सर (इंडिया) लि. को रजत कमल और 50,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक रमेश शर्मा और अहमद जमाल को रजत कमल और 50,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

.....फिल्म में वाल स्ट्रीट जर्नल के पत्रकार डेनियल पर्ल की जघन्य हत्या से जुड़ी घटनाओं का पर्दाफाश किया गया है। गहन शोध और खोज के बाद बनाई गई इस फिल्म में एक आतंकवादी संगठन की कार्यप्रणाली की अंदरूनी जानकारी दी गई है।

BEST INVESTIGATIVE FILM

THE JOURNALIST AND THE JIHADI

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 50,000/- to PRODUCER MOVING PICTURE COMPANY (INDIA) LTD

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 50,000/- to DIRECTORS RAMESH SHARMA AND AHMAD JAMAL

CITATION

.....The film tries to uncover the sequence of events that led to the gruesome murder of the Wall Street Journal journalist Daniel Pearl. The film is very well researched and the investigation provides an insight into the working of a militant organisation.

रमेश शर्मा

अनेक पुरस्कारों से सम्मानित तथा फीचर फिल्मों, गैर-फीचर फिल्मों और टेलीविजन धारावाहिकों के निर्माता, निर्देशक रमेश शर्मा मूविंग पिक्चर (इंडिया) लि. के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक हैं। उनके पहले ही वृत्तचित्र **रुमटेक** को सर्वोत्तम लघु फिल्म का राष्ट्रीय पुरस्कार तथा कॉमनवेल्थ फिल्म एंड टेलीविजन फेस्टिवल में निर्णायक मंडल का विशेष पुरस्कार मिला। उनके कथाचित्र **न्यू दिल्ली टाइम्स** को निर्देशक के पहले सर्वोत्तम कथाचित्र सहित चार राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त हुए। यह फिल्म कार्लोवी वैरी समारोह में भी पुरस्कृत हुई। इन दिनों वे अमृता शेरगिल पर एक फिल्म का सह-निर्माण कर रहे हैं।

अहमद जमाल

लंदन इंटरनेशनल फिल्म स्कूल से एम. ए करने के बाद अहमद जमाल 15 वर्षों तक फर्स्ट टेक लि0 के लिए नाटक तथा वृत्तचित्र और बीबीसी, चैनल-4 तथा अन्य यूरोपीय प्रसारण संगठनों के लिए कार्यक्रम बनाते रहे। उनकी फिल्म **हू विल कास्ट दि फर्स्ट स्टोन** को सैन फ्रांसिस्को फिल्म समारोह में गोल्डन गेट पुरस्कार प्राप्त हुआ।



RAMESH SHARMA

Much awarded producer-director of non-feature and feature films and TV serials, Ramesh Sharma is the chairman and MD of Moving Picture (India) Ltd. His very first documentary **Rumtek** won the national award for best short film and a special jury prize at Commonwealth Film and Television Festival. His feature film **New Delhi Times** won four national awards including one for the best debut. It was also awarded at the Karlovy Vary festival. He is currently co-producing a feature on Amrita Shergill.

AHMAD JAMAL

After completing his MA from the London International Film School, Ahmad Jamal spent 15 years making dramas, documentaries for First Take Limited and programmes for BBC, Channel 4 and other European broadcasters. His film **Who Will Cast The First Stone** won the Golden Gate award at San Francisco Film Festival.

निर्णायक मंडल का विशेष पुरस्कार

भुलतिर खेरो और पूमरम

निर्माता अमलन दत्ता (*भुलतिर खेरो* के लिए) तथा पब्लिक सर्विस ब्रॉडकास्टिंग ट्रस्ट (पूमरम के लिए) प्रत्येक को रजत कमल एवं 12,500/- का नकद पुरस्कार और

निर्देशक अनिर्बन दत्ता (*भुलतिर खेरो* के लिए) तथा विपिन विजय (पूमरम के लिए) प्रत्येक को रजत कमल एवं 12,500/- का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

.....*भुलतिर खेरो* को कोलकाता के शानदार चित्रण के लिए। फिल्म में दृश्यों और ध्वनियों, सुगंधों और कथाओं तथा मिथकों और स्मृतियों का ऐसा संयोजन किया गया है जो वास्तविक होते हुए भी मायावी लगता है।

.....*पूमरम* को मासिक धर्म से जुड़े कर्मकांड, लाल रंग तथा मानवीय स्वभाव के बीच संबंधों को उजागर करने के उद्देश्य से दृश्य शिल्प के सृजनात्मक प्रयोग के लिए। युवा महिलाओं के रूप में मुख्य चरित्रों के आंतरिक जीवन तथा रक्त के साथ उनके अभिन्न संबंध की खोज के प्रयास के कारण फिल्म दर्शकों को बांधे रखती है।

SPECIAL JURY AWARD

BHULTIR KHERO and POOMARAM

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 12,500/- to PRODUCERS AMLAN DATTA (for Bhultir Khero) and PUBLIC SERVICE BROADCASTING TRUST (for Poomaram)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 12,500/- to Directors ANIRBAN DATTA (for Bhultir Khero) and VIPIN VIJAY (for Poomaram)

CITATION

.....*To Bhultir Khero* for its brilliant evocation of Kolkata. The film brings out sights and sounds, smells and stories, myths and memories in a manner that is realistic and yet magical.

.....*To Poomaram* for its creative use of visual crafts to reflect on the relationship between menstrual rituals, the colour red and nature of human existence. The film engages the audience very deeply in its experimental exploration of the inner life of young women protagonists and their unique relationship with blood.

अमलन दत्ता

भारतीय फिल्म एवं टेलीविजन संस्थान, पुणे से गौशन पिव्बर फोटोग्राफी में विशेषज्ञता के साथ फिल्म डिप्लोमा प्राप्त करने के बाद से अमलन दत्ता अपनी फिल्म निर्माण कंपनी एनिमैजीनियर के बैनर तले स्वतंत्र रूप से फिल्में बना रहे हैं। उन्होंने *एवरीथिंग रिमेन्स*, *सांग आफ माउंटेन्स* और *कोककादूडल डू* जैसी फिल्में बनाई हैं। उन्होंने *डाट इन फार मोशन* फिल्म भी बनाई है। इन दिनों वे कथाचित्र की लंबाई वाला वृत्त चित्र *वन डे अहेड आफ डेगोक्रेसी* बना रहे हैं। इसके अलावा वे फोटो आर्ट इन्स्टालेशन की प्रायोगिक योजना *आर्ट इन दि एज आफ डिजिटल क्लोनिंग* पर काम कर रहे हैं।

अनिबन दत्ता

अनिबन दत्ता ने सत्यजित रे फिल्म एवं टेलीविजन संस्थान, कोलकाता से निर्देशन और पटकथा लेखन में डिप्लोमा किया है। उनकी पहली ही फिल्म *भुलतिर खेरो* को केरल के एस आई जी एन एस 07, समारोह में सर्वोत्तम वृत्तचित्र का पुरस्कार मिला। उनकी हाल की फिल्म *डाट इन फार मोशन* का एम्सटर्बन में आई जी एफ ए 08 समारोह में प्रीमियम हुआ और उसे प्रतिष्ठित जान वुमैन फंड प्राप्त हुआ।

पब्लिक सर्विस ब्रॉडकास्टिंग ट्रस्ट

पीएसबीटी एक गैरलाभकारी न्यास है जो प्रसारण की सच्ची संस्कृति को बढ़ावा देने वाली शक्तियों का संगम है। यह संगठन सभी लोकतांत्रिक मूल्यों का प्रतिनिधि है और सामाजिक दृष्टि से जागरूक व सक्रिय है। यह न्यास भारत में प्रसारण की नई शब्दावली तथा नई गतिविधियों का निर्माण करना चाहता है। अनुभवी फिल्मकार राजीव मेहरोत्रा इसके प्रबंध न्यासी हैं। न्यास ने लगभग 300 वृत्तचित्र बनाए हैं, 50 से अधिक राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त किए हैं और 300 से अधिक बार इसकी फिल्में का राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय समारोहों में प्रदर्शन हुआ है।

विपिन विजय

विपिन विजय ने सत्यजित रे फिल्म एवं टेलीविजन संस्थान, कोलकाता से डिप्लोमा प्राप्त किया है। उनकी फिल्में राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय समारोहों में दिखाई जा चुकी हैं और उन्हें देश-विदेश में पुरस्कार भी मिले हैं, जिनमें रोटर्डम फिल्म समारोह 2007 में टाइगर पुरस्कार, एन आई एफएफ, गोल्डन पल तथा कोडक पुरस्कार उल्लेखनीय हैं। 2003 में उन्हें ब्रिटिश फिल्म इंस्टीट्यूट तथा इंडिया आफिस रिकार्ड, लंदन में शोध करने के लिए चार्ल्स वेल्स आर्ट पुरस्कार से नवाजा गया। इन दिनों वे हर्बर्ट बाल्स फिल्म फंड रोटर्डम की मदद से एक फीचर फिल्म के निर्माण में जुड़े हैं। उन्हें कला और संस्कृति के क्षेत्र में उपलब्धियों के लिए संस्कृति पुरस्कार भी मिला है। उनकी प्रमुख फिल्में हैं: *तत्वगति*, *हवामहल*, *वीडियो गेम* और *क्षुरस्यधारा*।



AMLAN DATTA

A diploma holder in films with specialisation in motion picture photography from FTII, Pune, Amalan has been making films independently under his production company Animagineer. He has directed films like *Everything Remains*—a film on Chitpur Road, *Song of the Mountains* and *Cockadoodle Do*. He is currently working on a feature length documentary *One Day Ahead of Democracy* and developing an experimental photo-art-installation project called *Art in the Age of Digital Cloning*.

ANIRBAN DATTA

Anirban Datta is a diploma holder in direction and screenplay-writing from SRFTI, Kolkata. His debut film *Bhultir Khero* won the John Abraham award for best documentary at SIGNS'07, Kerala. His recent film...in for motion received the prestigious Jan Vrijman Fund and premiered at IDFA, 08, Amsterdam.

PUBLIC SERVICE BROADCASTING TRUST

PSBT is a not for profit trust that represents the confluence of energies to foster a shared public culture of broadcasting that is as exciting and cutting edge, as it is socially responsive and representative of democratic values. PSBT seeks to situate a new vocabulary and activism at the very heart of broadcasting in India.

VIPIN VIJAY

A diploma holder from SRFTI, Kolkata, Vipin Vijay's films have been widely shown in national and international festivals and have won him several national awards as well as international recognition like the Tiger award at Rotterdam film festival, 2007, Golden Pearl, HIFF, Kodak award among others. In 2003 he won the Charles Wales Arts award for research at the British Film Institute and India Office Records, London. At present he is working on a feature film with support from Hubert Bals Film Fund, Rotterdam. He has received the Sanskriti award for achievement in the field of art and culture. His prominent films are *Tatwamasi*, *Hawamahal*, *Video Game* and *Kshurasyadhara*.

सर्वोत्तम लघु कल्पित फिल्म

उधेड़ बुन

निर्माता भारतीय फिल्म एवं टेलीविजन संस्थान, पुणे को रजत कमल और 50,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक सिद्धार्थ सिन्हा को रजत कमल और 50,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

.....फिल्म जीवन की वासनाओं से दो-चार हो रहे एक युवा लड़के की उधेड़ बुन को सृजनात्मक ढंग से प्रस्तुत करती है। फिल्म में युवा होते मन में उभर रहे काम भावों को भी चित्रित किया गया है।

BEST SHORT FICTION FILM

UDHEDH BUN

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 50,000/- to PRODUCER FILM AND TELEVISION INSTITUTE OF INDIA, PUNE

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 50,000/- to DIRECTOR SIDDHARTH SINHA

CITATION

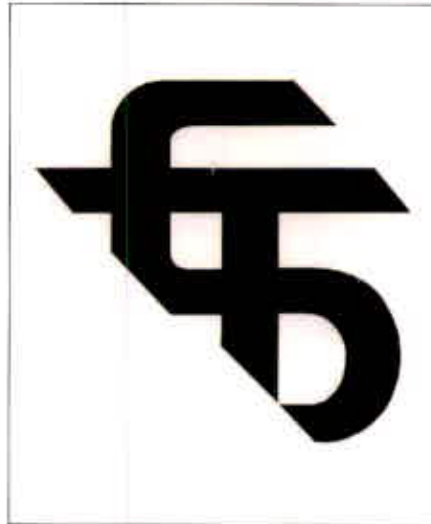
.....*Udhedh Bun is a creative portrayal of a young boy's dilemma as he comes face to face with the temptations of life. The film evocatively explores the erotic under-currents in this coming-of-age tale.*

भारतीय फिल्म एवं टेलीविजन संस्थान, पुणे

एफटीटीआई भारत सरकार के सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय के अंतर्गत स्वायत्त संस्था हैं। इसकी स्थापना 1960 में पुणे के पूर्व प्रभात स्टुडियो में की गई इसलिए यह श्रेष्ठ फिल्म निर्माण की समृद्ध परंपरा का वारिस है। फिल्म निर्माण तथा टेलीविजन कार्यक्रम तैयार करने में प्रशिक्षण का अपना उद्देश्य पूरा करने में यह पूरी तरह खरा उतरा है। इस समय संस्थान न केवल भारत बल्कि एशिया और यूरोप में श्रेष्ठता के केन्द्र के रूप में जाना जाता है। संस्थान के छात्रों द्वारा बनाई गई फिल्मों देश के समारोहों में प्रदर्शित की जाती है और उन्हें राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कार मिले हैं। संस्थान से शिक्षा लेकर सिने जगत में नाम कमाने वालों में सुभाष घई, मणि कौल, नसीरुद्दीन शाह, जया बच्चन, रज़ा मुराद, शत्रुघ्न सिन्हा, मिथुन चक्रवर्ती, टॉम आल्टर, अदूर गोपालकृष्णन, संजय लीला भंसाली, राजकुमार हिरानी, विधु विनोद चोपड़ा आदि शामिल हैं।

सिद्धार्थ सिन्हा

सिद्धार्थ सिन्हा ने भारतीय फिल्म एवं टेलीविजन संस्थान, पुणे से निर्देशन में डिप्लोमा प्राप्त किया है। उनकी डिप्लोमा फिल्म *उधेड़ बुन* को बर्लिन समारोह, 2008 में सिल्वर बियर मिला और उसके बाद से यह अनेक अन्तर्राष्ट्रीय समारोहों में दिखाई जा चुकी है। सिन्हा ने 2006 में बर्लिनाले टैलेंट कैंपस में भाग लिया। उनके लघु वृत्त-कथा चित्र *रंगबेला* का 2006 में एम्सटर्डन वृत्तचित्र समारोह में प्रीमियर हुआ।



FILM AND TELEVISION INSTITUTE OF INDIA, PUNE

The Film and Television Institute of India (FTII), established in 1960 on the erstwhile Prabhat Studio premises at Pune, has lived up to its objective in imparting training in film making and television programme production. Today FTII is considered a Center of Excellence not only in India but also in Asia and Europe. Films made by the students of the Institute are entered in Festivals both in India and abroad and have won several national and international awards. The alumni of FTII include Subhash Ghai, Mani Kaul, Naseeruddin Shah, Jaya Bachchan, Raza Murad, Shatrughan Sinha, Mithun Chakraborty, Tom Alter, Adoor Gopalakrishnan, Sanjay Leela Bhansali, Raj Kumar Hirani and Vidhu Vinod Chopra among others.

SIDDHARTH SINHA

Siddharth Sinha is a diploma-holder in direction from FTII, Pune. His diploma film *Udhedh Bun* won the Silver Bear at Berlin, 2008, and has since then travelled to several international film festivals. He has participated in the Berlinale Talent Campus in 2006. His short docu fiction film *Rangbela* was premiered at the international documentary film festival of Amsterdam, 2006.

परिवार कल्याण पर सर्वोत्तम फिल्म

मेकिंग दि फेस

निर्माता पब्लिक सर्विस ब्राडकास्टिंग ट्रस्ट को रजत कमल और 50,000/-रूपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक सुवेंदु चटर्जी को रजत कमल और 50,000/- रूपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

....पुरस्कार राजनीतिक अस्थिरता के शिकार एक राज्य में यौन संबंधों की समस्या को बारीकी से परखने के लिए दिया गया है। फिल्म में यौन विषयक समझ और ज्ञान का सहज और रचनात्मक चित्रण करते हुए एक पारिवारिक व्यवस्था में परिवर्तनकारी सक्रियता को दर्शाया गया है। इससे घर के रोजमर्रा के कामों पर कोई असर नहीं पड़ता क्योंकि इसका मुख्य पात्र जाना-पहचाना मेक-अप कलाकार है।

BEST FILM ON FAMILY WELFARE

MAKING THE FACE

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 50,000/- to PRODUCER PUBLIC SERVICE BROADCASTING TRUST

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 50,000/- to DIRECTOR SUVENDU CHATTERJEE

CITATION

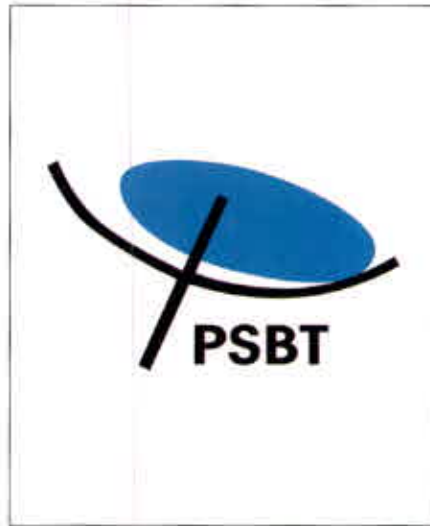
....for its multi-layered exploration of the issue of alternative sexuality in a politically troubled state; celebrating this sexual orientation in a spontaneous manner, the film depicts it as a normal proclivity in a family setup. This, in no way, effects one's daily chores, particularly as the protagonist is a make-up artist of great acceptance.

पब्लिक सर्विस ब्राडकास्टिंग ट्रस्ट

पीएसबीटी एक गैरलाभकारी न्यास है जो प्रसारण की साझी संस्कृति को बढ़ावा देने वाली शक्तियों का संगम है। यह संगठन सभी लोकतांत्रिक मूल्यों का प्रतिनिधि है और सामाजिक दृष्टि से जागरूक व सक्रिय है। यह न्यास भारत में प्रसारण की नई शब्दावली तथा नई गतिविधियों का निर्माण करना चाहता है। अनुभवी फिल्मकार राजीव मेहरोत्रा इसके प्रबंध न्यासी हैं। न्यास ने लगभग 300 वृत्तचित्र बनाए हैं, 50 से अधिक राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त किए हैं और 300 से अधिक बार इसकी फिल्मों का राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय समारोहों में प्रदर्शन हुआ है।

सुवेंदु चटर्जी

सुवेंदु चटर्जी वृत्तचित्र निर्माता के साथ-साथ छायाकार, मीडिया उद्यमी और मानव अधिकार कार्यकर्ता भी हैं। अनेक वृत्तचित्रों के लिए पटकथा लेखन के अलावा उन्होंने दो वृत्तचित्रों का निर्माण भी किया है। उनकी फिल्म *एक्रास दि रीवर इंटू दि फोरेस्ट* को 1991 में लीपजिग में निर्णोक मंडल का विशेष पुरस्कार मिला। उन्होंने चित्रकार देवव्रत मुखोपाध्याय पर एक जीवनी फिल्म *देवव्रत* भी बनाई। *मेकिंग दि फेस* मुंबई अन्तर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह और वन वर्ल्ड फिल्म फेस्टिवल सहित कई समारोहों में दिखाई जा चुकी है।



PUBLIC SERVICE BROADCASTING TRUST

PSBT is a not for profit trust that represents the confluence of energies to foster a shared public culture of broadcasting that is as exciting and cutting edge, as it is socially responsive and representative of democratic values. PSBT seeks to situate a new vocabulary and activism at the very heart of broadcasting in India. The Trust has made around 300 documentaries which have won more than 50 national and International Awards and their films have been screened more than 300 times in National and International Film Festivals.

SUVENDU CHATTERJEE

Suvendu Chatterjee is a documentary filmmaker, photographer, media entrepreneur and human rights activist. Besides writing scripts for several documentaries Suvendu has made two documentaries. *Across the River into the Forest* won special jury award in Leipzig in 1991 and a biographical film *Debabrata* on painter Debabrata Mukhopadhyay. *Making The Face* has been screened in several film festivals including the Mumbai International Film Festival and One World Film Festival.



सर्वोत्तम निर्देशन

जयराज को वेल्लापोकातिल (मलयालम) के लिए

निर्देशक जयराज को स्वर्ण कमल और 1,00,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

....पुरस्कार एक स्वामीभक्त कुत्ते की दर्दनाक कहानी को अत्यंत संक्षिप्त रूप में चित्रित करने के लिए दिया गया है।

BEST DIRECTION

JAYARAJ for VELLAPOKATHIL (Malayalam)

Swarna Kamal and a cash prize of Rs 1,00,000/- to DIRECTOR JAYARAJ

CITATION

....for his minimalist portrayal of the traumatic tale of a faithful canine.

जयराज

अनेक राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त करने वाले जयराज परंपरा से हटकर फिल्में बनाने वाले फिल्मकार हैं। किसी एक तरह की फिल्में बनाकर अपनी निजी छवि की पहचान विकसित करने की बजाय वे व्यावसायिक तथा विचार-प्रधान दोनों प्रकार की फिल्में बनाते हैं। उन्होंने *करुणम* के लिए स्वर्ण कमल प्राप्त किया। उन्हें *करुणम* तथा *कालियात्तम* के लिए सर्वोत्तम निर्देशक का और *दैवनम्मातिल* के लिए राष्ट्रीय एकता पर सर्वोत्तम फिल्म का पुरस्कार मिल चुका है।



JAYARAJ

A winner of several national and international awards Jayaraj remains a non-conformist as far as his films are concerned. Instead of sticking to a particular genre as a stamp of his individuality, he makes both commercial and thought-provoking films. He won the Golden Peacock with *Karunam*. He has won the national award for best director for *Karunam* and *Kaliyattam* and for national integration for *Daivanammathil*.

सर्वोत्तम छायांकन

सविता सिंह को क्रमशः (हिन्दी) के लिए

छायाकार सविता सिंह को रजत कमल और 50,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रोसेसिंग लेबोरेटरी एडलैब्स फिल्मस लिमिटेड, मुम्बई को रजत कमल एवं 50,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

...पुरस्कार ऐसे अजीबोगरीब और जादुई संसार की रचना करने के उद्देश्य से लेंसों और प्रकाश के प्रभावशाली उपयोग के लिए दिया गया है जो एक खास तरह की नमी और धुंध से आच्छादित है और आकर्षक सिनेमाई रचनाओं के सुसंगत प्रदर्शन से इसकी शान में चार चांद लग जाते हैं।

AWARD FOR BEST CINEMATOGRAPHY

SAVITA SINGH for KRAMASHA (Hindi)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 50,000/- to CINEMATOGRAPHER SAVITA SINGH

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 50,000/- to LABORATORY ADLABS FILMS LTD, MUMBAI

CITATION

.....for her arresting use of lenses and lighting in the creation of a strange and magical world, full of a certain atmospheric dampness and mistiness, further enhanced by a consistent exhibition of striking cinematic compositions.

सविता सिंह

पत्रकार से छायाकार बनी सविता सिंह ने 2007 में भारतीय फिल्म एवं टेलीविजन संस्थान, पुणे से स्नातक की डिग्री प्राप्त की। छात्र जीवन में बनी उनकी फिल्मों को कई पुरस्कार मिले। उन्हें जाने-माने फोटोग्राफर विमोश जिग्मंड द्वारा संचालित प्रतिष्ठित बुडापेस्ट सिनेमैटोग्राफी मास्टर क्लास वर्कशाप में विद्वान की हैसियत से भाग लेने को आमंत्रित किया गया। कोडक फिल्म स्कूल प्रतियोगिता में सविता सिंह को राष्ट्रीय विजेता घोषित किया गया। इसके बाद उन्होंने ग्रेटर एशिया पैसिफिक प्रतियोगिता में भारत का प्रतिनिधित्व किया और दूसरा स्थान प्राप्त किया। सविता इन दिनों मुंबई में स्वतंत्र छायाकार के रूप में काम कर रही हैं।



SAVITA SINGH

A journalist turned cinematographer, Savita Singh graduated in 2007 from FTII, Pune. Student films shot by her have won numerous awards. She was invited as a scholar at the prestigious Budapest Cinematography Master Class workshop conducted by renowned cinematographer Vimosh Zigmond. She was the national winner of the Kodak film school completion. Thereafter she went to represent India in the Greater Asia Pacific competition and was adjudged the first runner up. Savita is now working as an independent cinematographer in Mumbai.

ADLABS

सर्वोत्तम ध्वनि आलेखन

अजीत सिंह राठौर को क्रमशः (हिन्दी) के लिए

ध्वनि आलेखक अजीत सिंह राठौर को रजत कमल और 50,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

...अभिनव ध्वनि संयोजन से फिल्म की संप्रेषणीयता बढ़ जाती है और दर्शक परीकथाओं से युक्त मायावी वातावरण में पहुंच जाते हैं।

BEST AUDIOGRAPHY

AJIT SINGH RATHORE for KRAMASHA (Hindi)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs-50,000/- to AUDIOGRAPHER AJIT SINGH RATHORE

CITATION

...The innovative sound design enhances the mood of the film and draws one into the magical ambience replete with fairy tales.

अजीत सिंह राठौर

झाबुआ के एक आदिवासी गांव में जन्मे अजीत सिंह की शुरु से ही संगीत में रुचि थी जिससे प्रेरित होकर उन्होंने 2007 में भारतीय फिल्म एवं टेलीविजन संस्थान, पुणे से ध्वनि आलेखन के पाठ्यक्रम में प्रशिक्षण लिया। इन दिनों वे मुंबई में कार्यरत हैं।



AJIT SINGH RATHORE

Born in the tribal village of Jhabua, Ajit Singh Rathore's interest in music made him do a course in audiography from FTII in 2007. Currently he is working in Mumbai.

सर्वोत्तम संपादन

सैकत रे को होप डाइज लास्ट इन वार (अंग्रेजी) के लिए

फिल्म संपादक सैकत रे को रजत कमल और 50,000/-रूपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

....पुरस्कार अतीत और वर्तमान के विविध तत्वों के सृजनात्मक समन्वय और सच्ची भावनाओं को जागृत करने वाले दृश्यों की सहज-सरल प्रस्तुति के लिए दिया गया है।

AWARD FOR BEST EDITING

SAIKAT RAY for HOPE DIES LAST IN WAR (English)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 50,000/- to EDITOR SAIKAT RAY

CITATION

....for its creative blending of various elements of the past and present, as also for its seamless flow of images that evoke genuine emotion.

सैकत रे

सैकत रे ने सत्यजित रे फिल्म एवं टेलीविजन संस्थान, कोलकाता से संपादन में विशेषज्ञता के साथ डिप्लोमा प्राप्त किया है। वे पिछले पांच वर्षों से फ्रीलांस फिल्म संपादक के रूप में काम कर रहे हैं। उनकी अन्य महत्वपूर्ण फिल्मों में *वर्णपरिचय*, *जर्नल्स आफ विली स्कूल*, *रूपबन*, *माई बॉडी माई वीपन*, *सांग्स आफ दि सेंक्चुरी*, *अंडरस्टैंडिंग ट्रैफिकिंग* आदि शामिल हैं।



SAIKAT RAY

A diploma holder from SRFTI, Kolkata, with specialisation in editing Saikat Ray has been working as a freelance editor for the past five years. Besides *Hope Dies Last in War* his other important films include *Varnaparichay*, *Journals of a Wily School*, *Roopban*, *My Body My Weapon*, *Songs of the Sanctuary*, *Understanding Trafficking* etc.

सर्वोत्तम संगीत निर्देशन

जुबीन गर्ग को ईकोज़ आफ साइलेंस (अंग्रेजी) के लिए

संगीत निर्देशक जुबीन गर्ग को रजत कमल और 50,000/-रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

.....संगीत के कुशल उपयोग से पौरी के संसार का खालीपन और उभर कर सामने आता है। संगीत मद्धिम होते हुए भी बहुत सशक्त है और कहानी को सहजता के साथ अभिव्यक्त करता है।

AWARD FOR BEST MUSIC DIRECTION

ZUBEEN GARG for ECHOES OF SILENCE (ENGLISH)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 50,000/- to MUSIC DIRECTOR ZUBEEN GARG

CITATION

.....The emptiness of Pori's world is enhanced through the effective use of music, which is understated yet powerful, thus blending seamlessly into the narrative.

जुबीन गर्ग

जुबीन गर्ग असम के गायक और संगीत निर्देशक हैं और बालीवुड तथा असमिया फिल्म संगीत में मुख्य योगदान दे रहे हैं। वे ढोल, दोतोर, मँडोलिन, की बोर्ड तथा कई अन्य वाद्य यंत्र बजाते हैं। जुबीन ने लगभग 40 एल्बम बनाए हैं और 24 असमिया फिल्मों में संगीत देने के अलावा हिंदी, तमिल, तेलुगु, कन्नड़, पंजाबी, बंगला, उड़िया, मराठी, नेपाली तथा अन्य कई भाषाओं में 9000 से अधिक गीत गाए हैं। *गैंगस्टर* फिल्म के लोकप्रिय गीत 'या अली' से उनका नाम भारत भर में लोगों की ज़बान पर है।



ZUBEEN GARG

Zubeen Garg is a singer and composer from Assam, India and has been prominent in Bollywood and Assamese music scene. He plays dhols, dotora, mandolin, keyboard and various percussion instruments. Zubeen has about 40 albums to his credit, has done music for over 24 Assamese movies and sung more than 9000 songs in various languages including Hindi, Tamil, Telugu, Kannada, Punjabi, Oriya, Bengali, Marathi, Nepali, and many others. The superhit song *Ya Ali* from the movie *Gangster* made him a household name across India.

सर्वोत्तम प्रकथन/वॉयस ओवर

वाणी सुब्रह्मणियन को अयोध्या गाथा (अंग्रेजी और हिन्दी) के लिए

संगीत निर्देशक वाणी सुब्रह्मणियन को रजत कमल और 50,000/-रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

....अयोध्या गाथा का सशक्त और मानवीय प्रकथन अयोध्या के अतीत, वर्तमान और अनिश्चित भविष्य की कहानी को ऐसे सुंदर ढंग से व्यक्त करता है जो बिना कोई कठोर प्रभाव छोड़े आपके दिल को छू लेता है।

AWARD FOR BEST NARRATION/VOICE OVER

VANI SUBRAMANIAN for AYODHYA GATHA (ENGLISH AND HINDI)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 50,000/- to NARRATOR VANI SUBRAMANIAN

CITATION

....The powerful and humane narration of Ayodhya Gatha weaves together the story of Ayodhya—its past, present and uncertain future—in a manner that touches you without overpowering you.

वाणी सुब्रह्मणियन

वाणी सुब्रह्मणियन 1990 के दशक के मध्य से वृत्तचित्र निर्माता के रूप में काम कर रही हैं। इससे पहले वे कापी राइटर थीं। उन्होंने कृषि, अर्थव्यवस्था, नृत्य, शहरी विकास, प्राथमिक स्कूली शिक्षा जैसे विविध विषयों पर फिल्में बनाई हैं। इन फिल्मों को अनेक पुरस्कार मिले तथा ये देश-विदेश के समारोहों में दिखाई गई हैं। उनकी फिल्मों में *गील्स रेडी*, *पढ़ोगे लिखोगे होंगे नवाब*, *क्लास ऑफ 2001* तथा *न्यू इम्प्रूव्ड दिल्ली* शामिल हैं।



VANI SUBRAMANIAN

A one-time copy-editor Vani Subramanian has been a documentary filmmaker since the mid-90s. Her films have been on a range of issues—from agricultural economy to dance, urban development to primary school education. They have been honoured at several film festivals and screened nationally as well as internationally. Her films include *Meals Ready*, *Padhoge Likhoge Hoge Nawab*, *Class of 2001* and *New Improved Delhi*.

पुरस्कार जो नहीं दिए गए।

सर्वोत्तम गवेषणा/साहसिक फिल्म

सर्वोत्तम कला/सांस्कृतिक फिल्म

सर्वोत्तम प्रोत्साहन फिल्म

सर्वोत्तम कृषि फिल्म

सर्वोत्तम कार्टून फिल्म

AWARDS NOT GIVEN

Best Exploration/Adventure Film

Best Arts/Cultural Film

Best Promotional Film

Best Agricultural Film

Best Animation Film

सिनेमा पर सर्वोत्तम
लेखन पुरस्कार

Awards for the Best
Writing on Cinema

सिनेमा पर सर्वोत्तम पुस्तक

फ्राम राज टू स्वराज : दि नॉन फिक्शन फिल्म इन इंडिया

लेखक बी.डी. गर्ग को स्वर्ण कमल और 75,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रकाशक पेंग्विन बुक्स इंडिया प्रा. लि. को स्वर्ण कमल और 75,000/- रुपये का नुकद पुरस्कार

प्रशस्ति

....गैर-कथाचित्र सिनेमा के सामाजिक, राजनीतिक तथा सांस्कृतिक पहलुओं के गहन एवं ज्ञानप्रद अध्ययन के लिए।

BEST BOOK ON CINEMA

FROM RAJ TO SWARAJ : THE NON FICTION FILM IN INDIA

Swarna Kamal and a cash prize of Rs 75,000/- to author **B.D. Garga**

Swarna Kamal and a cash prize of Rs 75,000/- to publisher **Penguin Books India Pvt Ltd**

CITATION

....*The award is given for its engaged and illuminating study of non-feature cinema in its social, political and cultural context.*

बी.डी. गर्ग

बी.डी. गर्ग ने फिल्म निर्माण का प्रारंभिक प्रशिक्षण जाने-माने निर्माता-निर्देशक वी.शांताराम से लिया। गर्ग ने पहला राजनीतिक वृत्तचित्र *स्टॉर्म ओवर कश्मीर* 1949 में बनाया। 1952 से 1958 तक उन्होंने यूरोप की विभिन्न फिल्म यूनिटों और मास्फिल्म स्टुडियो, मास्को में काम किया। वे 50 से अधिक वृत्तचित्रों का निर्माण, निर्देशन और लेखन कर चुके हैं। इनमें *सत्यजित रे, टाइटिंग ऑफ दि राज* तथा *रोड टू फ्रेंडशिप* विशेष उल्लेखनीय हैं। उन्होंने भारतीय सिनेमा की स्वर्ण जयंती के सिलिसिले में 1967 में पहला फिल्म संग्रह बनाया। 1967 में वे विश्व सिनेमा के इतिहास पर यूनेस्को की विशेषज्ञ समिति के सदस्य बने। 1969 में उन्होंने पेरिस में भारतीय सिनेमा के सिंहावलोकन का आयोजन किया। वे राष्ट्रीय फिल्म संग्रहालय, पुणे के संस्थापक सदस्य हैं। वे फरवरी 1996 में मुंबई अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह में वृत्तचित्र निर्माण के क्षेत्र में जीवनपर्यंत शानदार योगदान के लिए पहले वी.शांताराम पुरस्कार से अलंकृत किए गए। इन दिनों वे गोवा में रहते हैं।

पेंग्विन बुक्स इंडिया प्रा. लि.

यह भारतीय उपमहादीप की सबसे बड़ी प्रकाशन संस्था है जो हिंदी, अंग्रेजी, मराठी और उर्दू में पुस्तकें प्रकाशित करती है। इसने 1987 में 7 पुस्तकों के प्रकाशन के साथ व्यवसाय शुरू किया। इस समय यह हर वर्ष 200 से अधिक टाइटिल प्रकाशित कर रहा है। इसकी 2000 से अधिक प्रकाशित पुस्तकों की सूची में पाक शास्त्र से लेकर धर्म और राजनीति तक के विविध विषयों की पुस्तकें शामिल हैं। पेंग्विन के लगभग सभी बड़े लेखक प्रमुख साहित्यिक पुरस्कारों से सम्मानित हुए हैं जिनमें नोबेल, मेगसेसाय, ज्ञानपीठ, बुकर, साहित्य अकादमी और कामनवेल्थ राइटर्स पुरस्कार शामिल हैं। इसके कुछ लेखक पदम विभूषण और भारत के सबसे बड़े नागरिक सम्मान भारत रत्न से भी अलंकृत हो चुके हैं।



B.D. GARGA

B.D. Garga received his early training in filmmaking from eminent producer-director V. Shantaram. Garga's first political documentary, *Storm Over Kashmir* was made in 1949 and from 1952-58 he worked with various film units in Europe and Mosfilm Studios, Moscow. He has written, produced and directed over fifty documentaries, the famous among them are *Satyajit Ray, Writing off the Raj* and *Road to Friendship*. He produced the first film anthology of Indian cinema to commemorate its Golden Jubilee. In 1967 he was a member of the UNESCO committee of experts on the history of world cinema. He organised the first retrospective of Indian cinema at Cinematheque Francaise in Paris in 1969. He is a founder member of the National Film Archive, Pune. He was honoured with the first V Shantaram award for lifetime achievement in documentary filmmaking at the Mumbai International Film Festival in February 1996. He currently resides in Goa.

PENGUIN BOOKS INDIA

It is the largest English language publisher in the subcontinent, publishing books in English, Hindi, Marathi and Urdu. It began publishing in 1987 with seven titles. Today, the company publishes more than 200 new titles every year and has an active backlist of over 2000 titles—from cookery to religion and politics. Penguin's biggest authors have won virtually every major literary award, including the Nobel Prize, the Magsaysay, the Jnanpith, the Booker, the Sahitya Academy award and the Commonwealth Writers' Prize. Several of its authors are also recipients of the Bharat Ratna and the Padma Vibhushan, India's highest civilian honours.

सर्वोत्तम फिल्म समीक्षक

वी.के. जोसेफ

फिल्म समीक्षक वी.के. जोसेफ को स्वर्ण कमल और 75,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

.....क्षेत्रीय, राष्ट्रीय तथा विश्व सिनेमा संबंधी लेखन में बौद्धिक एवं सौंदर्यशास्त्रीय निष्ठा के लिए।

BEST FILM CRITIC

V.K. JOSEPH

Swarna Kamal and a cash prize of Rs 75,000/- to V.K. Joseph

CITATION

.....The award is given for his intellectual and aesthetic integrity in writing about regional, national and world cinema.

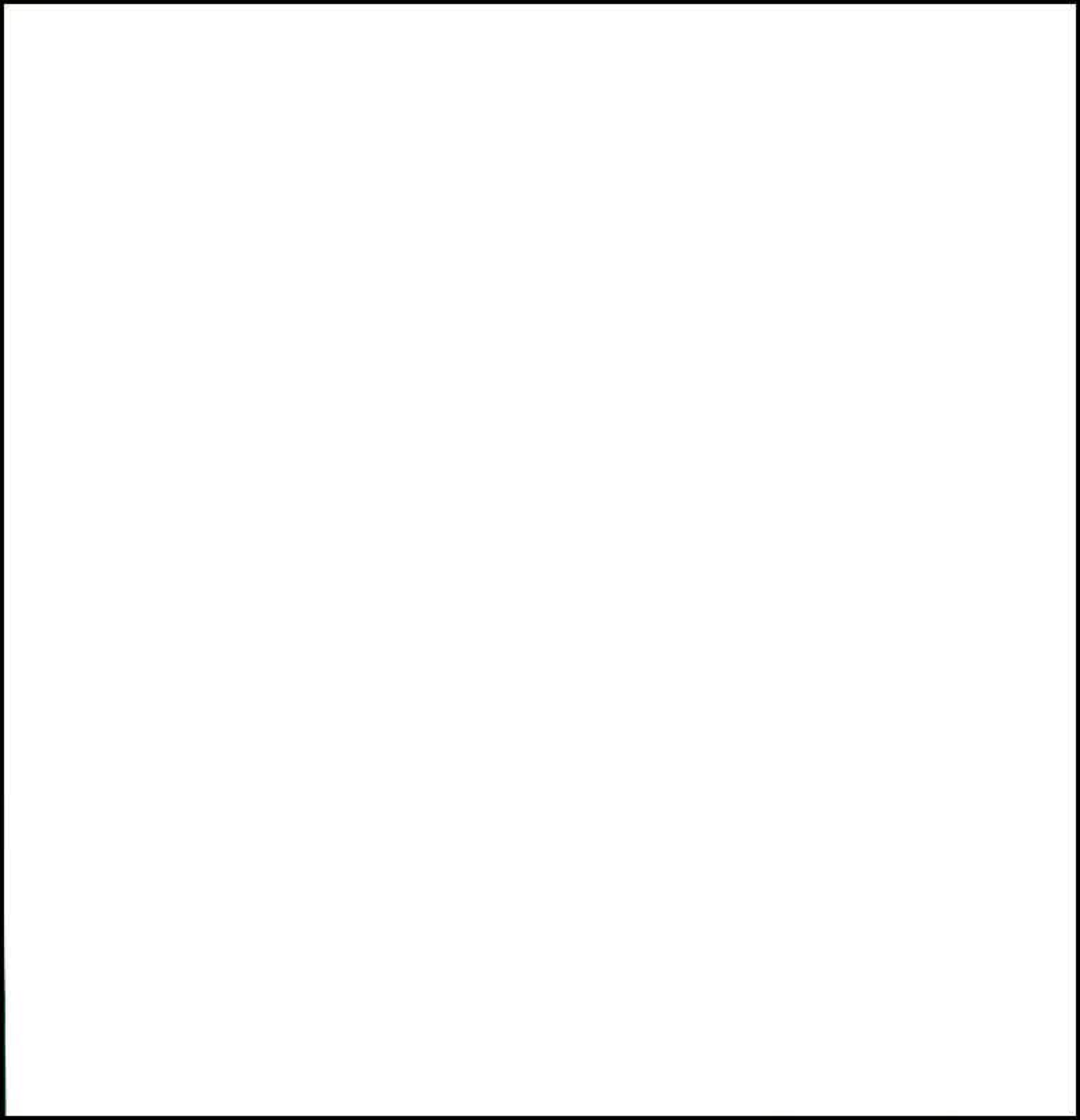
वी.के. जोसफ

फिल्म समीक्षक और कार्यकर्ता वी.के. जोसेफ पत्र-पत्रिकाओं में सिनेमा, मीडिया तथा सांस्कृतिक विषयों पर लिखते रहते हैं। उन्हें फिल्मों के बारे में पुस्तक *सिनेमायुम प्रथ्या सस्थरावुम* (फिल्म तथा विचारधारा) पर 1997 में राज्य सरकार का पुरस्कार तथा अंतर्राष्ट्रीय सम्मान मिले। वे केरल में फिल्म तथा टेलीविजन के प्रोत्साहन के लिए काम कर रही शैक्षणिक संस्था राज्य चलचित्र अकादमी के उपाध्यक्ष हैं। वे केरल के अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह के मुख्य संयोजक रहे हैं और फेडरेशन आफ फिल्म सोसायटीज़ आफ इंडिया के उपाध्यक्ष हैं।



V.K. JOSEPH

A film critic and activist V.K. Joseph has written on films, media and cultural issues in periodicals. He won the state government and international awards for his book, *Cinamayum Prathya Sasthravum* (Film and Ideology) in 1997. He is the vice-chairman of the Kerala State Chalchitra Academy, an academic institution for the promotion of film and television. He worked as the chief coordinator of the International Film Festival of Kerala and is the vice president of the Federation of Film Societies of India.



कथासार :
कथाचित्र

Synopses :
Feature Films

अंतर्द्वन्द्व

हिंदी/114 मिनट/35 एम.एम./रंगीन

निर्माता और निर्देशक सुशील राजपाल
पटकथा अमिताभ वर्मा छायांकन मलय
रे संपादन असीम सिन्हा संगीत बापी
तुतुल कलाकार राज सिंह चौधरी, स्वाति
सेन, अखिलेंद्र मिश्र, जया भट्टाचार्य।

बिहार में वर्षों से एक अजीब कुरीति
प्रचलित है जिसे 'पकरउवाह शादी' कहते
हैं। इसके अंतर्गत विवाह योग्य किसी ऐसे
लड़के को, जो जैसे भारी दहेज की मांग
करता हो, लड़की वाले अगवा कर लेते
हैं और बंदूक की नोक पर उसकी शादी
कर दी जाती है। पति-पत्नी को सहवास
करने को भी मजबूर किया जाता है।

अंतर्द्वन्द्व इसी कुरीति के संदर्भ में एक
लड़के रघुवीर की कहानी है जो इस तरह
के विवाह में फंस जाता है। रघुवीर अपने
पिता मधुकर शाही और ससुर महेंद्र बाबू
की घौंस में आकर जानकी नाम की
लड़की से शादी कर लेता है। लेकिन
शादी ज्यादा दिनों तक नहीं चल पाती।
एक ओर रघुवीर जानकी को छोड़ देता
है और दूसरी ओर जानकी घर छोड़कर
चली जाती है जिससे उसके पिता को
महसूस होता है कि जानकी की जिदगी
खराब करने के लिए वही जिम्मेदार है।



ANTARDWANDA

Hindi/114min/35mm/Colour

Producer and Director: Sushil Rajpal
Script: Amitabh Verma
Cinematography: Malay Ray **Editing:**
Aseem Sinha **Music:** Bapi Tutul **Cast:**
Rajsingh Chaudhury, Swati Sen,
Akhilendra Mishra, Jaya Bhattacharya

For years Bihar has witnessed a peculiar,
retrograde practice called 'Pakrauah
Shaadi' wherein an eligible young man,
who might otherwise demand hefty
dowry for his wedding, is kidnapped by

prospective bride's family and they are
married off at gunpoint. The couple is
also forced to consummate their wedding.
Set against this backdrop, *Antardwanda*
is the story of Raghuvir, one such
victim of 'Pakrauah Shaadi'. He is forced
to marry Janki after her father
Mahenderbabu is rebuffed by his father
Madhukar Shabi. The marriage doesn't
last long. While Raghuvir leaves Janki,
she walks out of her parent's house
making her father realise that he himself
is responsible for ruining his daughter's
life and happiness.

बालीगंज कोर्ट

बंगला/121 मिनट/35 एम.एम./रंगीन

निर्माता गणेश बागडिया निर्देशक पिनाकी चौधरी कहानी बानी बसु पटकथा सुब्रत चौधरी छायांकन सुनिर्मल मजूमदार संपादन शर्मिष्ठा झा संगीत अजय चक्रवर्ती, चंदन राय चौधरी कलाकार सौमित्र चटर्जी, ममता शंकर, सब्यसाची चक्रवर्ती।

इस फिल्म में वृद्धजनों के अकेलेपन की एक सामान्य शहरी समस्या को उठाया गया है और उसके खतरों तथा दुष्परिणामों की ओर इशारा किया गया है। इसमें एक अपार्टमेंट में रहने वाले प्रौढ़ और रिटायर्ड दंपतियों की दशा दिखाई गई है। इनमें से लगभग सभी घरों के बच्चे काम-धंधे के सिलसिले में बाहर चले गए हैं और मां-बाप के पास केवल बच्चों की यादें रह गई हैं। हालत तब गमगीन बन जाती है जब कुछ चोर किसमिस की पूर्व संध्या पर अपार्टमेंट के सबसे बुजुर्ग दंपति की हत्या कर देते हैं। इससे अपार्टमेंट के बाकी सभी निवासी सहम जाते हैं, क्योंकि उन्हें लगता है कि उनके साथ भी ऐसा ही हो सकता है। फिल्म में यह दर्शाया गया है कि आधुनिकता की तरफ दौड़ती दुनिया में किस तरह प्यार, मोहब्बत, रिश्ते और बच्चों का प्यार जैसे मूल्य निरर्थक होते जा रहे हैं।



BALLYGUNGE COURT

Bengali/121min/35mm/Colour

Producer: Ganesh Bagaria **Director:** Pinaki Chaudhuri **Story:** Bani Basu
Script: Subrata Chaudhuri
Cinematography: Sunirmal Majumdar
Editing: Sharmishtha Jha **Music:** Ajoy Chakraborty and Chandan Roy Chaudhuri
Cast: Soumitro Chatterjee, Mamata Shankar, Sabyasachi Chakrabarty

The film portrays a commonplace contemporary urban phenomenon, the "empty nest syndrome" and the problems

and dangers it could result in. It looks at the lives of middle-aged and retired couples living in an apartment building. The children of almost all of them have left homes to pursue a life and career of their own, leaving the parents lonely and vulnerable with only memories for company. Tragedy strikes when, on Christmas eve, the senior most couple is murdered by burglars. The incident shakes and shatters the rest and leaves them helpless and highly fearful of being at risk themselves. The film shows how values of kinship, filial affection, love and caring are becoming meaningless in an increasingly modernised world.

चक दे! इंडिया

हिंदी/153 मिनट/35एमएम/रंगीन

निर्माता आदित्य चोपड़ा निर्देशक शिमित अमीन पटकथा जयदीप साहनी छायांकन सुदीप चटर्जी संपादन अमिताभ शुक्ला संगीत सलीम सुलेमान कलाकार शाहरुख खान, विद्या मलवाडे, तान्या अब्रोल, सागरिका घाटगे, चित्राशी रावत, शिल्पा शुक्ल

बदनामी झेल चुका एक हॉकी कैप्टेन कबीर खान एक अनजान-सी राष्ट्रीय महिला हॉकी टीम का कोच बनकर खेल की दुनिया में वापसी करता है। देश के अलग-अलग भागों से आई ये खिलाड़ी यह भी भूल चुकी हैं कि खेल से लगाव या देश की आन की खातिर कैसे खेला जाता है। यह सरल, सीधी-सादी और प्यारी-सी फिल्म हॉकी जैसे खेल की दास्तान है, जिसकी शान-शौकत अब पहले जैसी नहीं रही। फिल्म में हॉकी की ऐसी अनगढ़ खिलाड़ियों की कहानी है जिनमें मुस्लिम, आदिवासी और छोटे कस्बों तथा उत्तरपूर्व जैसे पिछड़े इलाकों की लड़किया शामिल हैं। फिल्म में धर्म, क्षेत्रीयता, लिंग-भेद और देशभक्ति जैसे कई पहलुओं को छुआ गया है और दो मुद्दों-खेल-कूद तथा महिला सशक्तिकरण को सहजता के साथ गूँथकर प्रस्तुत किया गया है।



CHAK DE! INDIA

Hindi/ 153min/35mm/Colour

Producer: Aditya Chopra **Director:** Shimit Amin **Script:** Jaideep Sahni **Cinematography:** Sudeep Chatterjee **Editing:** Amitabh Shukla **Music:** Salim Sulaiman **Cast:** Shahrukh Khan, Vidya Malvade, Tanya Abrol, Sagarika Ghatge, Chitrashi Rawat, Shilpa Shukla

A disgraced hockey captain Kabir Khan comes back to the sports to coach the women's national team, which exists more on paper than in reality. The ragtag

bunch, coming from all corners of India, has forgotten what it is like to play for the love of the game and for the glory of the country. The simple, unpretentious and endearing film is about a now unfashionable game, and the underdogs who play it—be they Muslims, tribals, small-town girls or those hailing from obscure corners of the country's Northeast. It raises significant issues like those of religion, regionalism, gender bias and patriotism and seamlessly weaves together the twin issues of sports and women's empowerment.

धर्म

हिंदी / 125 मिनट / 35एमएम / रंगीन

निर्माता शीलल वी. तलवार निर्देशक भावना तलवार कहानी तथा पटकथा विभा सिंह छायांकन नल्ल मुत्तु संपादन आसिफ अली शेख कलाकार पंकज कपूर, सुप्रिया पाठक, के.के. रैना, दयाशंकर पांडेय, कृष पारेख।

पंडित रामनारायण एक कर्मकांडी ब्राह्मण हैं जो धार्मिक रीति-नीति का कठोरता से पालन करते हैं। वे धर्म ग्रंथों में वर्णित मूल्यों व परंपराओं पर पूरी दृढ़ता के साथ आचरण करते हैं। पूजा-पाठ और दूसरे अनुष्ठानों के साथ-साथ जाति-व्यवस्था में उनकी दृढ़ आस्था है। लेकिन उनके परिवार में एक बच्चे के आ जाने से पंडित जी का जीवन पूरी तरह बदल जाता है। यह बच्चा उनमें कठोर चिंतन व व्यवहार की जगह कोमल भावनाओं का संचार करता है। अंततः चतुर्वेदी जी को आस्था के संकट के गुजरना पड़ता है और उन्हें धर्म, मानवता, एकता, शांति और सद्भाव का सच्चा अर्थ समझ में आ जाता है।



DHARM

Hindi/125min/35mm/Colour

Producer: Sheetal V Talwar **Director:** Bhavna Talwar **Story and Screenplay:** Vibha Singh **Cinematography:** Nallu Muthu **Editing:** Asif Ali Shiekh
Cast: Pankaj Kapur, Supriya Pathak Kapur, K.K. Raina, Dayashankar Pandey, Krish Parekh

Pandit Ram Narayan Chaturvedi is a Hindu Brahmin who fastidiously

practices his religion. He lives by the sacred religious texts and is hard and unflinching in adhering to their tenets. He is painfully ritualistic and strict in following the hierarchies of caste system. Panditji's world changes irrevocably when a small child arrives in his house and gets adopted by the family. The kid softens the hardliner in him, makes him receptive to emotions and eventually makes him go through a crisis in faith to understand the true meaning of dharm: humanity, unity, peace, harmony.

फोटो

हिंदी / 91 मिनट / 35एमएम / रंगीन

निर्माता भारतीय बाल चित्र समिति
निर्देशन एवं छायांकन वीरेन्द्र सेनी
पटकथा अरुणिमा शर्मा संपादन उमेश
गुप्ता संगीत संजीव श्रीवास्तव कलाकार
अर्जुन, टॉम आल्टर, नसीरुद्दीन शाह,
रत्ना पाठक शाह

11 साल का बालक फोटो पहाड़ों में बसे एक छोटे से अनोखे गांव में रहता है। लोग उसे पागल समझते हैं, क्योंकि वह अपने आप में मरत रहता है। एक दिन उस समय उसे एक नई दुनिया की कुंजी मिल जाती है जब सुदूर देश से आया यात्रियों का काफिला अपने साथ बिजली, छवियां, रंग, कहानियां, ध्वनिया तथा संगीत का खजाना लेकर गांव में पहुंचता है। असल में यह मुंबई से आई एक फिल्म यूनिट है जो उसके घर के उद्यान में शूटिंग के लिए आई है। फोटो पहली बार सिनेमा के जादू से दो-चार होता है। फोटो अपने 'जादूगर' से मिलता है जो उन्हें सिनेमा की पंगड्डियों और गलियारों की यात्रा कराता है। यथार्थ और कल्पना के बीच गाते लगाते हुए फोटो के सामने तरह-तरह के पात्र अवतरित होते हैं जो उसके जीवन में खूब उत्साह, रोमांच और जादू का संचार करते हैं। इस यात्रा का अंत कहां होगा? क्या यह यात्रा कभी समाप्त होगी भी? इस जादू का अंतिम पड़ाव कहां होगा? फोटो के यथार्थ और कल्पना के दो अलग-अलग संसार क्या कभी एक दूसरे से मिलेंगे?



FOTO

Hindi/91 min/35mm/Colour

Producer: Children's Film Society of India **Direction and Cinematography:** Virendra Saini **Screenplay:** Arunima Sharma **Editing:** Umesh Gupta **Music:** Sanjeev Srivastava **Cast:** Arjun, Tom Alter, Naseeruddin Shah, Ratna Pathak Shah

Eleven-year-old Foto lives in a quaint little town in the hills. People consider him "abnormal" because he likes to live in a world of his own. One day he discovers the key to a new world. The day when a caravan of travellers from a

distant land come into his world and bring with them rain and lightning, images, colour, stories, sound and music. It's a film unit from Bombay that has come to shoot in his garden. For the first time, Foto is confronted with the magic of cinema. Foto meets his 'Magician', who takes him on a roller coaster ride through the lanes and alleys of Cinema. As Foto dips between his reality and imagination, a score of characters bring into his life new thrills, adventures and lots of magic. Where will this roller coaster ride end? Or will it? Where will the magic culminate? Will the two worlds of Foto - his reality and imagination - ever coincide?

फ़ोजन

हिंदी/110 मिनट/35एमएम/श्वेत-श्याम

निर्माता, निर्देशक एवं पटकथा लेखक शिवाजी चंद्रभूषण छायांकन शंकर रामन संपादन शाम मोहम्मद संगीत जॉन पी वरक कलाकार डेनी डेंगजोंग्पा, गौरी कुलकर्णी, राज जुत्शी, यशपाल शर्मा

इस फिल्म में हिमालय में बसे एक गांव में अपने पिता कर्मा तथा छोटे भाई चोमो के साथ रहने वाली एक लड़की लास्या की हृदयस्पर्शी दुखभरी कहानी का चित्रण है। बर्फ ढके पहाड़ों के बीच उसके छोटे से गांव के सामने मीलों तक बंजर और कठोर भूमि फैली हुई है। एक दिन वहां सेना आती है और उनके घर से केवल 100 गज़ की दूरी पर डेरा डाल देती है। इसके साथ ही उनका जीवन हमेशा के लिए बदल जाता है। आपसी आत्मीयता तथा एक दूसरे से जान-पहचान और पास-पड़ोस में रहने का आनन्द सब कुछ गायब हो जाता है। एकांत और निश्चित जीवन के स्थान पर कई तरह के संघर्ष और तनाव उन्हें घेर लेते हैं।



FROZEN

Hindi & Ladakhi/110min /35mm/Black and White

Producer, Director and Screenplay-writer: Shivajee Chandrabhushan
Cinematography: Shankar Raman
Editing: Sham Mohammed **Music:** John P. Varkey **Cast:** Danny Denzongpa, Gauri Kulkarni, Raj Zutshi, Yashpal Sharma

Frozen portrays the touching and sombre journey of Lasya, who lives with her

father Karma and younger brother Chomo in a remote village in the Himalayas. Pristine snow-capped mountains surround their tiny hamlet and barren, harsh land stretches for miles ahead. One fine day things change irrevocably when the army moves in and settles a hundred yards across their doorstep. The warmth, comfort and familiarity of their surroundings goes away; the secluded, sheltered life gives way to ceaseless conflicts and struggles against many an odd.

गांधी, माई फादर

अंग्रेजी/हिंदी/136मिनट/35एमएम/रंगीन

निर्माता अनिल कपूर निर्देशन और पटकथा फिरोज़ अब्बास खान कहानी फिरोज़ अब्बास खान चंद्रलाल दलाल नीलम बेन पारिख छायांकन डेविड मैकडोनाल्ड संपादन ए. सीकर प्रसाद संगीत पीयूष कनौजिया कलाकार दर्शन जरीवाला, अक्षय खन्ना, शेफाली शाह, भूमिका चावला

इस फिल्म में राष्ट्रपिता को एक पूजनीय महात्मा की बजाय एक आम इंसान के रूप में चित्रित किया गया है। इसमें यह दर्शाया गया है कि किस तरह स्वतंत्रता की लड़ाई में व्यस्त रहने के कारण उनका अपना बेटा हरिलाल उनसे दूर चला जाता है। महात्मा गांधी स्वयं स्पष्ट करते हैं कि उन्हें अपने जीवन में दो ही गलाल रहे कि वे अपने मुस्लिम मित्र जिन्ना और अपने बेटे हरिलाल को अपने विचारों से सहमत नहीं कर सकें। वे पूरे राष्ट्र की आत्मा को बदलने में तो सफल हो गए किन्तु अपने बेटे की आत्मा को नहीं बचा पाए। उनका बेटा अपने महान बाप की छाया में एक भिखारी की तरह सड़कों पर धुके खाता रहा, पिता से विद्रोह करके मुस्लिम बन गया, फिर धर्मांतरण करके हिंदू बन गया और शराब में डूबकर मृत्यु को प्राप्त हुआ। हरिलाल मुम्बई के अस्पताल में अनजान मौत मरा। सबसे मार्मिक क्षण फिल्म के अंत में आता है जब चाय बेचने वाला एक सिख गांधी जी की मौत की खबर सुनकर फूट-फूट कर रोने लगता है लेकिन अपनी पहचान छिपाकर जीने वाला हरिलाल अपने पिता की मौत पर दुःख तक प्रकट नहीं कर पाता।



GANDHI, MY FATHER

English/Hindi/136 min/35mm/Color

Producer: Anil Kapoor **Direction and Screenplay:** Feroz Abbas Khan **Story:** Feroz Abbas Khan, Chandulal Dalal, Neelamben Parikh **Cinematography:** David McDonald **Editing:** A. Sreekar Prasad **Music:** Piyush Kanojia **Cast:** Darshan Jariwala, Akshaye Khanna, Shefali Shah, Bhumika Chawla

Gandhi-My Father brings alive the Father of the Nation more as a human being than the deified Mahatma. It portrays how his struggle for the nation's independence took him away from his own son, Harilal. As Gandhi says in a

matter-of-fact manner, he had just two regrets in life, of not being able to convince his Muslim friend Jinnah and his son Harilal. He could transform the soul of the nation but could not save the soul of his own son. Somewhere in the shadows of the great man lived his son, roaming the streets like a beggar, converting to Islam as a rebellion, reconverting to Hinduism as penance, drinking himself to death. Harilal dies unrecognised in a Bombay hospital. The most moving moment comes towards the end when the Sikh tea stall owner hears of Gandhi's death and cries for the loss of his bapu even as the decrepit, unknown Harilal can't express grief on his own father's demise.

गुलाबी टाकीज

कन्नड/122 मिनट/35एमएम/रंगीन

निर्माता बसंत कुमार पाटिल निर्देशन और पटकथा गिरीश कासरवल्ली कहानी वैदेही संगीत इसाक थॉमस कोट्टुकापल्ली छायांकन आर. रामचंद्र आइथल संपादन एस. मनोहर, एम.एन. स्वामी कलाकार उमाश्री, के.जी. कृष्णमूर्ति, पूर्णिमा मोहन।

वैश्वीकरण और बढ़ते हुए हिन्दु-मुस्लिम तनाव की पृष्ठभूमि में बनी यह फिल्म एक मछुआरा समुदाय पर श्रव्य-दृश्य माध्यमों के प्रभाव का चित्रण करती है। गुलाबी एक मछली व्यापारी मूसा की दूसरी बीवी है जिसका कोई बच्चा नहीं है और पति की उपेक्षा की शिकार है। वह प्रशिक्षित दाई है और समुदाय में प्रसव के समय उसकी काफी पूछ रहती है। उसे फिल्में देखना बहुत अच्छा लगता है। घर में रंगीन टी वी आ जाने से उसकी जिंदगी ही बदल जाती है। टेलीविज़न का इतना जबरदस्त आकर्षण और प्रभाव है कि सभी समुदायों और जातियों की हर उम्र की औरतें व बच्चे उसके घर पहुंचने लगते हैं। उसका घर सिनेमाघर जैसा बन जाता है। इससे पुराने रिश्ते और पक्के होते हैं और नए रिश्ते पनपते हैं लेकिन कुछ नए तनाव और बदलाव भी आते हैं जिनसे अंततः समुदाय में विघटन हो जाता है।



GULABI TALKIES

Kannada/122min/35mm/Colour

Producer: Basant Kumar Patil **Direction and Screenplay:** Girish Kasaravalli **Story:** Vaidehi **Music:** Isaac Thomas Kottukapally **Cinematography:** S. Ramachandra Aithal **Editing:** S. Manohar, M.N. Swamy **Cast:** Umashree, K.G. Krishnamurthy, Poornima Mohan

Set against the backdrop of globalisation and increasing communal tension between Hindus and Muslims, *Gulabi Talkies* traces the impact of the audio-visual medium on a fishing community.

Gulabi is the much neglected, childless second wife of fish merchant Moosa. She is a trained mid-wife, much in demand in her community. She is bewitched by cinema and the most significant happening in her life is the arrival of a colour TV set. Such is the power of the medium that women and kids of all ages, castes and communities are drawn to *Gulabi's* house which becomes the movie house or *Talkies*. It forges new bonds, strengthens old but also creates new tensions, transformations and eventual breakdown of the community.

इनिमे नांगथान

तमिल/94 मिनट/3डी एनीमेशन/रंगीन

निर्माता एस. श्रीदेवी निर्देशन तथा एनीमेशन एस. वेंकी बाबू संगीत इलयाराजा संपादन बी. लेनिन

एक छोटे-से गांव में चार दोस्त विच्छु, वारातु, वैती और वेंकट गोविंद कहानी सुनाने की एक शैली कथाकलाक्षेपन के जरिए अपनी आजीविका चलाते हैं। एक बुजुर्ग औरत उन्हें सलाह देती है कि वे अपनी कामनाएं पूरी करने के लिए पहाड़ पर एक स्वामी जी से मिलें। स्वामी जी कहते हैं कि वे उनकी सहायता तभी करेंगे जब वे एक गुफा में रहने वाले राक्षसों से उसकी माला छुड़ाकर ले आएंगे। इसके बाद जो होता है उसमें धूमधड़ाका, हंसी-मजाक और साहसिक कारनामों हैं और उनमें समुद्री जीव, नाचने वाला फकीर, मायावी स्थल और स्वर्ग भवन जैसे रोचक तत्त्व मौजूद हैं। फिल्म का विषय एकदम सीधा है कि सभी लोग लालची हैं और जो लालच पर काबू पा लेता है वही धनी और पूर्ण व्यक्ति है।



INIMEY NAANGATHAAN (V4)

Tamil/94min/3D animation/Colour

Producer: S. Sridevi; **Director and Animator:** S. Venky Baboo **Music:** Ilayaraja **Editor:** B. Lenin

Vicchu, Varathu, Vaithi and Venkat Govind, four friends from a small village earn their livelihood from Kathakalakshepam (a form of story-

telling). They are guided by an old lady to meet a Swamiji in the mountains to get their wishes fulfilled. The Swamiji can help them only if they can get back his holy maala (band) held by rakshas (demons) in a cave. What follows is a colourful, comic adventure with interesting characters—like sea creatures, a dancing fakir—and magical places—like the Gold Palace—thrown in. The theme is simple: there is greed in everyone and the one who overcomes it is a complete and perfect soul, and richer for it too.

जब वी मेट

हिंदी/137 मिनट/35एमएम/रंगीन

निर्माता धिलिन मेहता निर्देशन और कहानी इम्तियाज अली छायांकन नटराज सुब्रह्मणियन संपादन आरती बजाज संगीत प्रीतम चक्रवर्ती कलाकार करीना कपूर, शाहिद कपूर, पवन मल्होत्रा, दारा सिंह

इस फिल्म में पात्रों की आत्मीयता, ठेठ हंसी-मजाक, आम बोलचाल की भाषा, आपसी रिश्तों को बनाने-बिगाड़ने वाली ऊलजुलूल घटनाएं, श्रेष्ठ अभिनय तथा मधुर चुलबुला संगीत जैसे अनेक तत्त्व हैं जिनके ज़रिए मेल और विछोह की सतत सनातन प्रेम कहानी में नए तरह के मोड़ आते रहते हैं। एक प्रसिद्ध उद्योगपति का बेटा आदित्य टुकराया हुआ प्रेमी है और उदासी तथा गुमी के आलम में अनजाने में ही एक रेलगाड़ी में चढ़ जाता है, जहां उसकी मुलाकात एक बातूनी लड़की जीत से होती है जो अपने घर भटिंडा जा रही है। बातों-बातों में जीत उसे बताती है कि अगर उसके मां-बाप उसके प्रेमी से शादी की इजाजत नहीं देंगे तो वो अपने प्रेमी के साथ भाग जाएगी। गाड़ी छूट जाने, सामान की अदला-बदली और कई ऊलजुलूल तथा हिम्मतभरी घटनाओं के बाद जीत आदित्य की मदद से अपने घर पहुंच पाती है। इसी दौरान उसे अहसास हो जाता है कि आदित्य की उसका सच्चा साथी है।



JAB WE MET

Hindi/137min/35mm/Colour

Producer: Dhilin Mehta **Direction and Story:** Imtiaz Ali **Cinematography:** Nataraja Subramanian **Editing:** Aarti Bajaj **Music:** Pritam Chakraborty **Cast:** Kareena Kapoor, Shahid Kapur, Pavan Malhotra, Dara Singh

The warmth of characters, earthy humour, colloquial lingo, the many ironies underlying relationships, impressive performances and melodious, foot-tapping music—it's all this that gives a

fresh twist to the age-old tale of love lost and found. Aditya, the son of a famous industrialist and a spurned lover, is distressed and unhappy and unwittingly boards a train where he meets a chatterbox of a girl going home to Bhatinda. He finds her annoying while she tells him all about her plans to elope with her boyfriend in case the parents don't consent to their marriage. A missed train, misplaced luggage and many an adventure later Geet makes her journey back home with Aditya's help. And also finds herself a true companion for life.

कांचीवरम

तमिल / 112 मिनट / 35एमएम / रंगीन

निर्माता परसेप्ट पिक्चर कंपनी तथा फोर फ्रेम्स फिल्मस निर्देशन तथा पटकथा प्रियदर्शन छायांकन तिरु संगीत एम.जी. श्रीकुमार संपादन अरुण कुमार कलाकार प्रकाश राज, श्रिया रेड्डी, शम्मु।

कांची के रेशम उद्योग की पृष्ठभूमि को लेकर बनी इस फिल्म में एक साधारण बुनकर वेंगाडम की कहानी चित्रित की गई है। इस बुनकर के जीवन के माध्यम से फिल्म भारत में बुनकरों की समस्याओं, उनका हुनर समाप्त होने और उनकी दयनीय दशा पर प्रकाश डालती है। वेंगाडम जब पैरोल पर जेल से छूटता है तो हम उसके साथ उसके अतीत में पहुंच जाते हैं। वह सपनों में जीने वाला व्यक्ति है जो अपनी मामूली आमदनी के बावजूद अपनी नवजात बेटी को वचन देता है कि वह उसे शादी के दिन रेशमी साड़ी पहनाएगा। समय बीतने के साथ वह अपना वादा निमाने के लिए देसी तरीका अपनाता है और नई शैली की अनूठी रेशमी साड़ी तैयार करने की कोशिश में लग जाता है। इसी बीच गांव में एक कम्युनिस्ट कार्यकर्ता का आगमन होता है जिसकी प्रेरणा से वेंगाडम राजनीति करने लगता है और मिल मालिकों के खिलाफ आंदोलन छेड़ देता है। लेकिन हालात उसके काबू से बाहर हो जाते हैं। मिल मालिक और मज़दूर दोनों अपने रवैये पर अड़े रहते हैं और हड़ताल लंबी खिंच जाती है। गड़बड़ और गरीबी की इस हालत में क्या वेंगाडम अपनी बेटी के लिए साड़ी बुन सकेगा? क्या जो साम्यवाद का अनुयायी बना रहेगा? क्या सामूहिक कार्रवाई लाभदायक है? फिल्म में ऐसे ही अनेक प्रश्नों का उत्तर तलाशने की कोशिश की गई है।



KANCHIVARAM

Tamil/112 min/35mm/Colour

Producer: Percept Picture Company & Four Frames Films **Direction & Screenplay:** Priyadarshan **Cinematography:** Thiru **Music:** M.G. Sreekumar **Editing:** Arun Kumar **Cast:** Prakash Raj, Shriya Reddy, Shammu

Set in Kanchi's silk weaving industry the film narrates the story of one ordinary weaver Vengadam. Through his life the film enumerates the many problems of artisans in India, the peril to their craft and their threadbare existence. As he steps out of jail on parole we go back in time with Vengadam. He is a dreamer who despite his meagre salary makes a promise

to his newborn daughter that he would drape her in a fine silk sari on her wedding day. As time passes by he finds an ingenious way to fulfil his promise and works diligently towards creating a spectacular sari. Meanwhile, with the arrival of a communist in the village, Vengadam gets drawn to politics and instigates a revolt against mill-owners. However, things spin out of his control. Neither the owners nor the workers are willing to reach a settlement and the strike keeps getting prolonged. Will Vengadam be able to spin the sari for his daughter in such a state of impasse and penury? Will he remain committed to communism? Can collectivism work? The film seeks to answer these questions and more.

कृष्णकांतेर विल

बंगला/145 मिनट/35एमएम/रंगीन

निर्माता बृजेश अग्रवाल निर्देशक राजा सेन कहानी बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय पटकथा मोहित चट्टोपाध्याय छायांकन आदिनाथ दास संपादन अर्ध्य कमल मित्र संगीत पार्थो सेनगुप्ता कलाकार सौमित्र चट्टोपाध्याय, जीत, स्वारित के मुकर्जी, मोनाली ठाकुर, कुणाल मित्र

हरिद्वग्राम के जमींदार कृष्णकांत राय के दो बेटे हारालाल और बिनोद हैं। उन्होंने अपने स्वर्गीय भाई के बेटे गोविन्दलाल को भी पाला-पोसा है। जब वे अपनी वसीयत में गोविंदलाल को भी अपनी संपत्ति का हिस्सा देते हैं तो हारालाल इसका विरोध करता है और एक विधवा के साथ शादी कर लेने की धमकी देता है। कृष्णकांत अपनी बात पर डटे रहते हैं तो हारालाल दूसरे उल्टे-सीधे तरीकों से सारा धन हड़पने की चेष्टा करता है। इस बीच गोविंदलाल का किसी औरत से अवैध संबंध हो जाता है और कृष्णकांत उसके हिस्से की संपत्ति उसकी पत्नी व्रमोर के नाम कर देते हैं। अंत में संपत्ति किसी के भी हाथ नहीं आती। घर-बार, संपत्ति और पत्नी तक से हाथ धो बैठने के बाद गोविंदलाल संन्यासी बन जाता है और सभी सांसारिक सुखों का परित्याग कर देता है।



KRISHNAKANTER WILL

Bengali/145min/35mm/Colour

Producer: Brijesh Agarwal **Director:** Raja Sen **Story:** Bankim Chandra Chattopadhyaya **Screenplay:** Mohit Chattopadhyaya **Cinematography:** Adinath Das **Editing:** Arghya Kamal Mitra **Music:** Partho Sengupta **Cast:** Soumitra Chattopadhyay, Jeet, Swastike Mukherjee, Monali Thakur, Kunal Mitra

Krishnakanta Roy, the zamindar of Haridragram has two sons, Haralal and Binod and he has also brought up and

taken care of Gobindolal, his dead brother's son. When he wills a share of his property to Gobindolal, Haralal protests and threatens to marry a widow. Krishnakanta is unmoved so Haralal tries out other devious ways to corner all the money. Meanwhile, Gobindolal gets into an illicit relationship and Krishnakanta leaves his share of wealth in the name of his wife Vromor. At the end nobody gets to enjoy the riches. Losing all in life, including his wife, Gobindolal becomes a hermit and discards all material pleasures.

दि लास्ट लीयर

अंग्रेजी/122 मिनट/35एमएम/रंगीन

निर्माता अरिदम चौधरी निर्देशन और पटकथा ऋतुपर्ण घोष छायांकन अभीक मुखोपाध्याय संपादन अर्घ्य कमल मित्र, संगीत संजय राजा कलाकार अमिताभ बच्चन, प्रीति जिंटा, अर्जुन रामपाल, शेफाली शाह

हरीश उर्फ हैरी एक भूतपूर्व मंच कलाकार है जिसे शेक्सपियर से बहुत लगाव है। वह कोलाकाता में अपनी संगिनी वंदना के साथ एकांत जीवन बिताता हुआ वोदका का आनन्द लेता है। उसे यही चिन्ता सताती है कि यह दुनिया पागल क्यों हो गई है और शेक्सपियर का नाम जपता रहता है। वह स्वभाव से सनकी और दिखावट करने वाला है। उसे शेक्सपियर और नाटकों से तो लगाव है लेकिन सिनेमा से घिड़ है। हैरी ने रगमंच को उस समय अलविदा कहा था जब वह किंग लीयर का चरित्र निभाने वाला था। एक पत्रकार हैरी को विद्वेषकों के बारे में अपने मित्र सिद्धार्थ द्वारा बनाई जाने वाली प्रगतिशील फिल्म में काम करने को तैयार करता है। सिद्धार्थ के साथ काम करके हैरी के भीतर का अभिनेता फिर से जीवित हो उठता है। वह खुलने लगता है और नए लोगों से मेल-जोल बढ़ाता है जिनमें माडल से अभिनेत्री बनी शबनम भी शामिल है। यही नहीं, वह अपने संपर्क में आने वाले लोगों के जीवन को भी बदल देता है। फिल्म का सेट उसके लिए आनन्द और उत्साह से भरा स्थान बन जाता है। लेकिन यह स्थिति कब तक बनी रहेगी? हैरी को एक और कठिन स्थिति का सामना करना पड़ता है। क्या वह इससे आसानी से पार पा सकेगा?



THE LAST LEAR

English/122min/35mm/Colour

Producer: Arindam Chaudhuri **Director:** Rituparno Ghosh **Screenplay:** Rituparno Ghosh: **Cinematography:** Abhik Mukhopadhyay **Editor:** Arghya Kamal Mitra **Music:** Sanjoy-Raja **Cast:** Amitabh Bachchan, Preity Zinta, Arjun Rampal, Shefali Shah

Harish aka Harry is a former theatre actor insanely devoted to Shakespeare. He leads a secluded life in Kolkata with his partner Vandana, relishes his vodka, ponders over why world has gone mad and recites Shakespeare. He is

unpredictable, eccentric and a bit pompous. He loves Shakespeare and theatre but hates cinema. Harry, who quit theatre just when he was about to play King Lear, is rediscovered by a journo for a seemingly avant garde film on clowns being made by his filmmaker friend Siddhartha. The rapport with Sid brings Harry alive. It expands his world, opens him to new friendships like that with model-turned-actress Shabnam. Harry too changes the lives of everyone involved. The film set becomes a happy, lively place. Can it last for long? Harry is faced with another tough situation in life. Will he sail through it easily?

नालु पेन्नुंगल

मलयालम / 105 मिनट / 35एमएम / रंगीन

निर्माता अडूर गोपालकृष्णन और बेंजी मार्टिन
निर्देशक अडूर गोपालकृष्णन पटकथा
तकषि शिवशांकर पिल्लै और अडूर
गोपालकृष्णन छायांकन एम.जे. राधाकृष्णन
संपादन बी. अजित कुमार संगीत इसाक
थॉमस कलाकार पद्मप्रिया, नदिता दास,
काव्या माधवन, गीतु मोहनदास

फिल्म में अलग-अलग सामाजिक वर्गों की
चार औरतों की कहानी चित्रित की गई है।
ये हैं— एक वेश्या, जो अपने प्रेमी के साथ
सामान्य जीवन बसर करना चाहती है, एक
किसान महिला जिसे उसके दुकानदार पति
ने त्याग दिया है, एक गृहिणी, जिसको
मिलने आया स्कूल के दिनों का साथी उसे
दुखभरी जिंदगी से बाहर निकलने का रास्ता
बताता है और एक मध्यवर्गीय लड़की, जो
शादी की उम्र पार कर चुकी है और उसे
अभी योग्य वर नहीं मिला है। देखने में
अलग-अलग होते हुए भी इन चारों कहानियों
में समानता है। जैसे कि खुद निर्देशक अडूर
का कहना है — “इन कहानियों के भीतर
और इनके बीच एक तरह की चेतना के
विकास के साथ-साथ समय बीतने का
सिलसिला भी है।” उनका यह भी कहना है
कि “निश्चित काल (1940-60) और निश्चित
स्थान (केरल की उपजाऊ भूमि कुट्टनाडु) से
जुड़ी होने के बावजूद इन कहानियों में
व्यक्त चिंताएं और भाव आज के युग की हैं
और सार्वभौमिक हैं।”



NAALU PENNUNGAL

Malayalam/105min/35mm/Colour

Producer: Adoor Gopalakrishnan and Benzy Martin **Director:** Adoor Gopalakrishnan **Script:** Thakazhi Sivasankara Pillai and Adoor Gopalakrishnan **Cinematography:** M.J. Radhakrishnan **Editor:** Ajith **Music:** Isaac Thomas **Cast:** Padmapriya, Nandita Das, Kavya Madhvan, Geetu Mohandas

The film tells us the stories of four women from different social strata: a prostitute who wants to lead a normal life with her lover, a farm worker abandoned

by her shop-keeper husband, a housewife whose visiting class-mate offers her a way out of her unhappiness and a middle class girl well past her marriageable age who can't find a suitor. The seemingly separate and independent stories have a similarity. As director Adoor Gopalakrishnan himself puts it, "within and between the stories there is a passage of time alongside a certain growth in consciousness". "While being firmly rooted in a specific time (1940-60) and place (Kuttanadu, the granary of Kerala), the concerns that resonate through the film are universal and contemporary," says Gopalakrishnan.

निरोप

मराठी / 90मिनट / 35एमएम / रंगीन

निर्माता अपर्णा धर्माधिकारी निर्देशन तथा पटकथा सचिन कुंदालकर छायांकन मिलिंद जोग संपादन अभिजीत देशपांडे संगीत श्रीरंगुमरानी कलाकार देविका दत्तरदार, समीर धर्माधिकारी

मराठी में निरोप शब्द के दो अर्थ हैं— एक संदेश और दूसरा है अलविदा कहना। फिल्म हर व्यक्ति के मन में विद्यमान अलविदा संदेश के बारे में है। इसमें युवा संगीत निर्देशक शेखर की कहानी कही गई है जो जर्मनी रहने जा रहा है। प्रस्थान से एक सप्ताह पहले वह अपनी पत्नी जुई तथा कुछ मित्रों के साथ छुट्टी मनाने कोंकण जाता है। ये सभी लोग युवा, आधुनिक और शहरी पृष्ठभूमि के हैं जो अपनी चिंताएं भुलाने के लिए स्वछंद आचरण पसंद करते हैं। छुट्टी मनाते हुए उनके भीतर दबी कामनाएं और भावनाएं उभर आती हैं। अंत में हम देखते हैं कि वे सभी बदल गए हैं और वैसे नहीं रहे जैसे शुरू में थे। उन्हें महसूस होता है कि चाहे देश छोड़ रहे हों या कोई रिश्ता तोड़ रहे हों, जिंदगी से आज़ादी या पलायन नाम की कोई चीज़ नहीं है।



NIROP

Marathi/90min/35mm/Colour

Producer: Aparna Dharmadhikari
Direction and Script: Sachin Kundalkar
Cinematography: Milind Jog **Editing:** Abhijeet Deshpande **Music:** Shrirangumrani **Cast:** Devika Daftardar, Sameer Dharmadhikari

Nirop has two meanings in Marathi— message and saying goodbye. The film is about the goodbye message in everyone's mind. It is the story of

Shekhar, a young composer migrating to Germany. In the last week before the move he goes on a holiday to Konkan with his wife Jui and friends. They are young, urbane and unconventional people seeking freedom from their individual agonies. Emotions and desires buried deep inside come to surface during the holiday and at the end we see each of the characters markedly different from what they appeared to be at the start. They realise that there can be no freedom and no escape, even if you leave the country or break a relationship.

ओम शांति ओम

हिन्दी / 155मिनट / 35एमएम / रंगीन

निर्माता गौरी खान निर्देशक फराह खान
पटकथा फराह खान, मयूर पुरी, मुश्ताक
शेख छायांकन वी. माणिकनंदन संपादन
शिरिश कुंदर संगीत विशाल-शेखर कलाकार
शाहरुख खान, दीपिका पादुकोण, श्रेयस
तलपड़े, किरण खेर, अर्जुन रामपाल

फिल्म 1970 के दशक के एक जूनियर सिने
कलाकार प्रकाश मखीजा पर केंद्रित
प्रतिशोध की कहानी है। मखीजा को सुपरस्टार
शांतिप्रिया से प्यार है लेकिन जैसा कि फिल्मों
में होता है, उनके बीच खलनायक के रूप में
धन-दौलत को ही सब कुछ मानने वाला
प्रोड्यूसर मुकेश मेहरा है जो शांतिप्रिया की
हत्या करने की कोशिश करता है। ओम अपनी
प्रेमिका को बचाते हुए मर जाता है। उसका
ओम कपूर के रूप में पुनर्जन्म होता है जो
2007 में सुपर स्टार बन जाता है। वह अपनी
प्रेमिका की मौत का बदला लेने के लिए अपने
अतीत में जाता है। फिल्म का मुख्य पहलू
विद्रोह का भाव है। फिल्म में द्रुतिकियों, मजाक
और हास्य-व्यंग्य के असंख्य प्रसंग हैं। ऐसा
लगता है कि पूरा फिल्म उद्योग -शबाना
आजमी से लेकर सुभाष चव्वाड़े तक अपने आप
पर हंस रहा है। बालीवुड के लगभग सभी
टोटके और फार्मूले - खीर बनाने वाली मां,
यश चोपड़ा फिल्म के गोलाकार पलंग और
रेशमी गाऊन, हत्यारं, झाड़-फानूस, फिल्म
फेयर पुरस्कार, नसीब फिल्म जैसा अनेक
नायकों के साथ गाया गया गीत, कर्ज फिल्म
जैसा चरमोत्कर्ष गीत और मधुमती फिल्म
जैसा अंत इसे एक रोचक फिल्म बना देते हैं।



OM SHANTI OM

Hindi/155/35mm/Colour

Producer: Gauri Khan **Director:** Farah Khan
Script: Farah Khan, Mayur Puri, Mushtaq Sheikh
Cinematography: V. Manikanandan
Editor: Shirish Kunder
Music: Vishal-Shekar **Cast:** Shahrukh Khan, Deepika Padukone, Shreyas Talpade, Kirron Kher, Arjun Rampal.

Om Shanti Om is a romantic revenge drama centred on a junior artiste of the 70s, Om Prakash Makhija. He is madly in love with superstar Shantipriya but there is the proverbial villain in the form of money-minded producer Mukesh Mehra who tries to kill her. Om dies trying to save her. He is reborn as Om Kapoor, the superstar of 2007 and goes back to his past to avenge the death of his beloved. The standout

aspect about the film is its irreverence. There is a series of side-splitting gags: the 'ennada rascal' MGR-Rajnikant inspired 'tame the tiger by its tail' cowboy act, the shooting loins of Akshay Kumar in The Return of Khiladi, the 'udi baba' Mohabbatman and the shooting of a film called Apaahij Pyaar, delightful phrases like 'psycho mummy' and cheesy lines like 'choodi nahin ye mera dil hai...tod diya na'. The film is packed with self-deprecatory humour, with almost the entire industry gamely cracking a joke at itself, from Shabana Azmi to Subhash Ghai. In fact, everything is referenced from Bollywood—the kheer-cooking filmi Ma, the round bed and silk gowns of Yash Chopra films, the killer chandeliers, Filmfare awards, the multi-starrer song a la Naseeb, the climax song like Karz and the climax itself like Madhumati.

ओरे कडल

मलयालम/100मिनट/35एमएम/रंगीन

निर्माता विन्धयन एन.बी निर्देशन और पटकथा श्यामप्रसाद छायांकन अलगप्पन संपादन विनोद सुकुमारन संगीत औसैप्पचन कलाकार मम्मूटि, मीरा जैस्मीन, नरेन, राम्या कृष्णन

ओरे कडल का अर्थ है मन का सागर। सुनील गंगोपाध्याय की कहानी पर आधारित यह फिल्म एक मध्यवर्गीय गृहिणी दीप्ति के बारे में है जिसे एक उग्रवादी बुद्धिजीवी नाथन से प्रेम हो जाता है। प्रेम संबंध बहुत गहरा और तीव्र हो जाता है तो दीप्ति का अपराध बोध उसे मानसिक रूप से अस्थिर बना देता है। उसके मानसिक द्वंद्व से उसके पति और बच्चों का जीवन प्रभावित होने लगता है। फिल्म में जीवन, प्रेम, काम और मानवीय संबंधों की विवेचना की गई है। प्रेम का असीम आकर्षण, वासना की शक्ति, किसी के जीवन में अचानक प्रवेश करना और आसानी से लौट जाना, बिना प्रेम के जी गई जिन्दगी के दुःख, जैसी भावनाओं, विचारों तथा स्थितियों को चित्रित करती हुई फिल्म आगे बढ़ती है।



ORE KADAL

Malayalam/100min/35mm/Colour

Producer: Vindhyan N.B. **Direction and Screenplay:** Shyamaprasad
Cinematography: Alagappan **Editing:** Vinod Sukumaran **Music:** Ouseppachan
Cast: Mammooty, Meera Jasmine, Naren, Ramya Krishnan

Ore Kadal (The Sea Within), based on a novel by Sunil Gangopadhyay, is the story of Deepti, a middle class housewife who is irresistibly drawn to a radical

intellectual Nathan. As the affair grows in passion and intensity, Deepti's growing sense of guilt pushes her towards mental instability. Her husband and children are caught unawares in her emotional conflict. Ore Kadal contemplates on life, love, sex and relationships. The incredible tug of love, the power of lust, walking casually into someone's life and then walking as easily out of it, the agony of living a life without love—these are the thoughts, feelings and situations that the film dwells on.

परदेसी

मलयालम / 134मिनट / 35एमएम / रंगीन

निर्माता एंटनी परुंबवूर निर्देशन, कहानी और पटकथा पी.टी. कुन्हीमुहम्मद छायांकन के.जी. जयन संपादन डॉनमेक्स संगीत रमेश नारायण / शबास अम्मान कलाकार मोहनलाल, पद्माप्रिया, श्वेता मेनन

फिल्म इस तथ्य को उजागर करती है कि दुखद विभाजन ने किस तरह कुछ सामान्य लोगों को अपने ही वतन में अजनबी बना डाला। मोहनलाल ने 80 साल के मूसा का चरित्र निभाया है जिन्हें छोटी उम्र में ही अपने बड़े परिवार का पेट पालने के लिए काम-धंधे की तलाश में अपना वतन छोड़ना पड़ा था। मूसा कराची चले गए थे जो उस समय अविभाजित भारत का हिस्सा था। विभाजन के बाद कुछ वर्षों तक तो उसे अपने रिश्ते-नातेदारों से मिलने के लिए भारत आने में कोई दिक्कत नहीं हुई, लेकिन बाद में भारत और पाकिस्तान के बीच राजनीतिक विवादों तथा समस्याओं के कारण उनका भारत आना कठिन होने लगा। इसलिए मूसा हमेशा के लिए भारत आ जाता है। लेकिन वह पाकिस्तान के पासपोर्ट पर भारत आता है, जिसका अहसास उसे देर से होता है। पाकिस्तानी पासपोर्ट के कारण उसका भारत का नागरिक बनने का आवेदन मंजूर नहीं होता और उसे अपने वतन में एक-एक साल के परमिट पर रहना पड़ता है। उसे यह डर भी सताता रहता है कि यह परमिट कभी भी रद्द हो सकता है। मूसा जैसे और भी कई लोग हैं जो अपने देश को अपना नहीं कह सकते क्योंकि सरकारी व्यवस्था में उनकी इस दयनीय स्थिति के बारे में कोई सुनवाई नहीं और उधर सीमा पर तनाव बढ़ता रहता है।



PARADESI

Malayalam/134min/35mm/Colour

Producer: Antony Perumbavoor
Direction, Story and Screenplay: P.T. Kunhimuhammed
Cinematography: K.G. Jayan
Editing: Donmax
Music: Ramesh Narayan and Shabas Amman
Cast: Mohanlal, Padmapriya, Shweta Menon

Paradesi is about how the tragic Partition turned some ordinary people into strangers in their own homeland. Mohanlal plays a wise octogenarian Moosa, who was compelled at a very young age to leave his native place in search of work to support his large

family. He moved to Karachi which was then part of undivided India. After partition, in the initial phase, he had no problems visiting his family back home but soon the political rifts and problems between Delhi and Islamabad began making things difficult. When Moosa finally makes it back home it's on a Pakistani passport and he realises it way too late. His application for citizenship in India is rejected and he is forced to live precariously on year-to-year basis, fully aware that the permit might get cancelled any time. There are other characters like him who can't call their homeland their own as the system turns a deaf ear to their plight and the tensions on the border keep escalating.

पेरीयार

तमिल/170 मिनट/35एमएम/रंगीन

निर्माता लिबर्टी किएशन्स लि. निर्देशन और पटकथा ज्ञान राजशेखरन छायांकन तंकर बच्चन संपादन वी. लैनिन कलाकार सत्यराज, खूशबू, मनोरमा

फिल्म ई.वी. रामास्वामी नायकर की जीवनी है, जिन्होंने तमिलनाडु में स्वाभिमान आंदोलन और द्रविड़ कडगम की स्थापना की। इस अद्वितीय नेता ने कभी कोई राजनीतिक पद स्वीकार नहीं किया और सामाजिक सुधारों की दिशा में निरंतर काम करते रहे। रामास्वामी का जन्म एक संपन्न परंपरावादी परिवार में होता है किंतु वे धार्मिक विश्वासों, जाति प्रथा, रूढ़ियों आदि को नहीं मानते। वे अपनी विधवा भतीजी का पुनर्विवाह कराते हैं। वे एक डोगी पुजारी का पर्दाफाश करते हैं जिसके लिए उन्हें दंड दिया जाता है। निराश होकर वे बनारस चले जाते हैं। किंतु पावन नगरी काशी में उनका और अधिक मोहभंग होता है। इसके बावजूद समाज की सेवा का उनका निश्चय अडिग रहता है। सी. राजगोपालाचारी की सलाह पर वे कांग्रेस में शामिल हो जाते हैं, खादी बेचते हैं और तमिलनाडु कांग्रेस के अध्यक्ष बन जाते हैं। वे निम्न जातियों को अधिकार दिलाने के लिए वैकम में विरोध प्रदर्शन का नेतृत्व करते हैं। गैर-ब्राह्मणों को आरक्षण देने की उनकी मांग टुकरा दिए जाने पर वे कांग्रेस छोड़ देते हैं। वे दलित वर्गों में विश्वास तथा घेतना जगाते हैं, लोगों को जाति आधारित उपनामों को त्यागने को कहते हैं, बिना कर्मकांड के विवाह, विधवाओं का पुनर्विवाह और अलग-अलग जातियों के बीच शादियां कराते हैं। फिल्म में जाति, वर्ग तथा लिंग के आधार पर भेदभाव को दूर करने के नायकर के सतत संघर्ष को प्रभावशाली ढंग से चित्रित किया गया है।



PERIYAR

Tamil/170min/35mm/Colour

Producer: Liberty Creations Ltd
Direction and Screenplay: Gnana Rajasekaran
Cinematography: Thankar Bachan
Editing: B. Lenin
Cast: Sathyaraj, Kushboo, Manorama

The film is the biography of E.V. Ramaswamy Periyar who founded the Self Respect Movement and Dravida Kazhagam. The peerless leader never held a political post and worked ceaselessly for social reforms. Ramaswamy is born in a wealthy, orthodox family but disapproves of religious beliefs, casteism, superstitions. He gets his niece, a child widow,

remarried, exposes a fake priest for which he is chastised and, dejected, goes to Benaras. The holy city disillusiones him further. But the urge to serve the society stays within him. He joins the Congress on C. Rajagopalachari's invitation, sells khadi, rises up to become president of Tamil Nadu Congress. He leads a protest in Vaikkom demanding rights for the lower castes, then quits Congress when his demands for reservation for non-Brahmins is rejected. He brings confidence and consciousness amongst the down-trodden, makes people give up caste based surnames, conducts non-ritualistic marriages, widow remarriages and mixed marriages. The film encapsulates his constant struggle against racial, caste and gender discriminations.

शिवाजी

तमिल/161 मिनट/35एमएम/रंगीन

निर्माता एवीएम प्रोडक्शन्स निर्देशन और पटकथा एस. शंकर छायांकन के.वी. आनंद संपादन एंथनी संगीत ए.आर. रहमान कलाकार रजनीकांत, श्रेया

फिल्म एक सॉफ्टवेयर इंजीनियर शिवाजी के बारे में है जो अमरीका से भारत लौटता है। वह अपनी तकनीक की मदद से काले धन की बुराई समाप्त करने पर ध्यान देता है। वह बिना हिसाब-किताब वाले धन का पता लगाता है और इसे बुनियादी ढांचा, अस्पताल और स्कूल-कालेज खोलने पर खर्च करता है। वह व्यवस्था से अपने ढंग से लोहा लेता है जिसमें हिसा का रचनात्मक उपयोग करता है। उसकी टक्कर एक धनी और प्रभावशाली व्यापारी आदिशेषन से होती है।



SIVAJI

Tamil/161 min/35mm/Color

Producer: AVM Productions **Direction and Screenplay:** S. Shankar **Cinematography:** K.V. Anand **Editing:** Anthony **Music:** A.R. Rahman **Best Special Effects:** Indian Artist Computer Graphics Ltd, Chennai **Cast:** Rajnikanth, Shreya

The film is about Sivaji a software system architect who returns to India from the USA. He takes on the menace of black money, fixes it by cleansing the state of unaccounted cash and using it for building infrastructure, medical and educational facilities. He fights the system in his own way, making use of violence positively. The villain of the piece is an affluent, influential businessman, Adishesan.

तारे जमीं पर

हिंदी/163 मिनट/35एमएम/रंगीन

निर्माता और निर्देशक आमिर खान
पटकथा अमोल गुप्ते छायांकन सेतु
संपादन दीपा भाटिया संगीत शंकर एहसान
लाय कलाकार आमिर खान, दर्शील सफारी,
तिस्का चोपड़ा, विपिन शर्मा

आठ साल के बालक ईशान अवस्थी की अपनी अलग दुनिया है जिसमें विस्मयकारी घटनाएं, रंग, मछलियां, कुत्ते और पतंगें हैं, जिसे बड़ी उम्र के लोग नहीं समझ पाते। उसके मां-बाप को होमवर्क और परीक्षा में अच्छे अंकों की ही चिंता रहती है। ईशान अपनी कक्षा में हमेशा उल्टे-सीधे काम ही करता है और किसी न किसी मुसीबत में फंस जाता है। मां-बाप उसे अनुशासित रखने के उद्देश्य से बोर्डिंग स्कूल भेज देते हैं। लेकिन घर से दूरी, विशेषकर मां से अलग हो जाने से ईशान की तकलीफें और बढ़ जाती हैं। तभी स्कूल में नये कला अध्यापक निकुंभ सर का आगमन होता है जो सभी नियमों को ताक पर रखकर कक्षा में नए उत्साह और खुशी का संचार करता है। वह यह भी जानने की कोशिश करता है कि ईशान क्यों उदास और गुमसुम रहता है। निकुंभ धैर्य के साथ ईशान की मदद करता है जिससे वह अपने आपको पहचान लेता है तथा सामान्य बच्चों की तरह जीने लगता है।



TAARE ZAMEEN PAR

Hindi/163min/35mm/Colour

Producer and Director: Aamir Khan
Screenplay: Amol Gupte
Cinematography: Setu **Editing:** Deepa Bhatia **Music:** Shankar Ehsaan Loy **Cast:** Aamir Khan, Darsheel Safary, Tisca Chopra, Vipin Sharma

Eight-year-old Ishaan Awasthi's world is filled with wonders—colours, fish, dogs and kites—that adults can't appreciate. They are more interested in

things like homework and marks. Ishaan can't seem to get anything right in his class and keeps getting into trouble. His parents send him off to a boarding school so that he becomes disciplined but separation from the family, specially his mother, only adds to Ishaan's trauma. Then a new arts teacher, Nikumbh sir, comes along, breaks all the rules, brings joy and enthusiasm to the class. He also sets out to figure out why Ishaan is so unhappy and how to patiently help Ishaan find himself and help him reconnect with life.

टिंग्या

मराठी/116 मिनट/35एमएम/रंगीन

निर्माता अनिता राय, आनंद राय, रवि राय निर्देशन, कहानी, पटकथा तथा संवाद मंगेश हदावले छायांकन धरम गुलाटी संपादन के.डी. दिलीप संगीत रोहित नागभिडे कलाकार शरद गोएकर, तरन्नुम पठान, अजित गवांडे, सुनील देव

टिंग्या एक बैल और एक लड़के की प्रेम कहानी है। चितांग्य नाम का बैल चीतों के झुंड में फंस जाता है और उसकी टांग टूट जाती है। अपाहिज हो जाने से बैल अपने मालिक करभरी के खेत नहीं जोत पाता। मरहम-पट्टी और दवा-दारु का भी कोई असर नहीं होता। करभरी मजबूर होकर उसे कसाई के हाथों बेचकर नया बैल खरीदने की सोचता है। लेकिन करभरी के बेटे टिंग्या के लिए चितांग्य केवल जानवर नहीं है। वह उसे अपना बड़ा भाई समझता है। इसलिए वह चितांग्य को बेचने का विरोध करता है और इसके लिए ऐसे-ऐसे तर्क और दलीलें देता है जिनका जवाब देना उसके घर वालों के लिए कठिन हो जाता है।



TINGYA

Marathi/116min/35mm/Colour

Producer: Anita Rai, Anand Rai, Ravi Rai **Direction, Story, Screenplay and Dialogues:** Mangesh Hadawale **Cinematography:** Dharam Gulati **Editing:** K.D. Dilip **Music:** Rohit Nagbhide **Cast:** Sharad Goekar, Tarnnum Pathan, Ajit Gawande, Sunil Deo

Tingya is the love story of a bull and a boy. It's the tale of the bull Chitangya

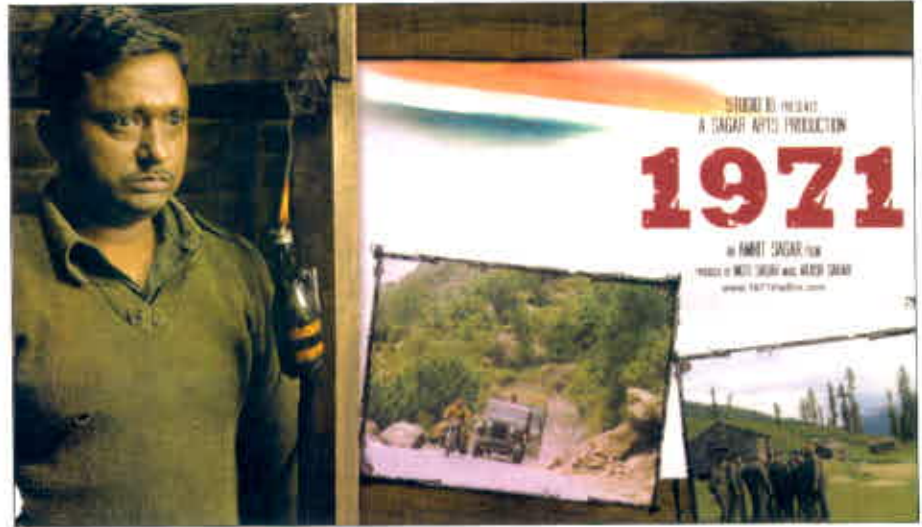
who falls into the leopard trap and breaks its leg. Unable to stand on its feet Chitangya cannot plough the fields of its owner Karbhari. Medication and treatments come of no use, Karbhari is left with no option but to sell it to local butcher and buy a younger bull instead. But Chitangya is not just an animal for Karbhari's son Tingya, he is like elder brother to him. So he resists the selling of Chitangya and raises many an uncomfortable questions which the adults find very difficult to answer.

1971

हिंदी/137 मिनट/35एमएम/रंगीन

निर्माता सागर आर्ट्स लिमिटेड निर्देशक अमृत सागर पटकथा पीयूष मिश्र छायांकन चिरंतन दास संपादन श्याम सलगांवकर संगीत आकाश सागर कलाकार मनोज वाजपेयी, रवि किशन, दीपक डोबरियाल, पीयूष मिश्र

इसमें 1971 के भारत-पाक युद्ध के 6 साल के बाद के समय की कहानी है। उस लड़ाई के फलस्वरूप बंगलादेश का निर्माण हुआ था। युद्ध में भारत की जीत के बावजूद बहुत से भारतीय सैनिक पाकिस्तान की जेलों में कैद रहे लेकिन पाकिस्तान उनके अस्तित्व के बारे में इंकार करता रहा। अन्तर्राष्ट्रीय दबाव के कारण पाकिस्तान इन कैदियों को पहाड़ों में किसी स्थान पर पहुंचाने को सहमत हो जाता है। वहां उनके रहन-सहन के स्तर में सुधार हो जाता है और उन्हें जल्दी ही अपनी रिहाई होने की उम्मीद बंधती है। किंतु 6 सैनिकों के एक समूह को शक होता है कि अचानक हुए इस हृदय परिवर्तन के पीछे जरूर कोई साजिश है। वे हिम्मत करके वहां से निकल भागते हैं और भारत के अधिकारियों को सारे मामले की जानकारी देते हैं।



1971

Hindi/137min/35mm/Colour

Producer: Sagar Arts Limited **Director:** Amrit Sagar **Screenplay:** Piyush Mishra **Cinematography:** Chirrantan Das **Editing:** Shyam Salgaonkar **Music:** Akash Sagar **Cast:** Manoj Bajpai, Ravi Kishan, Deepak Dobriyal, Piyush Mishra

The story is set six years after the 1971 Indo-Pak war. It culminated with the formation of Bangladesh. However,

despite winning the war, a lot of Indian defence personnel found themselves held captive in various jails in Pakistan and their existence denied. International pressure forces Pakistan to transfer them to a secret location in the mountains. Living conditions improve and captives feel their release might be in sight. However, a band of six soldiers suspects foul play in this sudden change of heart. They plan a daring escape to reach out to Indian authorities and tell them of their startling discoveries.

कथासार :
गैर कथाचित्र

Synopses :
Non-Feature Films

अंतर्ध्वनि

हिंदी/68 मिनट/35 एमएम/रंगीन

निर्माता फिल्म प्रभाग, निर्देशक जब्बार पटेल छायांकन फारूख मिस्त्री संपादन नितिन रोकडे

फिल्म में महान संतूरवादक, संगीतकार तथा संगीत निर्देशक पंडित शिव कुमार शर्मा की संगीत की दुनिया की भावपूर्ण यात्रा का चित्रण किया गया है। फिल्म उनकी संगीत प्रतिभा के साथ-साथ उनके विवेकशील गुरु तथा अच्छे इंसान के रूप को भी उजागर करती है। वे स्वयं अपने बचपन, गुरु तथा अपने पिता पंडित उमा दत्त शर्मा और संगीत तथा संतूर की शिक्षा की जानकारी देते हैं। संतूर की जड़ें भले ही लोक संगीत में हैं किंतु उन्हें शास्त्रीय दर्जा देने का श्रेय पंडित शिव कुमार शर्मा को ही जाता है। वे विश्व में संगीत की स्थिति की चर्चा करते हैं और भारत तथा समूची दुनिया में संगीत के मौजूदा परिदृश्य का दिवेचन करते हैं। फिल्म में उनके करीबी दोस्तों-पंडित जसराज, पंडित हरिप्रसाद चौरसिया, उस्ताद जाकिर हुसैन और फिल्म निर्माता यश चोपड़ा के विचार भी जानने को मिलते हैं।



ANTARDHWANI

Hindi/68 min/35mm/Colour

Producer: Films Division **Director:** Jabbar Patel **Cinematography:** Faroukh Mistry **Editing:** Nitin Rokade

The film is a soulful journey into the musical realm of Pandit Shiv Kumar Sharma, the great santoor player, musician and composer. Not only does the film capture his musical genius but also the kind and understanding guru and human being that he is. The maestro

himself talks about his childhood, his guru and father Pandit Uma Dutt Sharma, the different aspects of his music and the santoor, which despite tracing its roots back to the folk culture owes its classical status to Panditji. He talks about world music, fusion and analyses the contemporary music scenario not just in India but the world over. Other voices include those of his close friends Pandit Jasraj, Oandit Hariprasad Chaurasia, Ustad Zakir Husain and filmmaker Yash Chopra.

अयोध्या गाथा

अंग्रेजी, हिंदी / 61मिनट / 35एमएम / डीवी
कैम / रंगीन

निर्माता पब्लिक सर्विस ब्राडकास्टिंग
ट्रस्ट निर्देशक वाणी सब्रह्मणियन छायांकन
यासिर अब्बासी, युसुफ सईद, सुरजीत
सरकार संपादन वाणी सब्रह्मणियन।

फिल्म में विभिन्न दृष्टियों को एक सूत्र में
पिरोकर यह दर्शाया गया है कि घृणा की
राजनीति हमारे रोज़मर्रा की जिन्दगी पर
कितना गहरा प्रभाव डालती है और
इसकी भूलभूलैया से निकलने के लिए
कितने पापड़ बेलने पड़ते हैं।



AYODHYA GATHA

English Hindi/61min/DV Cam/Colour

Producer: Public Service Broadcasting
Trust **Director:** Vani Subramanian
Cinematography: Yasir Abbasi, Yousuf
Saeed, Surajit Sarkar **Editing:** Vani
Subramanian, Atul Gupta **Narration:**
Vani Subramanian

The film weaves together varied perspectives on how deeply the politics of hate affects personal, everyday life and what it takes to negotiate your way out of these labyrinths.

बाघेर बाच्चा

बंगला/23 मिनट/35एमएम/रंगीन

निर्माता सत्यजित रे फिल्म एवं टेलीविजन संस्थान, कोलकाता निर्देशक विष्णु देव हालदार छायांकन तुली राय, संपादन शुभ्रा जोशी

फिल्म में कोलकाता के स्टेशनों पर रहने वाले 10 साल के बालक श्यामल बाघ के दुख भरे और साहसिक जीवन की झलक मिलती है। फिल्म उसके अतीत, वर्तमान तथा अनिश्चित भविष्य में झांकती है। बाघ की नशीले पदार्थों और अपराधों में उलझी जिंदगी से लेकर अपना जीवन बेहतर बनाने की ईमानदार कोशिश पर प्रकाश डालते हुए फिल्म हमें उसके भविष्य के सपनों से रूबरू कराती है। श्यामल तेजी से भागते आधुनिक महानगर में अपना घर बनाने का सपना देखता है, जहां वह अपने पूरे परिवार के साथ रह सके। वह लगातार बदलते तथा आगे बढ़ते शहर (सिटी आफ जॉय) में अपने हिस्से की जमीन तलाश करना चाहता है।



BAGHER BACHA

Bengali/23min/35mm/Colour

Producer: Satyajit Ray Film and Television Institute, Kolkata **Director:** Bishnu Dev Halder **Cinematography:** Tuly Roy **Editing:** Shubhra Joshi

The film shows us the horror and adventure of the life of 10-year-old Shyamol Bagh who has been living in the

railway stations of Kolkata. It's a journey into his past, present and possible future. It travels through his days of drugs and crimes, takes a look at his efforts towards rehabilitation and a better life and shares his dreams and desires for tomorrow. In the fast-moving, modern metro Shyamol dreams of a house of his own where he could live with his entire family. He wants to find his feet in the changing, evolving "City of Joy".

भंगा घोर

बंगला / 27 मिनट / वीडियो / रंगीन

निर्माता भारतीय फिल्म एवं टेलीविजन संस्थान, पुणे निर्देशक नीलांजन दत्ता छायांकन सोमक मुखर्जी संपादन नवनीता सेन निर्माण प्रबंधक देबाशीष सरकार

कोलकाता से करीब 300 कि.मी. उत्तर दिशा में प्राचीन ऐतिहासिक स्थल मालदा है। प्राचीनकाल में इस स्थान पर गौड़ तथा पांडुआ या पुंदुबर्धन राजाओं का राज्य था और इसका समृद्ध सांस्कृतिक तथा आर्थिक अतीत था। किंतु आज वहां पर प्राचीन गौरव के नाम पर इक्के-दुक्के किलों के खंडहर और खुदाई किए गए कुछ पुरातात्विक स्थान ही दिखाई देते हैं। पूर्वी मालदा गंगा का क्रोध डेल रहा है जहां नदी की धारा से मुख्य भूमि का लगातार कटाव हो रहा है। उधर दक्षिणी मालदा पानी की कमी के संकट से पीड़ित है। फिल्म में एक ही ज़िले के इन दो क्षेत्रों की दुर्दशा का तुलनात्मक चित्रण किया गया है।



BHANGA GARA

Bengali/27min/Video/Colour

Producer: Film and Television Institute of India, Pune **Director:** Nilanjan Datta
Cinematography: Somak Mukherjee
Editing: Navnita Sen **Production Manager:** Debashis Sarkar

At a distance of about 300 km north of Kolkata lies an ancient civilisation called Maldah. In ancient times this place

comprised of the kingdoms of Gaur and Pandua or Pundrabardhan and had a rich cultural and economic past but all that remains of the ancient glory are a few red-walled forts and some newly excavated archeological sites. Eastern Maldah faces the danger of being wiped out with Ganga eroding a huge part of the mainland. In contrast South Maldah faces severe water crisis. The film shows the plight of these two regions from the same district.

भुलतिर खेरो

बंगला / 29 मिनट / वीडियो / रंगीन

निर्माता अमलन दत्ता निर्देशक और प्रकथन अनिर्बन दत्ता छायांकन अमलन दत्ता संपादन शंख संगीत प्रदीप चटर्जी

फिल्म तीन तरह के लोगों पर केंद्रित है जो भूलने की हमारी सामूहिक प्रवृत्ति के शिकार को रहे हैं। ये हैं— सड़कों पर घूम-घूम कर बंदर का तमाशा दिखाने वाला; सूक्ष्म ध्वनियों का प्रेमी संगीतकार जो उन्हें शहर में दूढ़ रहा है और स्वतंत्रता सेनानी तथा कम्युनिस्ट नेता जो काली की पूजा करता है। ये सभी अतीत की उस संस्कृति के प्रतिनिधि हैं जो अब गायब होती जा रही है। फिल्मकार अतीत की स्थिति को फिल्माने के लिए एक शताब्दी पुराने बॉक्स कैमरे का इस्तेमाल करता है।



BHULTIR KHERO

(Chronicle of an Amnesiac)

Bengali/29min/Video/Colour.

Producer and Cinematographer: Amlan Datta **Director and Narrator:** Anirban Datta **Editor:** Sankha **Music:** Pradip Chatterjee

The film focuses on three people, who are getting consigned to our collective

amnesia. They lie forgotten and marginalised. There is the street performer with his monkeys, a musician fascinated by abstract sounds who chases them in the city, a freedom fighter and communist who worships Kali. They represent a culture of the past that's fast nearing extinction. To film a thing of the past the maker looks through the viewfinder of a century old box camera.

ईकोज आफ साइलेंस

अंग्रेजी, खासी/24 मिनट/35 एमएम/
रंगीन

निर्माता भारतीय फिल्म एवं टेलीविजन संस्थान, पुणे निर्देशक शीमा बोरा छायांकन संदीप पाटिल संपादन अनिद्य राय संगीत जुबीन गर्ग कलाकार सोनाली सचदेव, संस्कृति बालगुडे, अरूप पाल, सोमनाथ सेन

फिल्म में जीवन की सुंदरता और जटिलता को चित्रित किया गया है। इसमें अकेलापन, रिश्तों की जटिलता और उलझी हुई गलत फहमियों का चित्रण है। आकाश की मृत्यु के बाद जाह्वी अकेली पड़ जाती है और ऐसा कोई नहीं है जिसके सामने वह अपने मन की बात या विचार रख सके। वह अपनी बेटी पोरी को अपने पास रखना चाहती है लेकिन उसका भविष्य संवारने के लिए उसे बोर्डिंग स्कूल भेज देती है। तभी पोरी को एक रहस्य का पता चलता है कि उसका पिता किसी और स्त्री से प्यार करता था। उस समय स्थिति चरम पर पहुंच जाती है जब शांतनु जाह्वी से मिलने आता है।



ECHOES OF SILENCE

English Khasi/24 min/35mm/Colour

Producer: Film and Television Institute of India, Pune **Director:** Reema Borah
Cinematography: Sandeep Patil
Editing: Anindya Roy **Music:** Zubeen Garg **Cast:** Sonali Sachdev, Sanskriti Balgude, Aroop Pal, Somnath Sen

The film is about the beauty and complexity of life. It's about loneliness,

complicated relationships and convoluted misunderstandings. After Akash's death Jahnabi becomes lonely with no one around to share her thoughts and feelings with. She wants daughter Pori by her side but sends her to a boarding school for ensuring a bright future for her. Meanwhile, Pori harbours a dark secret from her mother—that her father loved another woman. Things come to a head when Shantanu comes to meet Jahnabi.

होप डाइज लास्ट इन वार

अंग्रेजी, हिंदी, पंजाबी, बंगला/80
मिनट/वीडियो/रंगीन तथा श्वेत श्याम

निर्माता, निर्देशन और पटकथा सुप्रियो
सेन छायांकन रंजन पालित संपादन
सैकत रे

1971 के भारत-पाक युद्ध के 54 भारतीय
युद्धबंदी अभी पाकिस्तानी जेलों में बंद हैं।
उनके आने की घड़ियां गिनते हुए बहुत
से सैनिकों के मां-बाप मर चुके हैं, कुछ
की पत्नियां पुनर्विवाह कर लेती हैं और
कुछ के बच्चे आत्महत्या कर लेते हैं।
असली अग्नि परीक्षा से वे लोग गुजर रहे
हैं जिन्होंने अपनों के लौटने की उम्मीद
नहीं छोड़ी है। उनकी जिंदगी आशा और
निराशा के बीच झूल रही है किंतु 4 दशक
बीत जाने पर भी वे हिम्मत हारने को
तैयार नहीं हैं। फिल्म में युद्धबंदियों का
वापिस लाने के लिए उनके घरवालों के
संघर्ष का चित्रण किया गया है। इसमें
दुखद ठहराव, प्रेम की पीड़ा, मानवीय
आचरण के मार्मिक पल, हिम्मत और
आशा सब कुछ देखने को मिलता है।



HOPE DIES LAST IN WAR

English, Hindi, Punjabi, Bengali/80min/
Video/Colour and B&W

Production, Direction and Screenplay:
Supriyo Sen **Cinematographer:** Ranjan
Palit **Editor** Saikat Sekharswar Ray

54 Indian soldiers taken as Prisoners of
War during the Indo-Pak War of 1971
are yet to return home. While waiting for
them some of the parents died, some of

the wives remarried and some children
lost hope and committed suicide. But the
real ordeal has been for those who did
not give up. Their life hangs between
hope and despair but even after almost
four decades they are not willing to
resign. The film chronicles the saga of
these families' struggle to get their men
back. It records tragic stalemate,
sufferings of love and shining moments
of humanity, courage and hope.

दि जर्नलिस्ट एंड द जिहादी

अंग्रेजी, 78 मिनट/वीडियो/रंगीन

निर्माता मूविंग पिक्चर कम्पनी (इंडिया) लिमिटेड
निर्देशक रमेश शर्मा, अहमद जमाल छायांकन
बिथिन दास, कबीर खान, एरिक विल्सन संपादन
टोनी एप्पलटन संगीत डेविड सी. हीथ

डेनियल पर्ल और उमर शेख दोनों ही खूब पढ़े-लिखे व्यक्ति थे जिनका संबंध अच्छे अमीर परिवारों से था। उनके विचारों में भले ही भिन्नता थी लेकिन उनमें लगन और अपने काम के प्रति समर्पण के भाव एक जैसे थे। पर्ल एक मानवतावादी व्यक्ति और कुशल पत्रकार था जिसने अपने पत्रकार जीवन के अधिकांश समय मुस्लिम देशों से रिपोर्टिंग की। उसने लंबी यात्राएं कीं और इस्लामिक संस्कृति का गहन अध्ययन किया। उसने अपने लेखों के माध्यम से पश्चिमी दुनिया को मध्यपूर्व क्षेत्र तथा वहां की राजनीति की बारीकियों को समझाने की कोशिश की। शेख एक उग्रवादी था और उसने अपने उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए घोर हिंसा का रास्ता अपनाया। नाइन इलेवन की घटना के बाद उन दोनों की मुलाकात पाकिस्तान में हुई जिसका परिणाम बहुत दुखद रहा। फिल्म निर्माताओं ने 2002 में वाल स्ट्रीट जर्नल के रिपोर्टर के अपहरण और हत्या से जुड़े कई प्रमुख लोगों से बात की। पर्ल के घरवालों, मित्रों और सहयोगियों, अमरीकी जांच एजेंसी एफ.बी.आई के एजेंटों, पर्ल की रिहाई की कोशिश करने वाले अमरीकी विदेश विभाग के अधिकारियों तथा शेख को जानने वाले मित्रों और साथियों के शब्दों के माध्यम से यह वृत्तचित्र उन सभी ताकतों की तरह तक पहुंचती है जो इस हत्या के लिए जिम्मेदार थीं।



THE JOURNALIST AND THE JEHADEE: The Murder of Daniel Pearl

English/78min/Video/Colour

Producer: Moving Picture Company (India) Ltd **Director:** Ramesh Sharma, Ahmad Jamal **Cinematography:** Bithin Das, Kabir Khan, Eric Wilson **Editing:** Tony Appleton **Music:** David C. Heath

Daniel Pearl and Omar Sheikh were both highly educated individuals from privileged backgrounds who saw the world differently, but with seemingly similar passion and commitment. Pearl was a humanist and an accomplished journalist who spent most of his career reporting from the Muslim world. He

travelled extensively, explored Islamic culture and wrote articles intended to give Westerners a more nuanced understanding of the Middle East and its complex politics. Sheikh was a militant who chose a deeply violent method to achieve what he believed in. After 9/11 their paths crossed in Pakistan with tragic consequences. The filmmakers gained unprecedented access to many key figures in the kidnapping and subsequent murder of the Wall Street Journal reporter in 2002. Through the words of Pearl's family, friends and colleagues, FBI agents and State Department employees involved in negotiations for Pearl's release, and those, who knew Sheikh best, including former schoolmates and associates, the documentary explores the forces that led to the tragedy.

क्रमशः

हिंदी/22 मिनट/35एमएम/रंगीन

निर्माता भारतीय फिल्म एवं टेलीविज़न संस्थान, पुणे निर्देशक अमित दत्ता छायांकन सविता सिंह संपादन अरूण बाली ध्वनि आलेखन अजीत सिंह राठौड़ कलाकार चन्द्रशेखर दत्ता, आशुतोष, मीनल, तीर्थ उंब्रीगर, सोहम, विमल वर्मा

एक छोटे-से गांव में प्रातःकाल का समय है और एक घर में लोग सो रहे हैं। लड़का खिड़की के पास, बहन मां के निकट, मां रसोई के पास और पिता छत पर सो रहा है। काला कोट पहने हुए एक रहस्यमयी व्यक्ति हर रोज़ सुबह उस समय घर में घुसता है, जब सब लोग सो रहे होते हैं। लड़के ने उसे सपनों में देखा है। वह अपनी अर्ध चेतनावस्था में अपने रहस्यमय गांव में बने एक काल्पनिक लोक में पहुंच जाता है, जहां पौराणिक कथाएं तथा लोकगीत वहां के लोगों, उसके घर वालों तथा उसके बचपन के रूप में प्रकट होने लगते हैं। अंत में काले कोट वाला आदमी मारा जाता है।



KRAMASHA

(To Be Continued...)

Hindi/22 min/35mm/Colour

Producer: Film and Television Institute of India, Pune **Director:** Amit Dutta **Cinematography:** Savita Singh **Editor:** Arun Bali **Audiographer:** Ajit Singh Rathore **Cast:** Chandrashekhar Dutta, Aashutosh, Meenal, Tirtha Umbrigar, Soham, Vimal Varma

A small Indian village; a house; early morning; a family is sleeping. The boy is

sleeping next to the window; the sister next to the mother; mother near the kitchen and father on the roof. A mysterious man in a black coat comes every morning when everyone is sleeping. The boy has seen him in his dreams. In this state between conscious and unconscious, the boy is transported into a hallucinatory world of his mysterious, sleepy village where myths and folklore start taking shape in the form of its people, family and his childhood. The man in the black coat gets killed in the end.

लाल जूतों

बंगला/23 मिनट/35एमएम/रंगीन

निर्माता सत्यजित रे फिल्म एवं टेलीविजन संस्थान, कोलकाता निर्देशन एवं पटकथा श्वेता मर्चेंट छायांकन हरेंद्र सिंह; संपादन सैकत रे संगीत दिशारी चक्रवर्ती कलाकार रणदीप बोस, तिर्ना घोष, भारती देवी

कमल कुमार मजूमदार की कहानी पर आधारित यह फिल्म बचपन, सादगी, मित्रता और प्रेम जैसे मूल्यों को चित्रित करती है। इसमें यह दिखाया गया है कि किस तरह लाल जूतों की एक जोड़ी जैसी मामूली चीज़ भी सच्चा प्यार पैदा कर सकती है।



LAAL JUTO

Bengali/23min/35mm/Colour

Producer: Satyajit Ray Film And Television Institute, Kolkata **Direction and Screenplay:** Shweta Merchant **Cinematography:** Harendra Singh **Editing:** Saikat S. Roy **Music:** Dishari Chakraborty **Cast:** Ronodeep Bose, Tirna Ghosh, Bharti Devi

Based on Kamal Kumar Majumdar's story the film is about childhood, simplicity, friendship and love. How a small thing as a pair of red shoes can build a deep bond of love.

मेकिंग दि फेस

अंग्रेजी/29 मिनट/वीडियो/रंगीन

निर्माता पब्लिक सर्विस ब्राडकारिंटिंग ट्रस्ट निर्देशक सुवेदु चटर्जी छायांकन रजक कोट्टककल संपादन शुभजित देशभौमिक संगीत टॉम शर्मा

मणिपुर पर आधारित इस फिल्म में टॉम शर्मा की निजी कहानी के माध्यम से पहचान की समस्याओं पर प्रकाश डाला गया है। एक मेक-अप कलाकार टॉम अजीब संकट में है। उसका शरीर तो पुरुष का है लेकिन उसमें आत्मा एक औरत की है। इससे उसे अपना धंधा चलाने में मदद मिलती है क्योंकि औरतें और मर्द दोनों ही उससे आसानी से घुल-मिल जाते हैं। मणिपुर में उग्रवाद तथा शासन द्वारा प्रायोजित हिंसा से उपजी अस्थिरता के माहौल में उसकी कहानी नए मोड़ लेती है।



MAKING THE FACE

English/29min/Video/Colour

Producer: Public Service Broadcasting Trust **Director:** Suvendu Chatterjee
Cinematography: Razak Kottakkal
Editing: Subhajit Dasbhaumik **Music:** Tom Sharma

The film, based in Manipur, deals with identity issues through the personal story of Tom Sharma. Tom, a make-up artist, is in crisis. He possesses a woman's soul in a man's body. But it helps him professionally. Both men and women are equally at ease with him. His story unfolds against the turmoil in Manipur—both the insurgency and the state-sponsored violence.

पूमरम

मलयालम/56 मिनट/वीडियो/रंगीन

निर्माता पब्लिक सर्विस ब्राडकास्टिंग ट्रस्ट निर्देशन तथा छायांकन विपिन विजय संपादन सुजित सहदेव

महिलाओं के मासिक धर्म से जुड़े कर्मकांड मानव संस्कृति के मूल में हैं और मानव सभ्यता के विकास में रक्त के साथ स्त्रियों तथा पुरुषों के संबंध काफी भिन्न हैं। यह फिल्म असल में जूडी ग्राहन के मेटाफार्मिक सिद्धांत के प्रति श्रद्धाजलि है और उनकी पुस्तक 'ब्लड, ब्रेड एंड रोजेज: हाऊ मेंस्ट्रुएशन क्रिएटिड दि वर्ल्ड' के विविध पहलुओं पर आधारित है। फिल्मकार के अनुसार 'यह प्रक्रिया प्राचीन रजोधर्म संबंधी कर्मकांडों और कृषि, गणित, लेखन, पंचांग। (चंद्र पंचांग का मासिक चक्र तथा रजोधर्म का मासिक चक्र एक जैसा है) तथा ज्ञान, विज्ञान और कला के अन्य विषयों के बीच अंतरसंबंध 'मिथकीय' दृश्य-श्रव्य अवलोकन ही है।



POOMARAM

(A Flowering Tree)

Malayalam/56min/Video/Colour

Producer: Public Service Broadcasting Trust (PSBT) **Director** and **Cinematographer:** Vipin Vijay **Editor:** Sujith Sahadev

Women's menstrual rituals are the roots of human culture and in human evolution women and men have markedly different relationships to blood. Poomaram is a

tribute to Judy Grahn's radical Metaformic theory and is based on several aspects of her book 'Blood, Bread and Roses: How Menstruation Created the World.' According to the filmmaker, "it is a 'mythographic' audio-visual observation of the interconnection between ancient menstrual rituals and the development of agriculture, mathematics, writing, calendars (the lunar calendar apparently bears similarities to menstrual cycles) and other realms of knowledge, science and arts."

प्रारंभ

कन्नड/12 मिनट/35 एमएम/रंगीन

निर्माता, निर्देशन और छायांकन संतोष शिवन संपादक शक्ति हसीजा संगीत कुमारेश गणेश

8 साल का बच्चा किट्टू एक कस्बे में अपनी दादी के साथ रहता है। ट्रक ड्राइवर पुट्टास्वामी की मदद से वह अपनी मां शारदा की तलाश में निकलता है, जिसे उसने 3 साल की उम्र के बाद से नहीं देखा है। लंबे सफर के बाद वे उसे मैसूर के एक अस्पताल में ढूँढ लेते हैं, जहाँ वह एड्स की बीमारी के कारण अंतिम घड़ियाँ गिन रही है। किट्टू को भी एच.आई.वी. संक्रमण के कारण स्कूल से निकाल दिया गया है। आखिर पुट्टास्वामी स्कूल जाकर प्रिंसिपल, अध्यापकों और बच्चों के मां-बाप को एच.आई.वी./एड्स के बारे में फैली भ्रांतियों और सही बातों के बारे में बताता है, जिससे किट्टू को फिर से स्कूल में दाखिल कर लिया जाता है।



PRARAMBHA

Kannada/12 min/35 min/Colour

Producer, Director and Cinematographer: Santosh Sivan
Editor: Shakti Hasija, **Music:** Kumaresh Ganesh

8-year-old Kittu lives in a small town with his grandmother. With the help of truck driver Puttaswami Kittu sets out

on a road trip to search for his mother Sharda, who he hasn't seen since he was three. They manage to trace her in a Mysore hospital where she is in the last stages of AIDS. Kittu has been dismissed from school because he is HIV+. It falls on Puttaswami to educate the principal, teachers and parents about the myths and facts of HIV/AIDS so that they accept Kittu back.

शिफ्टिंग प्रोफेसी

अंग्रेजी/29 मिनट/वीडियो/रंगीन

निर्माता पब्लिक सर्विस ब्राडकास्टिंग ट्रस्ट निर्देशक मेराजुर रहमान बरुआ छायांकन वी. सुकुमारन संपादन महादेव शी संगीत चौधरी एस.

फ़िल्म तमिलनाडु में गांवों की मुस्लिम औरतों द्वारा सामाजिक अन्याय के खिलाफ छेड़े गए संघर्ष की कहानी है। दाऊद शरीफा खानम नाम की महिला पितृसत्तात्मक व्यवस्था के खिलाफ आवाज़ उठाती है और शादी, दहेज, तलाक जैसे मसलों पर बुजुर्ग पुरुषों की परंपरागत संस्था जमात के भेदभावपूर्ण फैसलों को चुनौती देते हुए गांव की औरतों को एकजुट करती है।



SHIFTING PROPHECY

English/29min/Video/Colour

Producer: Public Service Broadcasting Trust **Director:** Merajur Rahman Baruah
Cinematography: V. Sukumaran
Editing: Mahadeb Shi **Music:** Chowdhry S.

It's a film on the struggle of rural Muslim women in Tamil Nadu, in particular that of Daud Sherifa Khanam, to fight the patriarchal social order and the sexist rulings of the conventional jamaat (a group of Islamic male elders who decide on family issues of marriage, dowry and divorce etc).

द ताई फाकेज

अंग्रेजी/22 मिनट/वीडियो/रंगीन

निर्माता प्रियम चालीहा निर्देशन और छायांकन मृदुल गुप्ता संपादन अबनि काकोटी संगीत अमल शर्मा

18वीं सदी में बौद्ध धर्म के एक संप्रदाय थेरावदा में आस्था रखने वाली एक जनजाति चीन के हुमान प्रांत से थाईलैंड चली गई जहां से वह भारत के राज्य अरुणाचल प्रदेश में आ बसी। कुछ समय बाद उसके कुछ लोग असम के मार्गेरिटा क्षेत्र में बस गए। इस समय फाके जनजाति के लोग असम में डिब्रूगढ़ और तिनसुखिया जिलों में डिहिंग नदी के आसपास और अरुणाचल प्रदेश के लोहित तथा चांगलांग जिलों में रह रहे हैं। 1990 की जनगणना में उनके 250 से भी कम परिवार थे और कुल आबादी 3000 थी। किंतु फाके जनजाति आज भी अपनी अलग पहचान, भाषा, रीति-रिवाज तथा परंपराएं बनाए हुए है। फिल्म में यह दर्शाया गया है कि किस तरह आधुनिकता और वैश्वीकरण के दबाव के बावजूद यह जनजाति अपनी विरासत और गौरवपूर्ण धरोहर को बचाए रखने में सफल हुई है।



THE TAI PHAKEYS

English/22 min/Video/Colour

Producer: Priyam Chaliha **Director and Cinematographer:** Mridul Gupta
Editor: Abani Kakoti **Music:** Amal Sharma

In the early 18th century a tribe subscribing to the Theravada sect of Buddhism from Hunan province of China migrated to Thailand and later reached the Indian state of Arunachal Pradesh. Later they redistributed themselves in

the Margerita region of Assam. Today the Phakey tribal group resides in Dibrugarh and Tinsukhia in Assam, principally along Dihing river and in Lohit and Changlang districts of Arunachal Pradesh. In 1990 their population stood at 3000, consisting of less than 250 families. But Phakey tribe still maintains its individuality, language, customs and traditions. The film focuses on how despite the forces of modernisation and globalisation they preserve their heritage and glorious legacy.

उधेड़ बुन

हिंदी/21 मिनट/35 एमएम/रंगीन

निर्माता भारतीय फिल्म एवं टेलीविजन संस्थान, पुणे निर्देशक सिद्धार्थ सिन्हा छायांकन धीरेंद्र शुक्ला संपादन सुचित्रा साठे कलाकार आलोक, स्वाति सेनगुप्ता, जसवंत दलाल, शुभांगी दामले

फिल्म सांसारिक आकर्षणों के मोह और जिम्मेदारियों तथा बंधनों से मुक्ति की कामना के बीच द्वंद्व को चित्रित करती है। फिल्म का युवा नायक कहता है, "मैं कर्तव्यों और टकरावों की मांग करने वाले इस संसार तथा इसकी वास्तविकता से भाग जाना चाहता हूँ और उड़ते हुए बादलों तथा धुंध को चीर कर क्षितिज के छोर तक पहुंच जाना चाहता हूँ।"



UDHEDH BUN

Hindi/21min/35mm/Colour

Producer: Film and Television Institute of India, Pune **Director:** Siddhartha Sinha **Cinematography:** Dharendra Shukla **Editing:** Suchitra Sathe **Cast:** Alok, Swati Sengupta, Jaswant Dalal, Shubhangi Damale

I want to escape from this world, which asks for duties, unavoidable confrontations and above all the reality itself. I want to fly...through the mist...between the clouds...and vanish finally at the end of the horizon...

वेल्लापोकातिल

मलयालम/58 मिनेट/वीडियो/संगीत

निर्माता प्रसार भारती एवं जयराज
निर्देशक जयराज छायांकन एम.जे.
राधाकृष्णन संगीत त्रिचुर अनंतपद्मानाभन

फिल्म ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित प्रसिद्ध साहित्यकार तकषि शिवशंकर पिल्लै की कहानी पर आधारित है। इस कहानी की पृष्ठभूमि में 1928 में कुट्टानाड क्षेत्र में आई बाढ़ है। इसमें यह दर्शाया गया है कि किस तरह संकट और विनाश के समय मनुष्य के भीतर का जानवर बाहर आ जाता है। बाढ़ के कारण घर छोड़ते हुए चेंनन का पालतु कुत्ता घर की छत पर छूट जाता है। कुत्ता अपने आखिरी दम तक अपने मालिक के घर की रक्षा करता है लेकिन जब कुत्ता मरा हुआ पाया जाता है तो चेंनन उसे पहचानता तक नहीं।



VELLAPOKATHIL (In Deluge)

Malayalam/58 min/Video/Colour

Producer: Prasar Bharati and Jayaraj
Director: Jayaraj **Cinematography:**
M.J. Radhakrishnan **Music:** Trichur
Ananthapadmanabhan

The film is based on renowned Jnanpeeth winner Thakazhi Sivasankara Pillai's short story set in Kuttanad against the backdrop of the 1928 floods. It shows how devastation can bring out the beast in a human being. Chennan's pet dog is left behind on a rooftop bereft of refuge. He heroically serves his master till his end but Chennan fails to even recognise him when the pet is found lying dead.